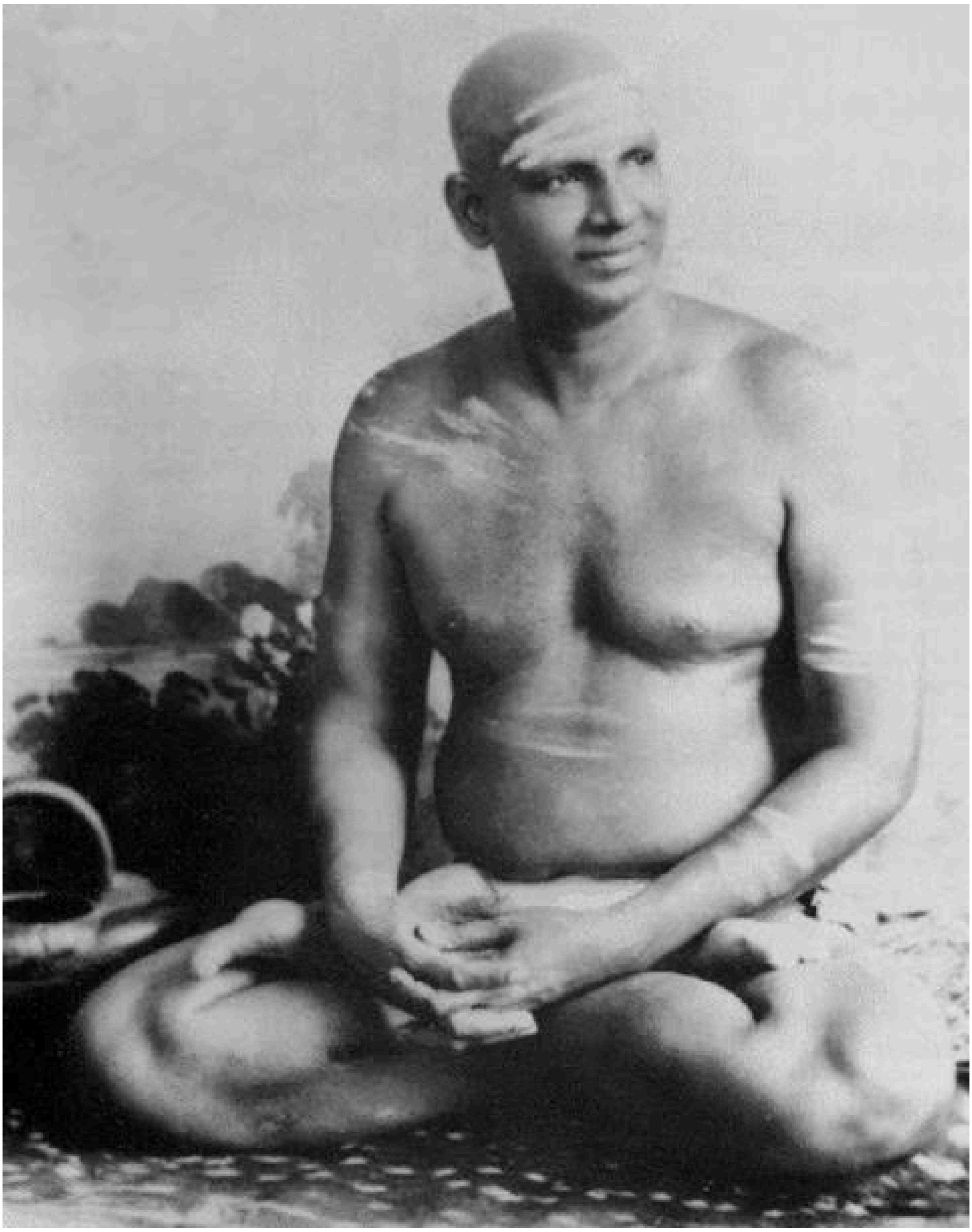
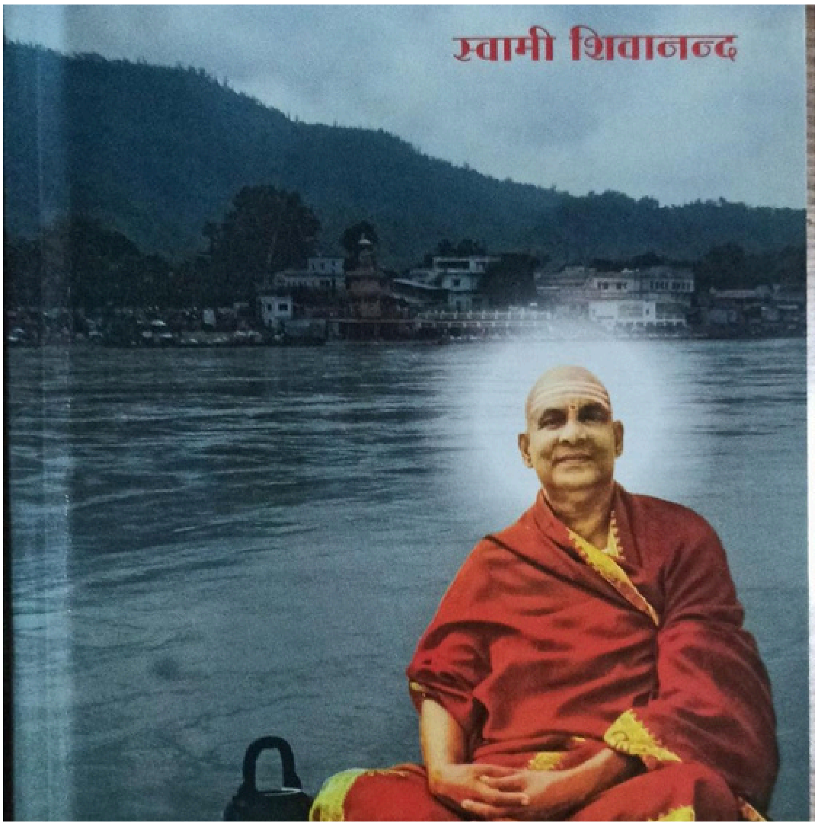




योगवासिष्ठ की कथाएँ

STORIES FROM YOGA-VASISHTHA
का सिन्दी अनुवाद

लेखक

श्री स्वामी सिवानन्द िरस्वती

अनुवासदका

श्री स्वामी सवषुणुिरणानन्द िरस्वती

(पूवााश्रम-नाम : डा. स्वणालता अग्रवाल)

प्रकिाक

द सडवाइन लाइफ िोयटी

पत्रालय: सिवानन्दनगर - २४९१९२

सिला सटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड (सिमालय), भारत

www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथम सिन्दी िंस्करण २००९

सितीय सिन्दी िंस्करण : ? २०१३

तृतीय सिन्दी िंस्करण : २०१५

(१,००० प्रसतयाँ)

HS16

PRICE: 90/-

'द सडवाइन लाइफ ि◌ोयटी, सिवानन्दनगर' के सलए स्वामी पद्मनाभानन्द ि◌ारा
प्रकासित तथा उन्हीं ◌ंके ि◌ारा 'योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी पे्रि,
पो. सिवानन्दनगर-२४९१९२, सिला सटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड' में मुसित।
For online orders and Catalogue visit: dlsbooks.org

न्ति वसिष्ठ

और

मिसषा वाल्मीसक को

मिसपात !

सिवानन्दनगर
२४ सदिम्बर १९५८

सप्रय सिज्ञिु,

योगवासिष्ठ इ सिवश्व की एक उतृकृष्ट पुस्तक िै। केवल अिैत ब्रह्म का िी अस्तस्तत्व िै। यि सवश्व तीनों ं कालों ंमें निीं ंिै। केवल आत्मज्ञान िी मनुष्य को िन्म-मृत्तुयु के चक्र िे मुक्त करेगा।

विानाओं ंका नाि िी मोक्ष िै। मन िी िंकल्प िे इ िृसष्ट को उत्पन्न करता िै।

कुषिु अि 'मैं', विानाओं ंऔर िंकल्पों ंका नाि करो।

आत्म-तत्त्व का ध्यान करो और िीवनुमुक्त बनो। यिी योगवासिष्ठ का िार िै।

-- स्वामी सिवानन्द

प्रकािकीय

योगवासिष्ठ अथवा वासिष्ठ मिारामायण िंसूकृत भाषा में वेदान्त पर सलखा गया ि वोतूकृष्ट कोसट का ग्रन्थ िै। यि सविाल ग्रन्थ िंसूकृत िासित्य का असितीय ग्रन्थ िै। मिान् िन्त वसिष्ठ ने अपने सिष्य श्री राम, िो रावणियी िैं और रामायण मिाकाव्य के नायक िैं, को वेदान्त के सिद्धान्तों ंकी सिक्षा दी। उन्ोंनें उन सिद्धान्तों ं के स्पष्टीकरण के सलए िुन्दर एवं रोचक कथाएँ किीं। यि ग्रन्थ िन्त वाल्मीसक िारा भाषाबद्ध सकया गया िै।

यि वेदान्त पर सलखे गये िभी ग्रन्थों ंका चूडामसण िै। यि िवाश्रेष्ठ कृसत िै। इिका अध्ययन मनुष्य को सदव्य वैभव एवं आनन्द की उच्चावस्था तक पहँचा देता िै। यि ज्ञान का भण्डार िै। िो आत्म-सचन्तन अथवा ब्रह्म अभ्यिा अथवा वेदास्तन्तक ध्यान का अभ्यिा करते िैं, वे इि अद्‌भुत ग्रन्थ में अमूल्य सनसि पायेंगे। िो मनुष्य एकाग्र सचत्त िो कर एवं अत्यसिक रुसचपूवाक इिका अध्ययन करता िै, वि सनसित िी आत्मज्ञान प्राप्त करेगा। िािना िे म्बिस्तित व्याविाररक सनदेि असितीय िैं। अत्यसिक िांिाररक मनुष्य भी वैराग्यवान् बनेगा और मन की िास्तन्त, उपिम और िान्त्वना प्राप्त करेगा।

योगवासिष्ठ के अनुिार, मोक्ष आत्मज्ञान िारा ब्रह्मानन्द की प्रास्तप्त िै। यि िन्म व मृतुयु िे मुस्तक्त िै। यि वि सनमाल और असवनािी ब्रह्म-पद िै ििाँ न तो िंकल्प िैं और न विानाएँ। मन यिाँ िास्तन्त प्राप्त कर लेता िै। मोक्ष के अनन्त आनन्द के िमक्ष िंिार के िमस्त िुख मात्र एक बूंद िैं।

आप िभी योगवासिष्ठामृत का पान करें ! आप िभी आत्मज्ञान-रूपी मिु का आस्वादन करें! आप िभी इिी िन्म में िीवनुमुक्त बन िायें! आपको िन्त वसिष्ठ, िन्त वाल्मीसक एवं अन्य ब्रह्मसवद्या-गुरुओं ंका आिीवााद प्राप्त िो! आप िभी ब्रह्मानन्द-रि का आनन्द प्राप्त करें!

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पररचय

योगवासिष्ठ अथवा वासिष्ठ मिारामायण िंस्कृत भाषा में वेदान्त पर सलखा गया िवोत्कृष्ट कोसट का ग्रन्थ िै। यि सविाल ग्रन्थ िंस्कृत िासित्य का असितीय ग्रन्थ िै। मिान् िन्त वसिष्ठ ने अपने सिष्य श्री राम, िो रावणियी िैं और रामायण मिाकाव्य के नायक िैं, को वेदान्त के सिद्धान्तों ंकी सिक्षा दी। उन्होंने उन सिद्धान्तों ं के स्पष्टीकरण के सलए िुन्दर एवं रोचक कथाएँ किीं।ं यि ग्रन्थ िन्त वाल्मीसक िारा भाषाबद्ध सकया गया िै।

यि वेदान्त पर सलखे गये िभी ग्रन्थों ंका चूडामसण िै। यि िवाश्रेष्ठ कृसत िै। इिका अध्ययन मनुष्य को सदव्य वैभव एवं आनन्द की उच्चावस्था तक पहँचा देता िै। यि ज्ञान का भण्डार िै। िो आत्म-सचन्तन अथवा ब्रह्म अभ्याि अथवा वेदास्तन्तक ध्यान का अभ्याि करते िैं, वे इि अद्भुत ग्रन्थ में अमूल्य सनसि पायेंगे। िो मनुष्य एकाग्र सचत्त िो कर एवं अत्यसिक रुसचपूवाक इिका अध्ययन करता िै, वि सनसित िी आत्मज्ञान प्राप्त करेगा। ििाना िे म्बिस्तित व्याविाररक सनदेि असितीय िैं। अत्यसिक िंिाररक मनुष्य भी वैराग्यवान् बनेगा और मन की िास्तन्त, उपिम और िान्त्वना प्राप्त करेगा।

एक िमय भारत में योगवासिष्ठ का अध्ययन बहत व्यापक स्तर पर सकया िाता था। इिने िामान्य दािासनक सवचारिारा को अत्यन्त प्रभासवत सकया। बनारि के स्वगीय पस्तण्डत वृन्दावन िरस्वती ने एक िौ पैंतीि बार योगवासिष्ठ का अध्ययन सकया। यि प्राचीन भारत की एक सवसृतृत, गम्भीर, व्यवस्तस्थत िासिस्तत्यक एवं दािासनक कृसत िै।

इिका नाम िन्त वसिष्ठ िे वुयुत्पन्न िै। यद्यसप यि ग्रन्थ योगवासिष्ठ किा िाता िै, परनुतु यि केवल 'ज्ञान' िे म्बिस्तित िै। केवल दो कथाएँ िी सक्रयायोग िे िम्बस्तित िैं। ग्रन्थ के िीषाक में प्रयुक्त योग िब्द का व्यापक अथा सलया गया िै। यि 'ज्ञानवासिष्ठम्' नाम िे भी प्रसिद्ध िै।

ऋसष वाल्मीसक, रामायण के रचसयता, ने इि िंिािारण ग्रन्थ का िंकलन सकया। उन्ोंनें िमूपूणा 'योगवासिष्ठ ऋसष भाििरा को िुनाया ििै सक िन्त वसिष्ठ ने श्री राम को वणान सकया।

बृित् योगवासिष्ठ एवं लघु योगवासिष्ठ नामक दो पुस्तकें िैं। पिली पुस्तक अत्यन्त सविाल िै। इिमें ३२,००० ग्रन्थ अथवा श्लोक अथवा ६४,००० पंस्तक्तयाँ िैं। बृित् अथाात् सविाल। दूिरी पुस्तक में ६००० ग्रन्थ िैं। लघु अथाात् छोटा।

योगवासिष्ठ में प्राचीन दिाासनक सवचारिारा की एक असितीय पद्धसत िमासित िै। यि ग्रन्थ इि पसवत्र भूसम, िो सक भारतवषा अथवा आयाावता नाम िे िानी िाती िै, के उज्ज्वल अतीत की मूल्यवान् िरोिर िै। इि ग्रन्थ में प्रसुतुत सवचार-पद्धसत न केवल भारतीय दिाासनक सवचारिारा, असपतु सवश्व की दिाासनक सवचारिारा के प्रसत एक अत्यन्त मूल्यवान् योगदान िै।

वे मनुष्य, सिनके सचत्त िंिार िे सवमुख िो गये िैं, िो िांिाररक पदार्थों के प्रसत उदािीन िो गये िैं और िो मुमुकुषु िैं, इि बिमूल्य ग्रन्थ के अध्ययन िे यथाथातः लाभास्तित िोंगें। वे इि ग्रन्थ में अपने दैसनक िीवन में मागादिान िेतु ज्ञान एवं व्याविाररक आध्यास्तत्मक सनदेिों ंका भण्डार पायेंगे। योगवासिष्ठ प्रथमतः एक सिद्धान्त का सवसवि रूपों ंमें प्रसतपादन करता िै और तत्पिात् रुसचकर कथाओं ंके माध्यम िे इिे अत्यन्त िरल बोिगम्य बना देता िै। यि ग्रन्थ सनरन्तर तथा बारम्बार अध्ययन करने योग्य िै। इिका पुनः पुनः अध्ययन सकया िाना चासिए और दक्षता प्राप्त की िानी चासिए।

िीवन के िमस्त कष्टों ंएवं सवपसत्तयों ंके मध्य िीवात्मा का परमात्मा िे योग करवाना िी योगवासिष्ठ का प्रसतपाद्य सवषय िै। यि िीवात्मा के परमात्मा िे योग के सलए सवसवि सदिा-सनदेि देता िै।

इि ग्रन्थ में ब्रह्म अथाात् ित् के स्वरूप एवं आत्म–िाक्षात्कार प्राप्त करने की सवसवि सवसियों ंका िुस्पष्ट वणान सकया गया िै। परमानन्द अथवा परमाथा-प्रास्तप्त िे िम्बस्तित मुख्य पररपृच्छा का िुन्दर रूप िे वणान सकया गया िै। इि ग्रन्थ में ित्तामीमांिा सवज्ञान, आत्मज्ञान, मनोसवज्ञान के सिद्धान्त, मनोभाव सवज्ञान, नीसतिास्त्र, व्याविाररक नैसतकता के सनयम एवं िमािास्त्र पर व्याख्यान आसद िमासित िैं। योगवासिष्ठ का दिान उतूकृष्ट एवं असितीय िै।

इि ग्रन्थ में छि प्रकरण िैं- (१) वैराग्य-प्रकरण, (२) मुमुकुषु-प्रकरण, (३) उत्पसत्त-प्रकरण, (४) स्तस्थसत-प्रकरण, (५) उपिास्तन्त-प्रकरण, और (६) सनवााण-प्रकरण। योगवासिष्ठ के अनुिार सवसभन्न पदार्थों, देि, काल, सनयम िसित यि अनुभवगम्य िंिार मन की िी उत्पसत्त िै अथाात् एक सवचार अथवा कल्पना िै। ििैप्रकार स्वप्नावस्था में मन िी पदार्थों की उत्पसत्त करता िै, उिी प्रकार िाग्रतावस्था में भी मन िारा िी िब-कुछ उत्पन्न िोता िै। मन का सवस्तार िी िंकल्प िै। िंकल्प अपनी भेदि–स्तक्त के िारा इि िृसष्ट को उत्पन्न करता िै। देि एवं काल केवल मानसिक िृसष्ट िैं। पदार्थों के िाथ मन के खेल के कारण िी िमीपता अत्यन्त दूरी प्रतीत िोती िै और दूरी िमीपता। मन की स्तक्त के कारण एक कल्प एक क्षण के िमान प्रतीत िोता िै और क्षण कल्प के िमान। िाग्रतावस्था के अनुभव के एक क्षण को स्वप्नावस्था में वर्षों के रूप में अनुभव सकया िा िकता िै। मन अल्पावसि में िी मीलों ंका और कई मीलों ंका एक बासलश्त के रूप में भी अनुभव कर िकता िै। मन ब्रह्म िे सभन्न और पृथक् निीं ंिै। ब्रह्म िी स्वयं को मन के रूप में प्रकट करता िै। मन िृिनात्मक िस्तक्त िे युक्त िै। मन िी बिन एवं मोक्ष का कारण िै।

योगवासिष्ठ में 'दृसष्टि-ृसष्टवाद' का प्रसतपादन सकया गया िै। कुछ स्थानों ंपर वसिष्ठ, श्री िंकर के मिान् गुरु श्री गौडपादाचाया के अितवाद के सवषय में बतलाते िैं। आप देखना प्रारम्भ करते िो और िृसष्ट की उत्पसत्त िो ाती िै। यिी दृसष्टि-ृसष्टवाद िै। तीनों ंकालों ंमें इि सवश्व का अस्तस्तत्व निीं ंिै। यि िृसष्ट का 'अितवाद' िै।
यि अत्यन्त प्ेरेरणादायी ग्रन्थ िै। वेदान्त का प्रत्ेयेक सवद्याथी इि ग्रन्थ को सनरन्तर अध्ययनाथा अपने पाि रखता िै। ज्ञानयोग-पथ के िाक के सलए यि ग्रन्थ िितत िचर िै। यि प्रसक्रया ग्रन्थ निीं ंिै। यि वेदान्त की प्रसक्रयाओं ंिे िम्बस्तित निीं ंिै। केवल उच्च स्तर के सवद्याथी िी इि ग्रन्थ का अध्ययन कर िकते िैं। प्रारस्तम्भक स्तर के सवद्यासथायों ंको योगवासिष्ठ के अध्ययन िे पिले श्री िंकर सवरसचत आत्मबोि, तत्त्वबोि, आत्मानात्मसववेक तथा पंचीकरण का अध्ययन करना चासिए।

योगवासिष्ठ के अनुिार, मोक्ष आत्मज्ञान िारा ब्रह्मानन्द की प्रास्तप्त िै। यि िन्म व मृतुयु िे मुस्तक्त िै। यि वि सनमाल और असवनािी ब्रह्म-पद िै ाँ न तो िंकल्प िैं और न वािनाएँ। मन यिाँ िास्तन्त प्राप्त कर लेता िै। मोक्ष के अनन्त आनन्द के िमक्ष िंिार के िमस्त िुख मात्र एक बूंद िैं।

यि िो मोक्ष किा िाता िै, वि न तो देवलोक और पाताल में और न िी पृथ्वी पर िै। िब िमस्त कामनाएँ नष्ट िो िाती िैं, प्रिरणिील मन का उनूमूलन िो िाता िै, विी मोक्ष िै। मोक्ष में देि एवं काल निीं ंिै; न िी कोई आन्तररक अथवा बािरी अवस्था िै। िब 'मैं' का समथ्या सवचार अथवा अिंकार नष्ट िो िाता िै, सवचारों ं (िो सक माया िै) के नाि का अनुभव िोता िै, विी मोक्ष िै। िमस्त वािनाओं ंका उनूमूलन िी मोक्ष िै। िंकल्प िी िंिार िै; इिका नाि िी मोक्ष िै। िंकल्प का पूणा नाि िो िायेऔर उनके पुनरुत्थान की िम्भावना न िो, यिी मोक्ष अथवा सनमाल ब्रा-पर भी की और उनके पबहत्खसनवृसत्त और परमानन्द-प्रास्तप्त िै। दुःख का अथा िै- अ चौडा। िन्म और मृतुयु िी िवाासिक कष्ट का कारण िै। िन्म और मृतुयु िे मुस्तक्त िोकर प्रकार के कष्टों ंिे मुस्तक्त िै। ब्रह्मज्ञान अथवा आत्मज्ञान िी मोक्ष प्रदान करेगा। पदाथों ंके सलए बािनाओं ंके अभाव के पररणामस्वरूप उत्पन्न मन की िास्तन्त िी मोक्ष िै।

मोक्ष प्राप्त करने योग्य कोई पदाथा निीं ंिै। यि पूवातः यिीं ंसवद्यमान िै। आ वास्तव में बद्ध निीं ंिो। आप सनत्यिुद्ध और सनत्य-मुक्त िो। यसद आप वास्तव में बद्ध िोते, तो कभी मुक्त निीं ंिो िकते थे। आपको यि िानना िै सक आप अपा, िवाव्यापक आत्म-तत्त्व िो। उिे िानना, विी िो िाना िै। यिी मोक्ष िै। यिी िीवि का उद्े्देश्य िै। यि अस्तस्तत्व का परम अथा िै। मन की अनािक्त अवस्था को िी मोक्ष-पथ िानना चासिए, िब न तो 'मैं' और न अन्य सकिी का अस्तस्तत्व िै और िब मन िंिार के िमस्त िुखों ंका त्याग कर देता िै।

योगवासिष्ठ के अनुिार पूणा िस्तच्चदानन्द परब्रह्म अिय, अखण्ड, अनन्त, स्वयंप्रकािवान्, सनसवाकार एवं िाश्वत िै। वि अस्तस्तत्व का िागर िै, िसिमें िम िभी रिते िैं और गसत करते िैं। वि मन व इस्तियों ंकी पहँच िे परे िै। वि अस्तन्तम िारतत्व िै। अनुभवकताा और अनुभव-सवषय दोनों ंके पीछे विी एक तत्त्व िै। वि िमरूप तत्त्व िै। वि िवाव्यापक िै। वि वणानातीत िै। वि नाम, वणा, गि, स्वाद, देि, काल, िन्म और मृतुयु रसित िै।

सिसका मन िान्त िै, िो मोक्ष के चतुष्टय िािनों ंिे िम्पन्न िै, दोषों ंऔर अिुस्तद्धयों ंिे मुक्त िै, वि मनुष्य ध्यान के िारा अन्तदृासष्ट िे आत्म-िाक्षात्कार कर िकता िै। िास्त्र एवं आध्यास्तत्मक गुरु िमें ब्रह्म-िाक्षात्कार निीं ंकरा िकते। वे केवल िमारा मागादिान कर िकते िैं और दृष्टान्तों ंएवं उदािरणों ंके माध्यम िे िंकेत दे िकते िैं।

ास्तिन्त, िन्तोष, ित्संग और सवचार-ये मोक्ष–ार के चार प्ररी िैं। यसद आप इनिे समत्रता करेंगे, तो रिलता ि मोक्ष–ाम्राज्य में प्रविे पा लेंगे। यसद आप इनमें ि एक का भी िंग करेंगे, तो वि अपने अन्य तीन ािसथयों ि आपको अवश्य िी पररसचत करवा देगा।

एक ििाक को यि अचल आस्था िोनी चासिए सक ब्रह्म िी केवल ित्य िै, िब-कुछ ब्रह्म िी िै, ब्रह्म िी भिी प्रासणयों ंकी आत्मा िै। तत्पिात् उि इि ित्य का अपरोक्षानुभव प्राप्त करना चासिए। ब्रह्म का प्रत्यक्ष ज्ञान िी मुस्तक्त का ििान िै।

ाग्रितावस्था और स्वप्नावस्था के अनुभवों ंके बीच कोई अन्तर िै। िाग्रतावस्था एक दीघा-स्वप्न िै। ज्यों–ंिी मनुष्य िाग्रतावस्था में आता िै, स्वप्न का अनुभव समथ्या िो िाता िै। उिी प्रकार एक आत्म–ाक्षात्कार प्राप्त िन्त के सलए िाग्रतावस्था समथ्या िो िाती िै। स्वप्नावस्था वाले मनुष्य के सलए िाग्रतावस्था समथ्या िो िाती िै।

एक िीवनुमुक्त आनन्दपूवाक सवचरण करता िै। उिमें न तो आकषाण िैं न िी आिस्तक्तयाँ िैं। उिके सलए न तो कुछ प्राप्तव्य िै और न िी त्याज्य। वि सवश्व-कल्याण के सलए काया करता िै। वि कामनाओं,ं अिंकार और लोभ िे मुक्त िै। नगर के व्यस्ततम भाग में काया करता हआ भी वि एकान्त में िी िै।

आप िभी योगवासिष्ठामृत का पान करें! आप िभी आत्मज्ञान-रूपी मिु का आस्वादन करें! आप िभी इिी िन्म में िीवनुमुक्त बन िायें! आपको िन्त वसिष्ठ, िन्त वाल्मीसक एवं अन्य ब्रह्मसवद्या-गुरुओं ंका आिीवााद प्राप्त िो! आप िभी ब्रह्मानन्द-रि का आनन्द प्राप्त करें!

िस्तामलक स्तोत्र
स्तोत्र की भूसमका

दसक्षण भारत के श्रीवली नामक ग्राम में प्रभाकर नाम के ब्राह्मण के यिाँ पुत्र रूप में िस्तामलक का िन्म हआ। सकिोरावस्था िे िी वि िांिाररक सवषयों ंके प्रसत अत्यन्त उदािीन था। उिका व्यविार एक मूक व बसिर के िमान था। एक बार, िब श्री िंकर अपने अनुयासययों ंिसित उि स्थान पर आये, प्रभाकर अपने पुत्र को उनके पाि ले कर गया और उनके चरणों ंमें प्रणाम सकया। श्री िंकर ने सपता-पुत्र दोनों ंको उठाया और प्रभाकर िे पूछा।

प्रभाकर ने किा- "िे पूज्य मिात्मन् ! यि मेरा पुत्र मूक िै और सकिोरावस्था िे िी िभी सवषयों ंके प्रसत उदािीन िै। अभी यि तेरि वषा का िै। यि न तो िमारे वाताालाप को िमझता िै और न िी उिमें रुसच लेता िै। इिने न तो सकिी िास्त्र का और न िी वेदों ंका अध्ययन सकया िै िो सक एक ब्राह्मण िारा अवश्य पठनीय िै। यि तो वणामाला भी निीं ंिानता िै। मैंने बहत िी कसठनाई िे इिका यज्ञोपवीत िंस्कार सकया िै। यि अपने समत्रों ंके

ाथि कभी खेलने निीं ंिाता िै। इिकी उदिीन प्रकृसत को देख कर, कभी-कभी इिके समत्र इिे मारते िैं, परन्तु यि कभी क्रोसित निीं ंिोता। यि कभी भोिन लेता िै और कभी निीं।ं परन्तु यि िमो प्रिन्न एवं आनस्तन्दत रिता िै। इिकी इि िडता का क्या कारण िै? कृपया मेरे बालक की रक्षा कीसिए।"

प्रत्युत्तर में, श्री िंकर ने उि बालक िे सनम्नांसकत प्रश्न पूछे। बालक के िारा सदये गये उत्तरों ंको स्तोत्र रूप में िंकसलत कर इिे 'िस्तामलक स्तोत्र' नाम सदया गया। वास्तव में, वि न तो मूक था और न िी बसिर, असपतु वि एक पूणा ज्ञानी था- िीवनुमुक्त था।

कस्त्वं िडिो कस्य कुतोऽडस गन्ता
डकं नाम ते त्वं कुत आगतोऽडस ।
एतन्मयोक्तं वद चार्भक त्वं
मत्प्रीतये प्रीडतडववर्भनोऽडस ।।१ ।।

श्री िंकर ने बालक िे पूछा -

िे सप्रय बालक! तुम कौन िो? सकिके पुत्र िो? किाँ िाओगे? तुम्हारा नाम क्या िै? किाँ िे आये िो? मेरी प्रिन्नता के सलए मेरे इन प्रश्नों ंका उत्तर दो। तुम मुझे अत्यन्तसप्रय िो।

नाऽहं मनुष्यो न च देवयक्षो
न ब्रह्मचारी न गृही वनस्थो
न ब्राह्मणक्षडियवैश्यिूद्राः ।
डर्कुषुनभ चाहं डनजबोर्रूपाः ॥२॥

स्तिामलक ने उत्तर सदया-

मैं मनुष्य निीं ंहँ, देव और यक्ष भी निीं ंहँ; ब्राह्मण, क्षसत्रय, वैश्य एवं िूि भी निीं ंहँ। ब्रह्मचारी, गृिस्थ, वानप्रस्थ एवं िंन्यािी भी निीं ंहँ। मैं स्वयं िाश्वत ज्ञानस्वरूप आत्मा हँ।

डनडमत्तं मनश्चकुषुराडदप्रवृत्तौ
डनरस्ताखिलोपाडर्राकािकल्पाः ।
रडवलोकचेष्टाडनडमत्तं यथा याः
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ।।३।।

मैं िाश्वत ज्ञानस्वरूप आत्मा हँ। आकािासद िीसमत उपासियों ंिे मुक्त हँ, मन एवं चकुषुरासद इस्तियों ंकी प्रवृसत्त का कारण हँ, िैिे प्रकार िूया िब लोकों ंकी प्रवृसत्त का कारण िै।

यमगुन्युष्णवडित्यबोर्स्वरूपं
मनश्चकुषुरादीन्यबोर्ात्मकाडन ।
प्रवतभन्त आडित्य डनष्कम्पमेकं
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ।।४।।

िसि प्रकार असि की उष्णता िै, उिी प्रकार उि अपररवतानीय िाश्वत ज्ञानस्वरूप आत्मा की प्रकृसत
ुद्धि चैतन्य और उिी का आश्रय ले कर िड मन एवंचकुषुरासद इस्तियाँ अपने-अपने कायों में प्रवृत्त िोते िैं, मैं विी सनत्य ज्ञानस्वरूपआत्मा हँ।

मिुरासको दपभणे दृश्यमानो
मिुत्वात्पृथक्त्वेन नैवासुतु वसुतु।
डचदारासको रीषु जीवोऽडप तद्वत्
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ।।५।।

िसि प्रकार दपाण में सदखता हआ मुख का प्रसतसबम्ब वसुतुतः सबम्ब-रूप मुख िे पृथक् निीं ंिै, उिी प्रकार बुस्तद्ध-रूपी दपाण में िीव-रूप िे प्रतीयमान चैतन्य का प्रसतसबम्ब, सबम्ब-रूप चैतन्य िे पृथक् निीं ंिै, चैतन्य-रूप िी िै, विी सनत्यज्ञानस्वरूप आत्मा मैं हँ।

यथा दपभणाराव आरासहानौ
मिुं डवद्यते कल्पनाहीनमेकम् ।
तथा रीडवयोगे डनराराासको यः
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ।।६।।

िसि प्रकार दपाण-रूपी उपासि के न रिने पर उिमें पडा हआ मुख का प्रसतसबम्ब निीं ंरिता िै; परनुतु मुख तो पररसिष्ट रिता िी िै, उिी प्रकार बुस्तद्ध-रूपी उपासि के न रिने पर भी सनत्य ज्ञानस्वरूप आत्मा िी रिता िै, विी मैं हँ।

मनश्चकुषुरादेडवभयुक्ताः स्वयं यो
मनश्चकुषुरादेमभनश्चकुषुराडदाः ।
मनश्चकुषुरादेरगम्यस्वरूपाः
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ।। ७ ।।

िी आत्मा मन एवं चकुषुरासद इस्तियों ंिे परे िै, िो मन का मन, चकुषु का चकुषु िै और िो इन मन, इस्तियासद के िारा निीं ंिाना िा िकता िै, मैं विी सनत्य ज्ञान स्वरूप आत्मा हँ।

य एको डवराडत स्वताः िुद्धचेताः
प्रकािस्वरूपोऽडप नानेव रीषु ।
रिावोदकस्थो यथा रानुरेकाः
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ।।८ ।।

िसि प्रकार िल िे भरे अनेक पात्रों ंमें एक िी िूया अनेक रूपों ंिे भिाता िै, उिी प्रकार मैं एक िी, स्वयंज्योसत आत्मा, अनेक बुस्तद्धयों ंको प्रकासित करने वाला सनत्य ज्ञानस्वरूप आत्मा हँ।

यथाऽनेकचकुषुाःप्रकािो रडवनभ
क्रमेण प्रकािीकरोडत प्रकाश्यम् ।
अनेका डयो यस्तथैकप्रबोराः ।।

स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ॥९ ।।

िसि प्रकार ि्ूया अनेक नेत्रों ंको क्रम ि े प्रकासित न करता हआ एक िाथ िी प्रकिा करता िै, उिी प्रकार िमस्त बुस्तद्धयों ंको एक िी िाथ प्रकासित करने वाला सनत्य ज्ञानस्वरूप आत्मा मैं हँ।

डववस्वत्प्रर्ातं यथारूपमक्ष
प्रगृह्णाडत नार्ातमेवं डववस्वान् ।
यदार्ात आर्ासयत्यक्षमेकाः
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ॥१० ॥

मैं विी सनत्य ज्ञानस्वरूप आत्मा हँ िसिके प्रकिा िे िी नेत्र अन्य पदाथों को देखने की क्षमता पाते िैं, िसि प्रकार ि्ूयोदय िोने पर िी िम पदाथों को देख िकते िैं अन्यथा निीं।ं

यथा सूयभ एकोऽप्स्स्वनेकश्चलासु
खस्थरास्वप्यनन्यडद्वर्ाव्यस्वरूपाः ।
चलासु प्रडरर्ाः सुर्ीष्वेवेक एव
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ॥११ ।।

िी चंचल एवं स्तस्थर िल में एक िी ि्ूया अनेक रूप िे सभन्न सदखायी देता िै, तथासप वि सभन्न निीं ंिो किता। उिी प्रकार चंचल एव स्तस्थर सवसभन्न बुस्तद्धयों ंकोप्रकासित करने वाला आत्मा एक िी िै, एिा अिैत स्वरूप, सनत्य ज्ञानस्वरूप आत्मा मैं हँ।

घनच्छिदृडष्टघभनच्छिमकभ
यथा डनष्प्रर्ं मन्यते चाडतमूढाः।
तथा बद्धवद्भाडत यो मूढदृष्ेटोः
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ।।१२।।

िी मूखा मनुष्य मेघ िे आच्छासदत ि्ूया को प्रभा िीन एवं दीस्तप्त रसित मानता िै, उिी प्रकार मूढ़ बुस्तद्ध मानव को िो सनत्य-मुक्त आत्मा बद्ध प्रतीत िोता िै, मैं विी िाश्वत ज्ञानस्वरूप आत्मा हँ।

समसे्तेषु वसुतुष्वनुसूयूतमेकं
समस्ताडन वसूतूडन यं न स्पृिखन्त ।
डवयद्वत्सदा िुद्धमच्छस्वरूपाः
स डनत्योपलखिस्वरूपोऽहमात्मा ।।१३ ।।

मैं विी सनत्य ज्ञानस्वरूप आत्मा हँ िो आकिा के िमान िवादा िुद्ध और सनमाल िै, िमस्त पदाथों में व्याप्त िै, पदाथा उिका स्पिा निीं ंकर िकते और न िी अपने िोिा िे उिमसलन कर िकते िैं।

उपार्ौ यथा र्ेदता सन्मणीनां
तथा र्ेदता बुखद्धर्ेदेषु तेऽडप ।
यथा चखिकाणां जले चंचलत्ंवं
तथा चंचलत्ंवं तवापीह डवष्णो ॥१४।।

सिस प्रकार वणा एवं आकृसत की सभन्नता के कारण मसणयों ंमें भेद का ज्ञान िोता िै, उिी प्रकार उपासियों ंकी सवसभन्नता के कारण आत्मा अनेक रूप हआ प्रतीत िोता िै। सिस प्रकार चंचल िल के िम्बि िे स्तस्थर चिमा चंचल और अनेक रूप प्रतीत िोता िै, उिी प्रकार िे सवष्णो! आप अनेक रूप प्रतीत िोते िो (सवसभन्न उपासियों ंके
कारण) (यथाथातः आप एक, सनत्यिुद्ध और सनसवाकार िो।)।

परा-पूिा

अिण्डे सखिदानन्दे डनडवभकल्पैकरूडपडण ।
खस्थतेऽडद्वतीयर्ावेखिन् कथं पूजा डवर्ीयते ।।१।।

िो अखण्ड, सिच्चदानन्द, सनसवाकल्प और अिैत िै, उिकी पूिा कैिे की िाए?

पूणभस्याऽऽवाहनं कुि सवाभरारस्य चाऽऽसनम् ।
स्वच्छस्य पाद्यमर्घ्भ च िुद्धस्याऽऽचमनं कुताः ॥२॥

िो पररपूणा परमात्मा का आवािन किााँ िो? िो िभी का आिार िै, उिे िािार को कौन-िा आिन सदया िाये ? िो सवादा िुद्ध-पसवत्र िै, उिे अर्घ्ा, पाद्य और आचमन िे क्या प्रयोिन?

डनमभलस्य कुताः स्नानं वस्त्रं डवश्वोदरस्य च।
अगिोस्य त्ववणभस्य कुतस्तस्योपवीतकम् ।।३।।

िी िवादा सनमाल िै, उिके सलए स्नान अनावश्यक िै; िसिने िमूपूणा ब्रह्माण्ड को आच्छासदत कर रखा िै, उि वस्त्र िे क्या प्रयोिन? िो गोत्र एवं वंि िे रसित िै, उि यज्ञोपवीत की क्या आवश्यकता िै?

डनलेपस्य कुतो गन्धाः पुष्पं डनवाभसनस्य च ।
डनडवभेषस्य का रूषा कोऽलंकारो डनराकृतोः ॥४॥

िी सनलेप िै, िदा आनस्तन्दत िै और िवा-असभलाषाओं ंिे रसित िै, उिको गि एवं पुष्प िेवन िे क्या लाभ ? सनराकार को विभूषा कि िारण करवायें? सनगुाण-सनराकार को अलंकार िे क्या प्रयोिन?

डनरंजनस्य डकं रूपैदीपैवाभ सवभसाडक्षणाः ।
डनजानन्दैकतृप्तस्य नैवेद्यं डकं वेडदह ॥५॥

िी सनरंिन िै, उि िूप िे क्या प्रयोिन? िो स्वयं िभी ज्योसतयों ंकी ज्योसत िै, उि सकि प्रकार दीप-ज्योसत अपाण की िाये ? िो सनत्य आत्म-तृप्त एवं सनिानन्द में मग्न िै, उि क्या नैवेद्य असपात सकया िा िकता िै?

डवश्वानन्दडयतुस्तस्य डकं तामूबूलं प्रकल्प्यते ।
स्वयंप्रकािडश्चद्रूपो योऽसावकाभडदर्‌सकाः ।।६ ॥

िी िभी प्रासणयों ंको आनन्द देने वाला िै, िो आत्म-दीप्त एवं चैतन्य स्वरूप िै और िूयाासद िमस्त ज्योसतयों ंका भािक िै, उिको तामूबूल (पान) कि असपात सकया िाये?

प्रदडक्षणा ह्यानन्तस्य ह्यद्वयस्य कुतो नडताः ।
वेदवाक्यैरवेद्यस्य कुताः स्तोिं डवरीयते ।।७।।

अनन्त की प्रदसक्षणा कि िो िकती िै? उि एक और अिय को नमस्कार कि िो? चतुवेद िसिके वणान में स्वयं को अिमथा पाते िैं, उिकी सुतुसत कि िो?

स्वयं प्रकािमानस्य कुतो नीराजनं डवरोाः ।
अन्तबभडहश्च पूणभस्य कथमुद्वासनं वेत् ।।८।।

स्वयंप्रकाि-तत्त्व का नीरािन (दीपक, कपूर िे आरती) कि िो? िो पूणा िै, िवाव्यापक िै, उिका िििन (सविािन) सकि प्रकार िो?

एवमेव परा पूजा सवाभवस्थासु सवभदा ।
एकबुद्ध्या तु देविे डवरेया ब्रह्मडवत्तमैाः ।।९।।

िभी ब्रह्मिोषी िािकों ंिारा भस्तक्तयुक्त एवं एकाग्र सचत्त िे यि परा-पूिा िब अवस्थाओं ंमें िदैव की िानी चासिए।

डविेष- आवािन, आिन, पाद्य, अध्यासद देवोपािना की सवसभन्न सक्रयाएँ िैं, िो कमाकाण्डीय उपािना के

सनयमानुिार िम्पन्न की िाती िैं। इि स्तोत्र का उद्देश्य यि सनदेसित करना िै सक ये िब सक्रयाएँ एक असितीय ब्रह्म के प्रसत िम्भव निीं ंिैं। िभी ब्रह्मिोषी िािकों ंिारा इिी स्तोत्र के प्रकाि में उि परम तत्त्व के स्वरूप को िमझा िाना चासिए।

योगवासिष्ठ–ार

यसद मोक्ष–ार के चार प्रिररयों–ंिास्तन्त, सवचार, िन्तोष और ित्संग िे समत्रता कर ली िाये, तो अस्तन्तम सनवााण प्रास्तप्त में कोई बािा निीं ंआ िकती। यसद इनमें िे एक िे भी समत्रता िो िाये, तो वि अपने िेष िासथयों ंिे स्वयं िी समला देगा।

यसद तुम्हें आत्मा का ज्ञान अथवा ब्रह्मज्ञान िो िाता िै, तो तुम िन्म-मरण के बिन िे छूट िाओगे। तुम्हारे िब िंिय दूर िो िायेंगे और िारे कमा नष्ट िो िायेंगे। केवल अपने िी प्रयत्ों ंिे अमर, िवाानन्दमय ब्रह्म-पद प्राप्त सकया िा िकता िै।

आत्मा को नष्ट करने वाला केवल मन िै। मन का स्वरूप मात्र िंकल्प िै। मन की यथाथा प्रकृसत विानाओं ंमें सनसित िै। मन की सक्रयाएँ िी वसुतुतः कमा नाम िे सवसित िोती िैं। िृसष्ट ब्रह्म–स्तक्त के माध्यम िे मन की असभव्यस्तक्त के असतररक्त कुछ निीं ंिै। मन िरीर का सचन्तन करता हआ िरीर-रूप िी बन िाता िै, सफर उिमें सलप्त हआ उिके िारा कष्ट पाता िै।

मन िी िुख अथवा दुःख की आकृसत में बािरी िंिार के रूप में प्रकट िोता िै। कतृात्व-भाव में मन चेतना िै। कमा-रूप में यि िृसष्ट िै। अपने िुरु सववेक के िारा मन ब्रह्म की सनसिल व िान्त स्तस्थसत प्राप्त कर लेता िै। यथाथा आनन्द वि िै, िो िाश्वत ज्ञान के िारा मन के विाना रसित िो कर अपना िूक्ष्म रूप खो देने पर उदय िोता िै। िंकल्प और विानाएँ िो तुम उत्पन्न करते िो, वे तुम्हें िंिाल में फँिा लेती िैं। परब्रह्म का आत्म-प्रकाि िी मन अथवा इि िृसष्ट के रूप में प्रकट िो रिा िै।

आत्म-सवचार िे रसित मनुष्यों ंको यि िंिार ित्य प्रतीत िोता िै, िो िंकल्पों ंकी प्रकृसत के सिवाय कुछ निीं ंिै। इि मन का सवस्तार िी िंकल्प िै। अपनी भेद–स्तक्त के िारा िंकल्प इि िृसष्ट को उत्पन्न करता िै। िंकल्पों ंका नाि िी मोक्ष िै।

आत्मा का ितुरु यीि अिुद्ध मन िै, िो अत्यसिक भ्रम और िांिािररक सवचारों ंके िमूि िे भरा रिता िै। इि सवरीिी मन पर सनयन्त्रण करने के असतररक्त पुनिान्म-रूपी ििािागर िे पार ले िाने वाला पृथ्वी पर कोई िीिा (बेडा) निीं ंिै।

पुनिान्मों ंके कोमल तनों ंििसित, इि दुःखदायी अिंकार के मूल अंकुर 'तेरा-मेरा' की लम्बी िाखाओं ं िसित िवात्र फैल िाते िैं और मृतुयु, रोग, वृद्धावस्था एवं क्लेि-रूपी अपक्व फल देते िैं। ज्ञानासि िे यि वृक्ष िमूल नष्ट सकया िा िकता िै।

इस्तियों ंके माध्यम िे सदखायी देने वाले िमस्त सवसभन्न प्रकार के दृश्य पदाथा समथ्या िैं; िो ित्य िै, वि परब्रह्म अथवा परम आत्मा िै।

यसद मोसित करने वाले िारे पदाथा आँख की सकरसकरी (पीडाकारक) बन िायें और पूवा-भावना के सवपरीत प्रतीत िोने लगें, तो मनोनाि िो िाये। तुम्हारी िारी िम्पसत्त व्यथा िै। िारी िन-दौलत तुम्हें खतरे में डालने वाली िै। िवनाओं ंिे मुस्तक्त तुम्हें िाश्वत, आनन्दपूणा िाम पर ले िायेगी।

िवनाओं ंऔर िंकल्पों ंको नष्ट करो। अिंकार को मार डालो। इि मन का नाि कर दो। अपने-आपको 'िािन-चतुष्टय' िे िम्पन्न करो। िुद्ध, अमर, िवाव्यापक आत्मा का ध्यान करो। आत्मा का ज्ञान प्राप्त करके अमरता, अनन्त िास्तन्त, िाश्वत िुख, स्वतन्त्रता और पूणाता प्राप्त करो।

सवषयि–ूची

भूसमका

रिर ॐ! उि िस्तच्चदानन्द परब्रह्म को प्रणाम िै, ििसे िभी प्रासणयों ंकी उत्पसत्त हई िै,सिके िारा भिी प्रकट िैं, सिि पर िभी सनभार िैं और िृसष्ट के प्रलय के िमय सिमें िभी िमा िाते िैं।

योगवासिष्ठ को पढ़ने के असिकारी न तो अज्ञानी िैं िो िंिार-रूपी दलदल में पूणातया डूबे हए िैं और न ीी िीवनुमुक्त अथवा मुक्त िन्त िैं सिन्होंनें आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया िै, केवल वीी इिकै अध्ययन के असिकारी ीैं िो यि अनुभव करते िैं सक वे बिन में िैं और िन्म-मृतुयु के बिन िे मुस्तक्त की इच्छा करते िैं।

ऋसष भारिरा ने किा- "िे श्रद्धेय गुरुदेव! मुझे पिले राम के सवषय में बताइए और तत्पिात् यि बताइए सक मैं सकि प्रकार मोक्ष प्राप्त कर िकता हँ।" िन्त वाल्मीसक ने उत्तर सदया…

१.वैराग्य-प्रकरण

सवरस्तक्त

ो भािरि! मुसन वसिष्ठ िारा राम को सनसदाष्ट मागा का सचन्तन करके िन्म-मरण ि मुक्त िो िाओ; राम ने अपने गुरु के अमूल्य उपदिों ंका अनुपालन करके िी आत्मज्ञान प्राप्त सकया था।

राम िभी पसवत्र तीथास्थानों ंके दिान करना चािते थे। उन्ोंनें अपने गुरु एवं सपताश्री की आज्ञा प्राप्त की और तीथायात्रा ितु प्रस्थान सकया। िारे पसवत्र स्थानों ंका दिान करके वि अयोध्या वापि लौटे। उि िमय राम िोिि वषा के थे। उनकी दिे िनैः-िनैः दुबाल पडने लगी। उनका दमकता चिेरा पीला पड गया। वि पद्मािन लगा कर सनष्कम्प बैठ िाते और सचन्तन में लीन रिते थे। वि अपने सनत्य-कताव्य भी करना भूल िाते थे। रािा दिरथ ने राम ि पूछा सक वि उनें अपने दुःख और अन्यमनस्कता का कारण बतायें; परनुतु राम ने कोई उत्तर निीं ंसदया।

उिी िमय मुसन सवश्वासमत्र ने रािा के दरबार में प्रविे सकया।

दिरथ ने मुसन को िम्मानपूवाक असभवादन करके पूछा- "ि असभनन्दनीय मुसनवर! कृपया आप मुझे अपने आने का उद्देदेश्य बतायें। आप मुझिे िो चािते िैं, मैं एिे सकिी भी पदाथा को अपने ि सवलग कर िकता हँ अथाात् आपको प्रदान कर िकता हँ।"

इि पर सवश्वासमत्र िी बोले- "मैं एक मिान् यज्ञ िम्पन्न कर रिा हँ। राक्षि मुझे बहत परेिान करते िैं। कृपया अपने जे्येष्ठ पुत्र राम को मेरे िाथ िाने की अनुमसत दें। वि इन िब भयंकर राक्षिों ंको नष्ट कर देगा।"

दिरथ ने उत्तर सदया-"राम बहत छोटा िै। वि राक्षिों ंि युद्ध निीं ंकर िकेगा। इिके असतररक्त, मैं क्षण-भर के सलए भी उिका सवयोग ििन निीं ंकर िकता। मैं वृद्ध हँ।"

सवश्वासमत्र ने कु्द्ध िो कर किा- "तुमने मुझे सकिी भी वसुतु ि सवयुक्त िोने का सनिय वचन सदया था। अब तुम अपना वचन पूरा निीं ंकरना चािते िो। तुम िज्जन नृप निीं ंिो।" तब वसिष्ठ िी ने मध्यस्थता की और दिरथ ि किा- "ि रािन्! तुम्हें अपना वचन पूरा करना चासिए। मुसन सवश्वासमत्र राम की रक्षा करेंगे।"

रािा दिरथ ने राम के अनुचरों ंकी ओर असभमुख िो कर सनदिे सदया- "िीघ्र िी राम को यिाँ बुला कर लाओ।"

अनुचरों ंने उत्तर सदया- "िब ि वे तीथायात्रा ि लौटे िैं, वे अपनी दैसनक सक्रयाएँ िी निीं ंकर रिे िैं। स्नान, भोिन और अचे्छे वस्त्रों ंके प्रसत उनका उपेक्षा भाव िै। वे कािते िैं सक उनका िीवन व्यथा िी रिा िै और यि िंिार समथ्या िै। वे एक िंन्यािी का िा िीवन-यापन कर रिे िैं। िंिार के पदाथों में उनें कोई आकषाण प्रतीत निीं ंिोता। वे उि िीवनुमुक्त अवस्था को प्राप्त करने के इचु्छुक प्रतीत िोते िैं- ििाँ कोई दुःख और सचन्ताएँ निीं ं िैं।"

वसिष्ठ िी ने िेवकों ंि किा सक वे राम को रािदरबार में लायें। सफर उन्ोंनें इि प्रकार िारी िभा को िम्बोसित सकया- "राम में वैराग्य सवकसित िो गया िै। वि िीघ्र िी ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लेंगे और सफर वि िारे काया आनन्दपूवाक करेंगे।"

तब राम ने रािदरबार में आ कर अपने गुरु वसिष्ठ िी, मुसन सवश्वासमत्र िी और अपने सपता को प्रणाम सकया।

सवश्वासमत्र िी ने राम ि किा- "मुझे अपने मन की स्तस्थसत बताओ, तुम्हारे दुःख का कारण क्या िै?"

राम ने उत्तर सदया- "िे पूज्य मुसन सवश्वासनत्र िी! मैं ऐिा िी करूँगा। कृपया िुसनए :

संसार

"यि िंिार समथ्या िै। इि िंिार में लेिमात्र भी िुख निीं िै। मनुष्य मरने के सलए उत्पन्न िोते िैं और सफर िन्म लेने िेतु मृत्युु को प्राप्त िोते िैं। अतएव, इि िंिार में िब-कुछ समथ्या िै। मैंने सववेक सवकससत कर सलया िै, इिसलए मैंने ऐस्न्िक िुखों के िमस्त सवचार सबलकुल त्याग सदये िैं। मनुष्य को मन की छलपूणा प्रकृसत का ज्ञान िोना चासिए। मन िी िंिार के अस्तस्तत्व को ित्य के रूप में सचसत्रत करता िै। केवल आत्मा िी ित्य िै। मैं इि समथ्या िंिार िे ऊब गया हँ। मैं इि सवकट िंिार के कष्टों और दुःखों िे मुक्त िोने का उपाय खोिने की चेष्टा
कर रिा हँ। यि सवचार मुझे दावानल की भाँसत दग्ध कर रिा िै।

िन-सम्पसत्त

"िन-िम्पसत्त िुख निीं दे िकती। यि सवपसत्त का स्रोत िै। यि असनत्य िोती िै। यि कभी स्तस्थर निीं रिती। यि िमेशा एक िे दूिरे के पाि िाती रिती िै। यि बुराई को िन्म देती िै। यि लोगों को भ्रामक मृगमरीसचका की भाँसत प्रलोभन देती िै। यि मनुष्य के हृदय को कठोर बना देती िै। यि दूसषत िािनों िे प्राप्त की िाती िै। यि मनुष्य में असभमान उत्पन्न करके ईश्वर को सवस्मृत करा देती िै।

जीवन

"िीवन क्षसणक िै। यि पानी के बुलबुले के िमान िै। यि सवपसत्तयों, दुःखों और आघातों िे पूणा िोता िै;
सफर भी मूखा, अज्ञानी मनुष्य इि िांिाररक िीवन िे सचपका रिता िै। यि िरीर एक भारी बोझ िै। इि िरीर में
िीवन श्रम और दुःखों िे व्याप्त िै। मृत्युु सनरन्तर िमारी ओर ताकती रिती िै। अनेक प्रकार के रोग इि िरीर में उपिव मचाते रिते िैं। युवावस्था शीघ्रता िे िमें छोड देती िै और दुबालता तथा िरीर-सवनाश के िाथ वृद्धावस्था िमें आ घेरती िै। ितत आत्म-सवचार का अभ्याि करने वाला िी िास्तत्त्वक िीवन-यापन करता िै। िो आत्मज्ञान
लाभ करके पुनिान्मों िे मुक्त िो गया िै, विी यथाथा में ित्य एवं श्रेष्ठ िीवन व्यतीत करता िै। अन्य िनों के िीवन तो वृद्ध गदाभों के िीवन िैिे िैं। इि प्रकार इि िीवन के िमान सनरथाक कुछ भी निीं िै, िो िब प्रकार के गुणों
िे रसित िै और मृत्यु, रोग एवं सवपसत्तयों का स्थान िै।

अहंकार

"मैं इि सवनाशक अिंकार िे अत्यन्त भयभीत हँ िो िब क्रियाओं, विनाओं एवं कष्टों का िनक और िमस्त बुराइयों का स्रोत िै। यि भ्रामक िै। यि लोगों को भ्रसमत करता िै। यद्यसप यि कुछ निीं िै, सकन्तु िांिाररक िनों के सलए िब-कुछ िै। 'मेरे' पन िे इिका िंिगा िै। यि असवद्या िे उत्पन्न िै। यि दम्भ िे उद्भूत िै। असभमान
इिका पोषण करता िै। यि िबिे बडा शत्रु िै। यसद कोई इि अिंकार का त्याग कर दे, तो वि िुखी िो िायेगा। त्याग का रिस्य अिं के त्याग में िै।

"अिंकार का स्थान मन में िै। इिी प्रभाव में आ कर मनुष्य बुराई और दुष्कृत्य करता िै। यि गिरी िड पकडे हुए िै। सचन्ताएँ और परेशासनयाँ अिं-भाव िे िी उत्पन्न िोती िैं। अिंकार एक वास्तसवक रोग िै। असभमान, क्रोि, मोि, काम, लोभ, लालच, ईष्याा और राग-द्वेष-ये िभी अिंकार के िी अनुचर िैं। अिंकार िमारे गुणों को और सचत्त की शास्तन्त को नष्ट करता िै। यि िमें फँिाने के सलए प्रेम का िाल सबछाता िै। िो अिंकार िे मुक्त िै,

वि ि दा ि ुखी और ि ान्त रिता ि ै। अिंकार के कारण विानाएँ बढ़ती और फैलती ि ाती ि ैं। इ िसचरकासलक तिुरु ने स्त्री-बच्चों ंऔर समत्रों ंके प्रलोभन ि मारे चतुसदाक् फैलाये हए ि ैं, सिनके ि ादू को तोडना बहत कसठन ि ै।

अिंकार ि े बडा कोई ि तुरु निीं ंि ै। ि े परम ज्ञानी मुसन! मुझ पर अनुकम्पा करो, सििे मैं इ िसवनाक अिंकार ि े अपने को मुक्त कर ि कूँ।

मन

"यि भयानक मन केवल अिंकार ि े उत्पन्न ि ोता ि ै। यि चंचल मन ि डक के कुत्ते की भाँसत एक पदाथा ि े दूिरे की ओर दौडता रिता ि ै। यि ि दैव बेचैन रिता ि ै। यि इस्तिय-भोगों ंकी ओर प्रवृत्त रिता ि ै। यि अस्तस्थर प्रकृसत का ि ै। यि दुष्कामनाओं ंमें ि दा फँि ा रिता ि ै। ि मुि के ि ल-प्रविा को पी ि ाना, मेरुपवात को उखाड फेंकना अथवा ि लती हई असि को सनगल ि ाना ि म्भव ि ै; परन्तु इ ि भयंकर मन पर सनयन्त्रण करना अिम्भव ि ै। यि सवश्व केवल इ ि मन के कारण प्रकट ि ोता ि ै। ि ारे कष्ट इ ि मन ि े उत्पन्न ि ोते ि ैं। यसद सववेक और आत्मा की खोि के ि ारा इ ि मन का नाि कर सदया ि ाये, तो इ ि सवश्व ि सित ि ारे कष्टों ंका लोप ि ो ि ायेगा।

कामना

"कामना ि ास्तन्त की ि तुरु ि ै। यि एक उलूलू के ि मान ि ै ि ो ि मारे मोि-रूपी अिंकार और लोभ-रूपी रासत्र में िमारे मनों ंके आि-पाि मँडराती रिती ि ै। यि ि मारे ि मस्त ि द्गुणों ंको नष्ट कर देती ि ै। ििे प्रकार सचसडया िाल में फँि ि ाती ि ै, उिी प्रकार ि म इच्छाओं ंके ि ाल में फँि रिते ि ैं। कामनाओं ंकी असि ने ि में भस्म कर सदया ि ै। अमृत में स्नान करना भी ि में ि ीतल निीं ंकर ि कता। कामना ि ी पुनिान्मों ंका और ि ब प्रकार के कष्टों,ं सवपसत्तयों ंतथा दुःखों ंका कारण ि ै। यि एक नुकीली तलवार ि ै। यि मनुष्यों ंके हृदयों ंtilde 7 चुभ कर

अकारण ि ी उन्ें दुःख देती ि ै।

िरीर

"यि ि रीर मांि, चबी, ि ड्डी, निों,ं तनुतुओं ंऔर रक्त ि े बना ि ै। यि रोगों ंका घर ि ै। यि सवकारों ंि े पररपूणा ि ै। इिमें ि डने की प्रवृसत्त ि ै। इ ि ि रीर में अिंकार स्वामी बन कर वाि करता ि ै और लोभ स्वासमनी। इिके दि उपिवी गायें (इस्तियाँ) ि ैं। मन इिका ि ेवक ि ै। यि ि रीर बुलबुले की भाँसत ि ै, ि ो क्षण-भर में सवलीन िो ि ायेगा। यि एक ि वा-भरे हए गुब्बारे की भाँसत ि ै, ि ो कभी भी फट ि ायेगा। यि एक गन्दगी ि े भरे बतान की भाँसत ि ै, ि ो सकिी भी क्षण टूट ि ायेगा। चमकीली चमा वृद्धावस्था में मुरझाने वाली ि ै, सिकुडने वाली ि ै। उन मनुष्यों ंको सिक्कार ि ै, ि ो इ ि ि रीर को अमर आत्मा ि मझ कर अपने ि ुख और ि ास्तन्त को इ ि पर सनभार मानते िैं। सिन्ें बादलों ंमें चमकने वाली सबिली के स्थासयत्व और गिवा नगर में सवश्वाि ि ै, वे ि ी इ ि ि रीर को ि त्य मान कर इिमें आिक्त ि ोंगे।

बाल्यावस्था

"बालक िअिाय स्तस्थसत में ि ोता ि ै। वि अपने सवचार प्रकट निीं ंकर ि कता। वि गूँगा ि ै। वि समट्टी और कूडा खा लेता ि ै। सबना कारण रोने लगता ि ै। वि अज्ञानी ि ै। इ ि अवस्था में असि, पानी आसद ि े ि वादा खतरा िो ि कता ि ै। वि बडा क्षोभिील ि ै। इ ि सनरथाक बाल्यावस्था को ि ीवन की ि ुखमयी स्तस्थसत कै िा ि ा ि कता िै?

युवावस्था

"ीवन की इ अवसि में युवक कामुकता का दि ोता ै। उिका मन दुसवाचारों ंि भरा रिता ै। वि सवसभन्न प्रकार के दुषूकृत्य करता ै। उिकै िद्गुणों ंका लोप ो ाता ै। उिकी मुखाकृसत विानाओं ंि सवकृत
ी ाती ै। युवावस्था का काल तीव्र गसत ि िमाप्त ो ाता ै। युवावस्था का आकषाण सबिली की चमक की भाँसत त्वररत फीका पड ाता ै। वि मूखा व्यस्तक्त, ो अज्ञानतावि अपने क्षसणक यौवन पर आनस्तन्दत ीता ै, पि-मानव अथाात् मनुष्य-रूप में पि ी ै। वि अल्प काल में ी अपनी मूखाता पर पित्ताप करता ै। ऐा
युवक समलना दुलाभ ै ो सवनम्र ो, ो िन्तों ंके ििगा और िवा में िमय सबताता ो, ो ीनिुभूसतपूणा एवं दयालु ो और ो िद्गुणों ंि सवभूसषत ो। यद्यसप वि िमाग्रन्थों ंके अध्ययन में सनपुण ो, तब भी वि विाना का दि ो ाता ै। सिने युवावस्था के िमस्त अवरिीं ंपर सविय पा कर आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया ो, वि युवा ोते हए भी िबके ारा िम्मान का पात्र ै। वि यथाथा में बुस्तद्धमान् ै।

कामुकता

"सिका ीरीर मांि, ड्डी, चबी, निों ंऔर रक्त ि बना ै, उि स्त्री में क्या ौन्दया ै? स्त्री में ौन्दया अल्पकालीन ोता ै। वि भ्रास्तन्त का कारण ै। सिकुडनों ंि पूणा चमा वाली वृद्धा में ौन्दया किाँ ै ? स्तस्त्रयाँ दुगुाणों ंकी लपटें ैं। वे पुरुषों ंको उिी प्रकार भस्म कर देती ैं, सिि प्रकार असि सतनके को। वे उन्ें दूर ि ला देती ैं;
इिीसलए वे असि ि भी असिक भयंकर ैं। सकि प्रकार उनकी मिुर क्रीडाएँ पौरा िस्तक्त का नाि करती ैं और सकि प्रकार उनके आसलंगन - चुम्बन पुरुषों ंकी िुबुस्तद्ध को परासित कर देते ैं! िुन्दर स्त्री एक सवषपूणा नीले पदाथा के िमान ै ो आकषाक नाि उत्पन्न कर और सववेक–स्तक्त को आवृत करके ीवन को नष्ट कर देता ै। एक अज्ञानी, कामुक पुरुष स्त्री के प्रलोभन में फँि कर सवकृत विाना-रूपी ागे ि घिीट सलया ाता ै। यि रिस्यमय ीरि स्त्री ि ी प्रारम्भ हआ ै और अपनी अवस्तस्थसत के सलए उिी पर सनभार ै। वि मारे अनन्त दु:खों ंकी शृंखला का कारण ै। मुझे उिके वक्षःस्थल, नेत्रों,ं सनतम्बों ंऔर भौंों ंि क्या प्रयोन-सिनका ीरि-तत्त्व
मांि ी ै और ो पूणातया अिार ैं। यसद स्त्री का आकषाण िमाप्त ो ाये, तो िभी िांिाररक बिनों ंका अन्त
ी ायेगा। उिका त्याग सकये सबना, मैं िाश्वत ब्रह्मानन्द की प्रास्तप्त की आिा सकि प्रकार कर िकता हँ? काले नेत्रों ंवाली स्तस्त्रयाँ, अज्ञानी कामुक पुरुषों ंको फँिाने के सलए कामदेव ारा सबछाये हए ाल ैं। उन िुन्दर स्तस्त्रयों ंके ीरीर, ो मूखा पुरुषों ंारा दुलारे ाते ैं, प्राण-सवििान के पित् श्मिान-गृ में ले ाये ाते ैं। पि और कीडे उनके मांि का भक्षण करते ैं, गीदड उनके चमा और मांि को फाड डालते ैं। मैं इ भ्रामक, क्षसणक ऐस्तिय िुख को निीं ंभोगना चािता। मैं केवल उि परमानन्द की स्तस्थसत को प्राप्त करना चािता हँ ो न्म-मरण के चक्र का अन्त कर दे।

वृद्धावस्था

"वृद्धावस्था दे को दुबाल बना कर उिका ौन्दया िमाप्त कर देती ै। वृद्ध मनुष्य के ाथ पररवार के दिस्य घृणा का व्यविार करते ैं। वि अिाय अवस्था में ोता ै। उिकी इस्तियाँ िस्तक्तिीन ो ाती ैं। वि अपनी इच्छाओं ंको तुष्ट निीं ंकर पाता। उिकी स्मरण–स्तक्त ठीक निीं ंरिती। वि अनेक अिाध्य रोगों ंि पीसडत ी ाता ै। भोगों ंके सलए अतोषणीय (तृप्त न ोने वाली) कामना रिती ै; परन्तु भोगने की ामथ्या निीं ी। इच्छाएँ (कामनाएँ) उिके हृदय को दग्ध करती ैं; परन्तु वि उन्ें िन्तुष्ट करने में अिमथा ै। मृत्यु मनुष्य के श्वेत मस्तक को एक पके हए किीफल की भाँसत, सिे वृद्धावस्था-रूपी नमक ने और स्वासदष्ट बना सदया ै,
आनन्दपूवाक सनगल ाती ै। इ िंिार में वृद्धावस्था असनवाया ै। ऐि कष्टपूणा िांिाररक ीवन ि क्या लाभ, ो
नाि और वृद्धावस्था के अिीन ै?

काल

"काल इ पृथ्वी पर िीवन-रूपी िागे को काटने वाला चूिा ि ै। इ सवश्व में ऐिी कोई वस्तु निीं ंिो इ बि-कुछ िडप करने वाले काल ि े बच िके। काल िवाासिक मिान् मनुष्य को भी क्षण-भर के सलए निीं ंछोडता। काल िारी वस्तुओं ंपर छाया हआ ि ै। इिका अपना दृश्यवान् रूप कुछ निीं ंि ै, सिवाय इिकै सक सदन, मिीने, वषा और युगों ंके नामों ंि े अपूणा रूप ि े िाना िाता ि ै। काल गदान ि े पाँव तक लटकती हई मृतकों ंकी सिड्डयों ंकी लम्बी िंिीर बाँिे हिए नाचता ि ै। वि प्रलय के ि मय भयंकर असि का रूप िारण करके िारे िंिार को भस्मीकृत कर देता ि ै। उिके मागा में कोई निीं ंआ िकता। प्रलय के अन्त में यि स्वयं अपना अस्तस्तत्व खो कर िाश्वतता में सवलीन िो िाता ि ै। थोडे सवश्राम के पिात् यि सफर िबका रचसयता, पालनकताा, िंिारक और स्मरणकताा बन
कर प्रकट िोता ि ै। इ प्रकार काल सवस्तार करता ि ै, पररपालन करता ि ै और अन्त में िारी वस्तुओं ंको क्रीडावत् नष्ट कर देता ि ै।

"यि मन स्तस्त्रयों ंके िंिगा में अपना सवनाि कर लेता ि ै। सफर िरीर वृद्धावस्था के भार ि े झुक िाता ि ै। मनुष्य मृत्यु के िमय अपनी मूखाता पर दुःखी िोता ि ै। िो िरीर आि रेिमी वस्त्रों ंऔर मालाओं ंि े िुिस्तज्जत सकया िाता ि ै, वि कल को भस्म सकया िाने वाला ि ै अथवा गिरी कब्र में गाड सदया िाने वाला ि ै। भयंकर सवष सवष निीं ंि ै; परन्तु भोग-पदाथा अत्यन्त भयंकर सवष ि ैं। सवष तो केवल एक िरीर को नष्ट करता ि ै; सकन्तु भोग-पदार्थों का सवष एक के बाद एक, कई िन्मों ंतक फैल कर अनेकों ंिरीरों ंको नष्ट करता ि ै। यिाँ िीवन िल के ऊपर बुलबुलों ंकी भाँसत असनसित ि ै। सवषय-भोग सबिली की चमक की तरि अस्तस्थर ि ैं। युवावस्था के आनन्द क्षणभंगुर ि ैं।

"ि े िम्माननीय मुसन! मुझे ऐिा उपदेि दीसिए, सििि े मैं िीघ्र दुःख, भय और िांिाररक कष्टों ंि े मुक्त िोकर ित्य की ज्योसत प्राप्त कर िकूँ। मुझे कष्टों,ं दुबालताओं,ं िंियों ंऔर भ्रमों ंि े रसित िाश्वत पद सनसदाष्ट कीसिए। ि े मिात्मन् ! िीवन की वि कौन-िी अवस्था ि ै, िन्म और मृत्यु लाने वाले कष्टों ंि े सििका िम्बन्ध न िो? मुझे िाश्वत िास्तन्त, िाश्वत िुख और अमरता प्राप्त करने का उपाय बताइए।" दिरथ िी के दरबार में एकसत्रत मुसनयों ंके िमक्ष राम इ प्रकार बोले ।

िुकदेव की कथा

तब सवश्वासमत्र ने किा- "ि े राम! तुम सववेक, वैराग्य, िुद्ध मसत, बुस्तद्धमत्ता और स्पष्ट बोि ि े िम्पन्न िो। तुम्हारे सलए असिक िीखने को कुछ निीं ंि ै। तुम्हारे पिा मिसषा व्याि के पुत्र िुकदेव-िा आध्यास्तत्मक ज्ञान ि ै। यद्यसप िुक को अन्तप्राज्ञा ि े ज्ञान हआ था; सफर भी उन्ें अपने आध्यास्तत्मक अनुभवों ंके पुसष्टकरण के सलए कुछ
सनदेि अपेसक्षत थे।"

राम बोले- "ि े मुसन! मुझे बतलाइए सक िुक, सिन्ें पिले अपने ज्ञान के सवषय में सनिय निीं ंथा, सकि प्रकार बाद में वे अपने सवश्वािों ंमें स्तस्थर हए।"

सवश्वासमत्र िी बोले- "ि े राम ! मैं तुम्हें िुकदेव की कथा िुनाता हँ, सिनका मामला ठीक तुम्हारे-िा ि ै। उनमें मिान् आध्यास्तत्मक ज्ञान था। वे इ िंिार की समथ्या प्रकृसत पर गम्भीरता ि े सचन्तन करते थे और तुम्हारी िी भाँसत इिकै िारे िम्बन्धों ंि े उदािीनता का भाव रखते थे। यद्यसप वे अध्यात्म-ज्ञान ि े िम्पन्न थे, सफर भी उनके मन में अस्तस्थरता थी। उन्ें अपने ज्ञान की सनसितता में दृढ़ सवश्वाि निीं ंथा; सफ अतः उनके मन में िास्तन्त निीं ंथी।

उन्ोंने अपने सपता के पाि िा कर सनम्नांसकत प्रश्नों ंका िमािान पूछा- 'कष्ट उत्पन्न करने वाली माया किाँ ि े

आयी? सकि प्रकार इिका सनराकरण िोता िै? इिका क्या कारण िै? यि किाँ तक फैलती िै? किाँ इिका अन्त िोता िै? िंिार की उत्पसत्त कब हई ?'

"व्याि िी ने इि सवषय में िब-कुछ स्पष्ट रूप िे िमझाया। िुक को िन्तोष निीं ंहआ। यि िब-कुछ वे स्वयं िानते थे। तब व्याि िी ने अपने पुत्र को उिके प्रश्नों ंका िल प्राप्त करने िेतु िनक िी के पाि भेिा। िुक सवदेिनगरी में गये। दरबान ने व्याि िी के पुत्र िुक के आने का िमाचार रािा को सदया; परन्तु वे उनके स्वागताथा आगे निीं ंआये, क्योंसक वे उनकी िमसचत्तता की परीक्षा करना चािते थे। िुक को िात सदन तक सबना भोिन के ड्योढ़ी पर प्रतीक्षा करनी पडी और सफर भी उनका मन संकसचत् अिान्त निीं ंहआ। सफर उन्ें और िात सदन तक बािर के अिाते में रोका गया। तत्पिात् उन्ें रािभवन के अन्तर कक्ष में ले िाया गया। यिाँ उन्ें भली प्रकार िे स्वासदष्ट भोिन परोिा गया और िुन्दर स्तस्त्रयों ंद्वारा पुष्प, िुगस्तित द्रव्य और चन्दन आसद िे िम्मासनत सकया गया। परन्तु िुक सबलकुल उदािीन रिे। न वे कष्ट, न ये मनोरंिन िुक के मन की दिा को प्रभासवत कर िके, िो िवा के झोंकों ंके िामने चट्टान की भाँसत स्तस्थर था। इन परीक्षणों ंिे िनक िमझ गये सक िुक ने परम िाश्वत िास्तन्त प्राप्त कर ली िै।

"िनक िी उठे और ब्रह्मसषा को नमस्कार करके बोले- 'तुमने िीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सलया िै। सवश्व के िारे िम्बिों ंको त्याग कर तुमने परमोच्च फल प्राप्त कर सलया िै। कृपया बताओ सक अब तुम यिाँ क्यों ंआये िो? िे मिात्मन्! मैं िदैव तुम्हारी िेवा में तत्पर हँ।'

"िुक बोले- 'माया कैिे उत्पन्न हई? वि कैिे बढ़ती िै और सकि प्रकार नष्ट िोती िै? िे िम्माननीय गुरु! कृपया मुझे सवस्तार िे िमझाए।'

"िनक ने उन्ें विी बात बतायी, िो उन्ोंनें उिके सपता व्याि िी िे िीखी थी।

"तब िुक बोले- 'ये िब तो मैं पिले िे िी अपनी अन्तप्राज्ञा िे िानता था और मेरे प्रश्नों ंके उत्तर में सपता िी ने भी यिी बताया िै। आप भी मुझिे विी बात कर रिे िो और िास्त्रों ंका वास्तसवक असभप्राय भी यिी िै। इि नािवान् माया िे संकसचत् भी लाभ निीं ंिोता, सििका उदय श्वाि अथवा सुफुरणा के रूप में ब्रह्म िे िोता िै और सफर ब्रह्म में िी सवलीन िो िाती िै। कृपया आत्मन् अथवा ब्रह्म की प्रकृसत पर प्रकाि डासलए।'

"रािा िनक ने उत्तर सदया- 'केवल ब्रह्म िी िै। वि अकुषुण्ण िै, असवभाज्य और स्वयंप्रकािी िै। िमूपूणा सचदाकाि की भाँसत वि िवाव्यापक िै। ब्रह्म के सिवाय और कुछ निीं ंिै। वि ज्ञान उिके सनि िंकल्प िे बद्ध िै और िंकल्पों ंके त्याग िे मुक्त िोता िै। तुमने परम आत्मा का िीिा ज्ञान प्राप्त कर सलया िै। तुमने आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया िै। अतएव, तुममें ऐस्तिक भोगों ंके सलए न आस्तक्त िै और न कामना। तुमने प्राप्त करने योग्य िब-कुछ पा सलया िै। िो भी प्राप्य िै, तुमने प्राप्त कर सलया िै। तुम एक वीर िो, क्योंसक तुमने िारी कामनाओं ंपर सविय प्राप्त कर ली िै। तुम पूणा िीवनुमुक्त िो। तुम परमात्मा िे एकरूप िो गये िो | '

"रािा िनक ने िुक को आस्तत्मक रिस्यों ंमें दीसक्षत सकया। िुक परमात्मा में सचत्त को स्तस्थर सकये हए मौन रिे। उनके िमस्त िंिय और सवक्षेप पूणातया िमाप्त िो गये। वे माया के भ्रम िे मुक्त िो गये। वे एक िििस्र वषा तक सनसवाकल्प िमासि में रिे। सििे प्रकार िल की एक बूंद िागर में सवलीन िो िाती िै, उिी प्रकार िुक ने स्वयं को परम ित्ता में अथाात् िुख के िागर में सवलीन कर सलया।"

सवश्वासमत्र िी किने लगे- "िे राम ! तुम्हें भी िुक द्वारा अपनाये हए मागा का अनुिरण करना चासिए। सििे आत्मज्ञान िो गया िै, उिे िांिाररक भोग अच्छे निीं ंलगेंगे। वि पदाथों के िाथ अपने को िम्बद्ध निीं ं

करेगा। पदार्थों के प्रसत प्रसतकूल भाव अथाात् असनच्छा िोना असत कसठन िै। यसद मन पदार्थों की ओर प्रवृत्त िोता
िै, तो बिन दृढ़तर िो िाता िै। यसद प्रवृसत्त निीं ंिै, तो बिन सिसथल िोता िै और अन्ततः वि नष्ट िो िाता िै। विानाओं ंका नाि िोना िी मोक्ष िै। विाना िारा सवषय-भोगों ंका सपपािु मन बिन की ओर अग्रिर करता िै। सिन्होंने विानाओं ंको नष्ट कर सदया िै और िािंिाररक िुखों ंके प्रसत उदािीन भाव रखते िैं, वे िीवनुमुक्त िन्ति
िैं।" इि पर िन्तों ंकी िभा को िम्बोसित करते हए सवश्वासमत्र िी बोले- "िो-कुछ राम ने अपनी अन्तप्राज्ञा िे िाना िै, वि उनके सचत्त की िास्तन्त के सलए वसिष्ठ िी िारा अनुमोसदत िोना चासिए। पूज्य वसिष्ठ िी मनस्वी राम को िमुसचत रूप िे िमझा करके उन्हें मानसिक िास्तन्त प्रदान करें। केवल वे िी राम के िंिियों ंका सनराकरण करके उन्हें िान्त और आनस्तन्दत कर िकते िैं, क्योंसंक वे ज्ञानी िैं।"

सवश्वासमत्र ने वसिष्ठ िी िे किा- "श्रीमान्! आपको स्मरण िोगा सक ब्रह्मा िी ने िमारे पास्पररक िेष को समटाने एवं िारे प्रासणयों ंके कल्याण-िेतु सनदि, ज्ञानपूणा प्रवचन और ज्ञानगसभात कथाएँ किीं ंथीं।ं ये बातें अब आपके िारा राम को बतायी िानी चासिए। ये िी अब उन्हें सचत्त की िास्तन्त प्राप्त करने में ििायक सिद्ध िोंगी। िो कामना रसित िै, सििने इस्तियों ंपर सविय प्राप्त कर ली िै, विी गुरु-दीक्षा िे लाभास्तित िो िकता िै। सकन्तु एक अनसिकारी, िो िंिार िे ऊबा निीं ंिै, को सदया हआ उपदेि इिी प्रकार दूसषत िो िाता िै िैिे श्वान के चमा िे बने थैले में रखा दूि।"

दिरथ के दरबार में एकसत्रत हए िारे िन्त-मुसन सवश्वासमत्र िी के उत्कृष्ट उद्गारों ंके सलए ििुवाद करने लगे।

तब वसिष्ठ िी ने किा- "िे मिात्मन्! मैं आपके आदेि का पालन करूँगा। िज्जन और ज्ञानी िन के उद्गारों ंका पालन करने को कौन ना कि िकता िै? मैं अब राम को िुद्ध ज्ञान की कथाएँ िुनाऊँगा, िो सनषाद पिासडयों ंपर कमलयोसन ब्रह्मा िारा स्तस्थर सचत्त, िुद्ध और गुणी िनों ंको िन्म-मरण के चक्र िे छुडाने िेतु किी गयी थीं।ं"

तब वसिष्ठ िी ने राम को उनके िंियों ंका िमािान करने और उन्हें परम िास्तन्त एवं िाश्वत िुख का मागा सदखाने िेतु सनम्नांसकत कथाएँ िुनायीं।ं

२.मु मु कुप्रकरण

मुमुकुषुत्व

िरर ॐ! वेदान्त अथवा ज्ञानयोग के िािक को िािन-चतुष्टय िे िम्पन्न िोना चासिए : सववेक अथाात् ित् और अित् के बीच भेद; वैराग्य-इिलोक और परलोक के भोगों ंके प्रसत उदािीनता; षड्गुण िम्पसत्त-िम (मन की िास्तन्त), दम (इस्तिय-सनयम), उपरसत (कमों का त्याग), सतसतक्षा (ििनिीलता), श्रद्धा (सवश्वाि) और िमािान (सचत्त की एकाग्रता); और अस्तन्तम मुमुकुषुत्व अथाात् मुस्तक्त के सलए उत्कण्ठा।

इि अध्याय में मुमुकुषुत्व का वणान िै।

वसिष्ठ िी राम िे इि प्रकार बोले- 'पुरुषाथा के िारा इि िंिार में कुछ भी प्राप्त सकया िा िकता िै। मनुष्य सकिी भी सवपसत्त पर सविय प्राप्त कर िकता िै। आत्मज्ञान िम्बिी िास्त्रों ंकी सदिा में प्रयत्नीलिता मोक्ष का मागा प्रिस्त करती िै। िांिाररक ज्ञान िम्बिी िामान्य िास्त्रों ंकी सदिा में प्रयत्नीलि िोना बिन का कारण िीता िै । िो इन िािा न-चतुष्टय एवं अन्य गुणों ंिे ि म्पन्न िैं , िो ि न्तों ं का िं ग करते िैं और सकिोरावस्था िे िी आत्मज्ञान िम्बिी िास्त्रों ंका स्वाध्याय करते िैं, वे मोक्ष प्राप्त करते िैं।

"प्रत्येक मनुष्य को िािी सदिा में प्रयत्नीलि िोते हए आत्मज्ञान िम्बिी पुस्तकें पढ़ कर और िन्तों ंके ज्ञानप्रद उपदिों ंपर चल कर पूणाता प्राप्त करनी चासिए। 'भाग्य' अज्ञासनयों ंके मस्तस्तष्कों ंमें बैठा हआ एक समथ्या सवचार िै।"

राम बोले-"पूवा-िन्म की विानाएँ मुझे िािी प्रयत् करने िे रोकती िैं, िे श्रद्धेय गुरु! मुझे मागा-दिान दें सक क्या करूँ?"

वसिष्ठ मुसन ने उत्तर सदया-"िे मनस्वी राघव ! असवनािी ब्रह्म मनुष्य के अपने प्रयत्नों ंिे िी प्राप्त सकया िा किता िै। िो विानाएँ मनुष्य के िारा उिके पूवा-िन्म में उत्पन्न की गयी थीं, ं वे कई िन्मों ंतक िािि सचपकती रिेंगी। दो प्रकार की विानाएँ िोती िैं-िुभ और अिुभ विानाएँ। अिुभ विानाएँ पुनिान्मों ंका कारण बनती िैं और िुभ विानाएँ पुनिान्मों ंिे मुस्तक्त सदलाती िैं। यसद उिमें िुभ विानाएँ रिेंगी, तो वि आत्म-िाक्षात्कार करेगा और यसद अिुभ विानाएँ रिेंगी, तो उिे कष्ट और सवपसत्तयाँ िािनी पडेंगी तथा बारम्बार िन्म लेना पडेगा। िे राम ! अिुभ विानाओं ंको त्याग कर िुभ विानाएँ उत्पन्न करो और िुद्ध, िवाव्यापक ब्रह्म का सनयसमत रूप िे स्तस्थ ध्यान करो। यसद तुम िुभ विानाओं ंकी वृस्तद्ध करोगे, तो अिुभ विानाएँ स्वयं िी मर िायेंगी। तुम्हारे सलए िो मागा सनसदाष्ट सकया गया िै, उिका श्रमपूवाक अनुिरण करो और उपसनषदों ंके मिावाक्यों ंके अथा का मनन करो िब तक तुम्हें पूणाबोि प्राप्त न िो िाये। ऐस्तिक पदाथों की कामना िे अपने को मुक्त करके िाश्वत िुख प्राप्त करो।

"िे राम! मेरी अपनी किानी िुनो। ब्रह्मा ने मुझे अपने िंकल्प िे स्वयं िािै िी िृसित सकया। उन्होंने मुझे आत्मा का ित्य ज्ञान सदया। उन्होंने मुझे आदिे सदया- 'िमूबू िीप के भारतवषा नामक दिे में िा कर िािन-चतुष्टय िे िम्पन्न लोगों ंको ब्रह्मज्ञान के रिस्यों ंमें दीसक्षत करो।'

"मोक्ष के िार पर चार िारपाल रिते िैं। ये िैं-िास्तन्त, सवचार, िन्तोष और ित्संग। यसद तुम इन चार िारपालों ंिे समत्रता कर लो, तो वे तुम्हारे सलए मोक्ष-िाम के िार खोल देंगे। यसद तुम इनमें िे एक िे भी समत्रता कर लो, तो वि िेष तीन िे तुम्हारा पररचय करा देगा। स्वाध्याय (िमिास्त्रों ंका अध्ययन), ित्संग और ब्रह्म अथवा पसवत्र अमर आत्म-तत्त्व पर ितत ध्यान के िारा आत्मज्ञान प्राप्त करो। आत्मा का ज्ञान पुनिान्मों ंके चक्र को समाप्त कर देगा।

"अज्ञान-रूपी िपा िे डिा हआ मनुष्य ज्ञान-रूपी गरुड-मन्त्र िे ठीक िो िायेगा। ज्ञान प्राप्त िोने पर, मन पूणा िमता प्राप्त कर लेगा। उिके ऊपर तीरों ंकी वषाा भी िोगी, तो वि पुष्पों ंिािै प्रतीत िोगी; लपटों ंकी िय्या उिे गुलाब-िल सछडकी हई कोमल िय्या िािै प्रतीत िोगी। मनुष्य में आत्मज्ञान का उदय तभी िोगा, िब वि तीनों ंस्रोतों-अपने सनिी अनुभव िे, उपसनषदों ंके मिावाक्यों ंके यथाथा अथों िे और गुरु के उपदिों ंिे प्राप्त ज्ञान को स्वयं में िमासित कर ले। सिन लोगों ंमें कुिाग्र, िूक्ष्म और िुद्ध बुस्तद्ध, िािसिक िमझ और दृढ़ िंकल्प-स्तिक्त निीं ंिै, उन्हें िास्त्रों ंके अध्ययन िे लाभ निीं ंिो िकता। गंगा-स्नान, तप और तीथायात्रा तुम्हारे सचत्त को िुद्धि कर देंगे; परन्तु सनमाल ब्रह्मपद को प्राप्त करने में तुम्हारी ििायता निीं ंकर िकते। पूणा प्रयाि तथा

दीघाकासलक एवं ितत ध्यान िारा परम आत्मा पर सचत्त को स्तस्थर करने िे िी परमानन्द की स्तस्थसत प्राप्त की िा किती िै।

ाखिन्त

"सचत्त की िास्तन्त और हृदय की स्तस्थरता प्राप्त िोने पर इस्तियाँ भी िान्त और स्तस्थर (मौन) िो िाती िैं। सफर प्रत्येक वसुतु िमत्व के प्रकाि में दृश्यमान् िोती िै। मन की यि िास्तन्त विानाओं ंके िमूल नाि िे प्राप्त ोती िै। यसद मनुष्य िास्तन्त में स्तस्थत िो िाये, तो उिके सचत्त को कोई सवसक्षप्त निीं ंकर िकता। उिका सचत्त िदा िान्त रिेगा। अपमान िोने पर, उत्पीसडत सकये िाने पर, आित िोने अथवा चोट खाने पर भी उिके सचत्त की
ास्तिन्त भंग निीं ंिोगी।

"मिान् िन्त और ऋसष, िास्तन्त-रूपी कवच िे अपने-आपको िुरसक्षत कर आि भी िान्त सचत्त िे सवश्व के कसठन कायों में िंलि िैं।

"अस्तन्तम िुख सचत्त की िास्तन्त िे िी उत्पन्न िोता िै और प्राप्य िै। ऐस्तिक िुखों ंकी सपपािा एक दीघाकासलक रोग िै। यि सवश्व मृगमरीसचका िे पररपूणा िै। यि िारा िुष्क और िूखा िै। इि िुष्कता को िास्तन्त ी िारा कर िकती िै। िास्तन्त िी िबको भलाई की ओर अग्रिर करती िै। िास्तन्त िे प्राप्त िुख के िमान िुख अन्यत्र किीं ंिे प्राप्त निीं ंिो िकता। िान्त प्रकृसत का मनुष्य िासदाक आनन्द अनुभव करता िै और उिे अपने सचत्त िे स्वतःसुफुररत उच्चतम ित्य के िास्तन्तप्रद प्रभाव की अनुभूसत िोती िै। इि दुलाभ गुण िे िम्पन्न व्यस्तक्त इि ोिरीर में देदीप्यमान िूया की भाँसत प्रकािमान् िोता हआ िरलता िे मोक्ष प्राप्त कर लेता िै। िे राम ! तू भी इि ास्तिन्त, मिुर िास्तन्त िे युक्त िो!

आत्म-डवचार

"आत्म-सवचार अज्ञानता-रूपी बादलों ंको सछन्न-सभन्न करके आत्मा का ज्ञान कराता िै। पुनिान्म के सचरकासलक रोग के सनवारण की यिी एकमात्र औषसि िै। भय, कष्ट और सवपसत्त-काल में यि तुम्हारा िाथी िै। आत्म-सवचार के सदव्य वृक्ष का फल 'मोक्ष' िै। आत्म-सवचार विानाओं ंऔर सवचारों ंको तथा स्वयं मन को भी नष्ट करता िै। यि ीविन-लक्ष्य पर पहँचने के सलए काया-कारण का भेद करने में तुम्हारी ििायता करता िै। यि
ाश्वित आनन्द प्रदान करता िै। िे उच्च मानि राम! पूछो- 'मैं कौन हँ? मैं किाँ िे आया? यि रिस्यमय िंिार किाँ िे आया?' ऐिी खोि अज्ञान को नष्ट करके आत्मा का ज्ञान अथाात् 'ब्रह्मज्ञान' प्रदान करेगी िो तुम्हारे मोक्ष का दाता िोगा।

सन्तोष

"िन्तोष िवाश्रेष्ठ गुण िै; िन्तोष िी िच्चा आनन्द िै और िनुतुष्ट व्यस्तक्त को िवोपरर िास्तन्त प्राप्त िोती िै। न्तोष िे िम्पन्न मनुष्य के सलए सवश्व का िाम्राज्य भी भिूे िे असिक निीं ंिै। उिे पदाथों के भोग सवष के िमान प्रतीत िोते िैं। उिका सचत्त उच्चतर आध्यास्तत्मक सवषयों ंऔर आत्म-सवचार की ओर प्रवृत्त िोता िै। उिे अन्तमान ेआनन्द प्राप्त िोता िै। वि सवपरीत पररस्तस्थसतयों ंमें भी अिान्त निीं ंिोता। िन्तोष िारी बुराइयों ंका िमन करता िै। लोभ या लालच-रूपी भयंकर रोग के उपचार के सलए यि रामबाण औषसि िै। िन्तोष िारा िास्तन्त को

प्राप्त हआ मन िदैव िान्त रिता िै। िनुतुष्ट व्यस्तक्त पर िी सदव्य प्रकाि अवतीणा िो िकता िै। िन्तोषी मनुष्य
भले िी सनिान िो; परनुतु वि अस्तखल सवश्व का िम्राट् िै। िनुतुष्ट वि िै िो अपने पाि िो कुछ निीं ंिै, उिकी कामना निीं ंकरता और िो कुछ िै, उिे िी ढंग िे भोगता िै। सबना प्रयाि के िो-कुछ प्राप्त िो िाता िै, वि
उिी िे िनुतुष्ट रिता िै। वि सविाल हृदय और िौम्य िोता िै। ऋस्तद्ध-सिस्तद्ध उिकी िेवा में उपस्तस्थत रिती िैं। वि
सचन्ताओं ंऔर पररािनयों ंिे मुक्त रिता िै। िन्तोषी व्यस्तक्त की िान्त मुखाकृसत उिके िम्पका में आने वालों ंके सलए भी आनन्दप्रद िोती िै। एिा मनुष्य तपस्तस्वयों ंएवं िारे मिापुरुषों ंके िम्मान का पात्र बनता िै।

सत्संग

"िंिार-रूपी भीषण िमुि को पार करने के सलए ित्संग नाव का काम करता िै। िन्तों ंका क्षण-भर का िंग भी अत्यन्त लाभप्रद िोता िै। मिात्माओं ंके दिान मात्र पापों ंको नष्ट करके मन को ऊँचा बनाते िैं। गुणी िनों ंकी िंगसत सववेक-रूपी असभनव पुष्प उत्पन्न करती िै। िन्तों ंकी िंगसत िारी सवपसत्तयों ंका सनवारण करके अज्ञान-रूपी वृक्ष को नष्ट करती िै। िन्त िन िाधकों ंके सलए आचरण के िवोत्तम सनयम सनधााररत करके उन्हें िीवन-यापन की िी सवसध सिखाते िैं। गुणी िनों ंका िंिगा, िी माना प्रकासित करके मनुष्य का आन्तररक अन्धकार नष्ट करता िै। िन्तों ंका िंिगा माया और इि भीषण मन पर सविय प्राप्त करने का अचूक िाधन िै।

"िन्तोष, ित्संग, आत्म-सवचार और िास्तन्त आत्मज्ञान -प्रास्तप्त के िाधन- चतुष्टय िैं। िो इन चार िाधनों ंिे िम्पन्न िैं, उन्होंने िंिार-रूपी िागर को पार कर सलया िै। िन्तोष िवाशे्रष्ठ लाभ, ित्संग िी माना, आत्म-सवचार िवि ज्ञान और िास्तन्त मनुष्य के सलए परम िुख माना िाता िै। यसद िके पाि ये चार िाधन िैं, उिे िमस्त िमृस्तद्धयाँ और िफलता प्राप्त िोती िैं। ज्यों ंिी इनमें िे एक गुण सवकसित िोता िै, वि तुम्हारे उच्छृंखल मन के दोषों ंकी िस्तक्त को क्षीण करने लगता िै। गुणों ंका िंवधान दोषों ंको दबाने और उनके िमूल नाि करने का माना प्रिस्त करता िै; इिके सवपरीत, दुगुाणों ंको बढ़ावा देने िे उनकी वृस्तद्ध िोगी और गुणों ंका लोप िोगा। मन दोषों ंका एक वन िै सििमें िुभ और अिुभ-रूपी दो तटों ंके मध्य कामना-रूपी नदी प्रबल वेग िे प्रवासित िै।
"अतएव, िे राम! वीरतापूवाक अपने मन पर सनयन्त्रण करके, िीवन में अपने व्यविार के सलए उपयुाक्त चार िाधनों ंको पररश्रमपूवाक सवकसित करो।

"िो आत्म-सवचार का सनयसमत अभ्याि करता िै, वि िंिार के कष्टों ंऔर सवपसत्तयों ंिे कभी िन्तप्त निीं ंिोगा। उिमें िदैव िमसचत्तता और िमदृसष्ट रिेगी। वि िदा िान्त और प्रिन्न रिेगा। माया उिके पाि निीं ंफटकेगी। वि िदा अक्षय एवं स्वयं प्रकािमान आत्मा के ध्यान में िंलि रिेगा।

"मनुष्य को िदा आत्मज्ञान-सवषयक ग्रन्थों ंका अध्ययन करना चासिए, िन्तों ंका िंिगा रखना चासिए, 'िाधन-चतुष्टय' एवं िी आचरण सवकसित करना चासिए, इस्तन्ियों ंपर सविय प्राप्त करके, आत्म-सवचार के अभ्याि में िंलि रिना चासिए िब तक उिके अन्तमान में आत्मज्ञान उदय न िो िाये।

"िीवन्मुक्त व्यस्तक्त पूणारूपेण वािना रसित, मैं-मेरा रसित, सनभाय और क्रोध रसित िोता िै। वि िवात्र आत्मा का िी दिान करता िै। उिमें िमता का भाव और िनुतुसलत मन अथाात् िमासित सचत्त रिता िै। उिमें कोई आिस्तक्त, इच्छा और एषणा निीं ंिोती। उिकी स्तस्थसत अवणानीय िोती िै और सफर भी वि िंिार में िामान्य िन की भाँसत घूमता-सफरता िै। वि िदैव सनमाल एवं िान्त रिता िै। वि तुरीयावस्था में रिता िै। िुद्ध, िवाव्यापक ब्रह्म िे एकरूप िै। वि िैत-भाव, भेद-भाव और सभन्नताओं ंिे मुक्त िै।

"िे वीर राम! तुम एक बालक तक के िब्दों ंमें सवश्वाि रख िकते िो यसद वि शु्रसतयों ंके वाक्यों,ं गुरु के उपदेिों ंऔर तुम्हारे अपने अनुभवों ंिे एकरूप रिता िै। अन्यथा ब्रह्मा के वचनों ंको भी फूि के रागान अस्वीकृत

कर देना चासिए। िे िििी राघव! यि िमझ लो सक सवसभन्न प्रकार के दृष्टान्त तुम्हारे अन्तःस्तस्थत आत्मा के ज्ञान की उत्पसत्त िेतु और तुम्हें अिैत ब्रह्म अथवा परम िेत्ता की प्रकृसत िमझाने के सलए सदये िाते िैं।

"ज्ञान और उपयुात्त चार गुण िाथ–िाथ रिते िैं। वे एक-दूिरे के िासन्नध्य में रिते हए प्रकािमान िोते िैं। ये दोनों ंएक तालाब और उिमें उगने वाले कमल के फूलों ंकी भाँसत िमृस्तद्ध को प्राप्त िोते िैं। यसद ये दोनों ं िाथ–िाथ सवकसित िोते रिते िैं, तो तुम तीव्रता िे आत्मज्ञान प्राप्त कर लोगे।

"िे गुणी राम! तुम इन कथाओं ंको िुनो, िो तुम्हारे िमस्त िंियों,ं सवक्षेपों ंऔर भ्रमों ंका सनवारण करके िीवन के अस्तन्तम लक्ष्य की प्रास्तप्त में िायक िोंगी। िो इन ज्ञानपूणा किासनयों ंको िुनेगा, इनके अनुिार आचरण करेगा, सनिय िी यथाथा वैराग्य, असवनािी और अकुषुण्ण आध्यास्तत्मक िन, िाश्वत िुख, परम िास्तन्त, आध्यास्तत्मक प्रकाि और अस्तन्तम मोक्ष प्राप्त करेगा।"

३.उत्पसत्त-प्रकरण

िृसष्ट

वसिष्ठ िी राम िे बोले-"ब्रह्म सनत्य-िुद्ध, अिैत, िवाव्यापक, िमूपूणा, लोकातीत, अमल, अवणानीय, अनन्त और पूणा िै। दृश्य, पररवतानीय िंिार अदृश्य, अपररवतानीय ब्रह्म िे प्रकट हआ िै। यि माया-ब्रह्म की िमथ्या िस्तक्तकी बहरूपता के असतररक्त कुछ निीं ंिै। िस्तच्चदानन्द ब्रह्म इि िृसष्ट के रूप में असभव्यक्त िै। यि मन के िारा िी प्रकट िोता िै। यि सवश्व मन के िारा िी ित्य प्रतीत िोता िै। यि सवश्व एक दीघा स्वप्न की भाँसत िै।

मन िंकल्पों ंऔर सवकल्पों ंके िारा प्रिररत िोता िै। मन अपनी कल्पना िारा इि सवश्व का सवस्तार करता िै, िो 'गिवा नगर' के िमान समथ्या िै।

"िीव अथवा वैयस्तक्तक आत्मा अपने में चैतन्यता का अनुभव करती िै, और 'मैं क्या हँ?' इि सवचार िे उि अपने अिंकार का बोि िोना िै। अिंकार मन के िंकल्प िे उत्पन्न िोता िै। लकडी के दो टुकडों ंको रगडने िे थोडी-िी असि उत्पन्न िोती िै। यि थोडी-िी सचनगारी बडी लपट के रूप में बढ़ िाती िै। इिी प्रकार, िीव का अिं-भाव सवसभन्न पदाथों के सवसभन्न अनुभवों ंके िारा बढ़ता िाता िै। छोटा-िा 'मैं' उत्तरोत्तर दृढ़ िोता िाता िै। 'मेरे'-पन का सवचार गिरायी िे पैठ िाता िै।

"िब अँिेरी रात में, िडक पर पडे हए लकडी के लट्टे का ज्ञान निीं ंिोता, तो लट्टे के भीतर चोर का सवचार उत्पन्न िोता िै। इिी प्रकार, िब इि बात का ज्ञान निीं ंिोता सक यि िब-कुछ ब्रह्म या आत्मा िै, तब इि िरीर के यथाथा िोने का सवचार उत्पन्न िोता िै। तत्त्वतः िीव और ब्रह्म में कोई भेद निीं ंिै। िब असवद्या की उपासि दूर िो िाती िै, तो िीव उिी प्रकार ब्रह्म िे एकरूप िो िाता िै, ििे प्रकार घट टूटने पर घटाकाि मिाकाि िै। इिी प्रकार, मन और ब्रह्म में कोई भेद निीं ंिै।

ककाटी की कथा

"िे राम! अब मैं तुम्हें एक िस्तक्तिाली राक्षिी की अत्यन्त रुसचकर कथा िुनाता हँ, ििने कई बौस्तद्धक प्रश्न िल करने के सलए उपस्तस्थत सकये। ििे तुम्हारे िारे िंिय दूर िो िायेंगे।

"सिमालय के उत्तरी ढाल पर एक ककाटी नाम की राक्षिी रिती थी। वि स्यािी िैिी काली और चट्टान के िमान कठोर थी। उिके अंग इतने मिबूत थे सक वि कठोर िाल-वृक्ष को भी चीर िकती थी। उिका बहत बडा मुख था और पैने दाँत थे। उिके नेत्रों ंकी पुतसलयाँ आग की तरि चमकती थीं।ं उिकी दो िाँघें सविाल खिूर के वृक्षों ंिैिी थीं।ं उिकी िोर की िँिी मेघ गिान िैिी िोती थी। उिके तीखे नुकीले नाखून कटार िैिे थे।

"इि बडे पेट वाली राक्षिी की कभी िान्त न िोने वाली क्षुिा, सकिी िे भी िान्त निीं ंिो िकती थी। यसद पूरे िम्बूिीप के िमस्त िीव भी उिके सिकार बन िायें, तब भी उिका थोडा-िा िी भोिन िोगा। उिने सिमालय पर िा कर कठोर तपस्या की। स्नान करके वि पृथ्वी पर एक टाँग िे खडी िो गयी और अपनी दृसष्ट को िूया पर केस्तित सकया। ऐिा तप उिने एक िािार वषों तक सकया। उिने अपने सविाल िरीर को गरमी और सरदी की भी भीषणता को ििन करने िेतु प्रसुतुत कर सदया।

"एक िािार वषों के पिात् ब्रह्मा िी उिके िमक्ष प्रकट हए। उिने मानसिक रूप िे उन्ें नमन सकया और अपने मन में िोचने लगी- 'यसद मैं एक लोि िैिी िीव िूसचका (िीसवत िुई) बन िाऊँ, तो सवश्व-भर के िारे िीवों ंके िरीर में प्रवेि कर िकूँगी और सितना आवश्यक िो, उतना भोिन कर िकूँगी। मैं अपने मन की िंतुसष्ट पयान्त िीवों ंका रक्त चूि िकूँगी और उत्तरोत्तर बढ़ती हई क्षुिासि को िान्त करूंगी।'

"िब वि इि प्रकार सवचार कर रिी थी, तो ब्रह्मा िी बोले-'िे ककाटी! मैं तुम्हारी भस्तक्त िे प्रिन्न हँ। तुम िो चािती िो, विी वरदान मैं तुम्हें दूँगा। दुष्ट मनुष्य तक कठोर तपस्या के बल िे मुझिे कुछ भी प्राप्त कर िकते िैं।'

"ककाटी ने किा- 'मैं िीव िूसचका िो िाऊँ-िीसवत िुई।'

"ब्रह्मा िी बोले-'तथासुतु, तुम िीव िूसचका बन िाओगी, तुम्हारे नाम के िाथ 'सव' उपिगा लगा कर तुम 'सवूसचका' किलाओगी। तुम उन लोगों ंको पीसडत करोगी, िो अखाद्य भोिन करेंगे, िो अियमी िैं, िो दुष्ट प्रकृसत िैं और िो अस्वच्छ स्थानों ंमें रिते िैं। तुम आँतों ंमें वायु के रूप में रिोगी और सपत्त-प्रकोप, उदर-वायु, आन्त्र-िूल, िैिा और सतल्ली के बढ़ने का कारण बनोगी।'

"यि कि कर ब्रह्मा िी अन्तिाान िो गये। ककाटी ने िीव िूसचका का रूप िारण कर सलया और िारे िीवों ंके िरीरों ंमें प्रवेि करके उनके रुसिर पर सनवािा करने लगी। वि असत िनुतुष्ट थी। उिकी भूख िान्त हई। सफर वि मन में िोचने लगी- 'मैंने व्यथा में िी अनेक लोगों ंको कष्ट सदया। मेरा हृदय असत कूरूर िै। अब मैं एिा िीवन व्यतीत करना निीं ंचािती हँ। मैं पुनः तपस्या करके ज्ञान प्राप्त करूँगी।'

"उिने सफर सिमालय पर िा कर एक ििार वषा तक तपस्या की। उिके पापों ंकी सनवृसत्त िो गयी और वि पे्रम एवं घृणा िे मुक्त िो गयी। उिके हृदय में ज्ञान का उदय िो गया। उिने ज्ञान का प्रकाि ग्रिण सकया और यथाथा ज्ञान को प्राप्त सकया। उिे अपनी आत्मा में यथाथा िुख की अनुभूसत िो गयी।

"अब ब्रह्मा िी ने स्वयं आ कर उििे किा- 'िे ककाटी! तुम्हें अब बोि प्राप्त िो गया िै। तुम िीवनुमुक्त िो गयी िो। तुम अपने पुराने राक्षिी रूप में रिो। िो आत्मज्ञान रसित िैं और िो कूरूर प्रकृसत तथा दुष्ट िैं, उन्िें खा कर अपना िीवन-सनवािा करो। अज्ञासनयों ंके पाि िा कर उिे ज्ञान िे उन्िें प्रकासित करो, िो तुमने प्राप्त सकया िै; क्योंसक अज्ञासनयों ंको उनके दोषों ंिे मुक्त करना भले एवं मिान् व्यस्तक्तयों ंकी प्रकृसत िै। िो कोई तुम्हारे िारा सदये ज्ञान को ग्रिण न करे, उिे तुम अपना भोिन बना लो।' यि कि कर ब्रह्मा िी अन्तिाान िो गये।

"ककाटी अिैत ब्रह्म पर गम्भीर ध्यान लगा कर दीघाकाल तक सनसवाकल्प िमासि में रिी। िामान्य अवस्था में आने पर वि कुिुिा की पीडा अनुभव करने लगी। िरीर अपनी प्रकृत स्तस्थसत में िब तक रिता िै, तब तक अपने िमा अथाात् भूख आसद को निीं ंछोडता। उिने िोचा सक भोिन के सलए िानवरों ंको मारना पाप िै। अतः वि सिमालय की घासटयों ंमें सिकाररयों ंके गाँव में पहँची। उिने िोचा सक ब्रह्मा िी के सनदेिानुिार अज्ञासनयों ंके िरीरों ंको भक्षण करेगी। रासत्र के अंिकार में उिने एक रािा और उिके मन्त्री को िंगल में घूमते हए देखा। रािा का नाम सवक्रम था। ककाटी यि िोच कर िसषात हई सक अन्ततोगत्वा उिे उपयुक्त भोिन समल िी गया। वि उिकी परीक्षा लेना चािती थी सक वे ज्ञानी िैं या निीं।ं

"वि सचल्लायी- 'तुम कौन िो? तुम िन्त िो या अज्ञानी िन? तुम मेरा अच्छा सिकार बने िो और क्षण-भर में मेरे िाथों ंतुम्हारे भाग्य का सनणाय िोने वाला िै।'

"रािा ने उत्तर सदया- 'िे राक्षिी! असिक डींगं मत मारो। तुम तुरन्त अपनी िस्तक्त सदखाओ। तुम वास्तव में चािती क्या िो? केवल अज्ञानी िन अपने कमोाँ का फल चािते िैं। ज्ञानी लोग िदा सनष्काम भाव िे कमा करते िैं। िम तुम िैिे दुष्ट िनों ंको मच्छरों ंकी भाँसत फूँक िे उडा िकते िैं। िम स्वप्न में भी सकिी व्यस्तक्त को कुछ भी देने की िामथ्या रखते िैं। ज्ञानी िन बुस्तद्ध एवं अभ्यािगत ज्ञान िसित, िान्त सचत्त िे काया करते िैं।'

"ककाटी को िंिय िोने लगा सक वे ज्ञानी िैं। वि मन में इि प्रकार सचन्तन करते लगी-'ये लोग िामान्य प्रकार के निीं ंिैं। एक िुद्ध, ज्ञानवान् मनुष्य वाणी, मुखाकृसत और नेत्रों ंिे परखा िा िकता िै। उिकी अन्तरात्मा उिके मुख और नेत्रों ंकी बाह्य मुिाओं ंमें और उिकी वाणी की असभव्यस्तक्त में झलकती िै। िब्द, मुख और नेत्र ज्ञानी के आन्तररक सवचारों ंको असभव्यक्त करते िैं। ये िमुि में नमक और पानी की भाँसत असभन्न िोते िैं। ज्ञानी का मन, िब्द और सक्रया एकरूप िोते िैं; परन्तु मूखों ंमें दे तीनों ंसभन्न िोते िैं। ये लोग मेरे िारा नष्ट निीं ंसकये िा

किते; क्योंसंक अपने ज्ञान, नैसतक उच्चता के कारण ये असवनिाी िैं। ये अध्यात्म-ज्ञान िे िम्पन्न िैं, सिसके सबना ुस्तिद्ध निींिोकती। आत्मा की अमरता का ज्ञान मृतुयु का भय दूर कर देता िै।'

"तब ककाटी बोली- 'िे सनष्पाप लोगो ! मुझे बताओ, इतने वीर और ििािी तुम कौन िो और किाँ िे आये िो?'

"मन्त्री ने उत्तर सदया- 'ये सकरातों ंके रािा िैं और मैं इनका मन्त्री हँ। िम रासत्र में इि देि में सिरा देते िैं तथा गुणी िनों ंकी रक्षा और दुष्टों ंको दस्तण्डत करते िैं।'

"ककाटी किने लगी- 'एक दुष्प्रकृसत मन्त्री के परामिा िे एक अच्छा रािा भी दुष्ट बन िाता िै; और एक दुष्ट रािा गुणी बन िकता िै यसद वि गुणी मन्त्री का सववेकपूणा परामिा मानता िै। इिी प्रकार एक बुस्तद्धमान् और गुणी रािा एक गुणी मन्त्री बना िकता िै; दुष्ट रािा बुरा मन्त्री बना िकता िै। यसद एक गुणी रािा बुस्तद्धमान् और गुणी मन्त्री के ज्ञानपूणा परामिा को मानता िै, तो वि तीनों ंलोकों ंमें कुछ भी प्राप्त कर िकता िै। ििा रािा, विी प्रिा। सिन्ें अध्यात्म-ज्ञान िै, िमदृसष्ट िै, िास्त्रों ंका ज्ञान िै तथा िो भले और उदार हृदय िैं, वे िी रािा और मन्त्री िोने योग्य िैं। मैं आपिे तत्त्व-ज्ञान पर कुछ प्रश्न करती हँ। यसद आप उत्तर देने में िमथा िों,ं तो आप पुष्पों ंकी भाँसत मेरे मस्तक पर स्थान भी लोगे, अन्यथा मेरे सिकार बनोगे और मुझे अच्छा भोिन समलेगा। मेरे उदर में िो असि िक री िै, तुम उिके सलए ईंधन का काम करोगे।'

"रािा बोला-'िे ककाटी! अब तुम प्रश्न करो, मैं भली प्रकार उनके उत्तर दूँगा।'"

वसिष्ठ िी बोले- "िे कमलनेत्र राम! राक्षिी िारा सकये गये प्रश्नों ंको ध्यानपूवाक िुनो। वे िैं :

'(१) अणु क्या िै िो िमुि की ितेि पर उठने वाले अनेक बुलबुलों ंकी भाँसत उत्पन्न िोने वाली असंख्य िृसष्टयों ंके उत्पसत्त, पालन और सवनाि का कारण िै?
(२) वि क्या िै िो आकाि िै और सफर भी निीं ंिै?
(३) वि क्या िै िो असीम िोते हए भी िीमायुक्त िै?
(४) वि क्या िै िो सिलता हआ िै, सफर भी निीं ंसिलता?
(५) वि क्या िै िो यद्यसप ित्तावान् िै, सफर भी निीं ंिै?
(६) वि क्या िै िो चेतना रूप में असभव्यक्त िै, सफर भी एक पत्थर के िमान िड िै?
(७) वि क्या िै िो आकाि में सचत्र अंसकत करता िै?
(८) वि क्या अणु िै सििमें िमस्त ब्रह्माण्ड इि प्रकार सनसित िै ििै बीि में वृक्ष सनसित िै?
(९) ििमुि में झाग की भाँसत िारी वस्तुुएँ किाँ िे िन्म लेती िैं। (
१०) वे किाँ सवलीन िो िायेंगी?'

"मन्त्री ने उत्तर सदया- 'िे श्यामवणा स्त्री, िुनो।' और, सनम्ांसकत उत्तर सदये :

उत्तर १ : ' 'तुम्हारे िारे प्रश्न परम, असीम ब्रह्म िे िम्बस्तित िैं िो मन तथा पाँच इस्तियों ंकी पहँच िे परे िै और िो आकाि िे भी असिक िूक्ष्म िै। वि अणुओं ंका अणु िै। वि िुद्ध चैतन्य िै। वि असीम ज्ञान िै।

उत्तर २ : "ब्रह्म अथवा परम ित्ता िवाव्यापक और िूक्ष्म िै। वि सनरालम्ब िै। न इिका अन्तर िै न

बिार। अतएव ब्रह्म को िी आकिा किा िा िकता िै। परनुतु यि असत तुच्छ तुलना िै। ब्रह्म की तुलना ब्रह्म िे िी िो िकती िै। परनुतु सफर भी वि आकिा निीं ंिै, क्योंसंक वि िुद्ध चैतन्य अथवा ज्ञान िै। आकिा िड िै। यि माया िे उत्पन्न िै।

उत्तर ३ : " 'ब्रह्म अपनी िी मसिमा िे प्रकािमान िै। उिका कोई आिार निीं ंिै। वि दिे, काल और कारण िे परे िै। वि िवाव्यापक िै। वि असवभाज्य और अनन्त िै। उिका कोई सनविा स्थान निीं ंिै। अतः वि िीसमत निीं ंिै। सफर भी िारे प्रासणयों ंमें वि उनकी अन्तरात्मा अथवा पूणा ित् के रूप में िदैव सवद्यमान िै।

उत्तर ४ : " 'ब्रह्म अचल िै, क्योंसंक उिकी गसतिीलता के सलए बिार स्थान निीं ंिै। वि पररपूणा िै। वि िरीर और अनेक पदाथों िे िम्बि के िारा गसतमान िै।

उत्तर ५ : " 'ब्रह्म पूणा ित् अथवा िुद्ध अस्तस्तत्व िै। केवल ब्रह्म का िी अस्तस्तत्व िै। अतएव वि िै। वि नेत्रों ंिे निीं ंदेखा िा िकता। िांिाररक वृसत्त वाले लोग उिके अस्तस्तत्व को स्वीकार निीं ंकरते। तुम यि कित कर यि निीं ंकि िकते सक 'यि ब्रह्म िै।' इसिलए वि निीं ंिै।

उत्तर ६ : " 'ब्रह्म िुद्ध चैतन्य िै। वि स्वयं प्रकािमान िै। वि ज्योसतयों ंकी ज्योसत िै। ब्रह्म स्वयं िी पत्थर, पृथ्वी, लोिा और अन्य िड पदाथों के रूप में प्रकट िोता िै। उिके दो पक्ष िैं-चैतन्य और पदाथा। पदाथा िड िै। आत्मा िुद्ध चैतन्य िै।

उत्तर ७ : " 'सचदाकिा, िो असतिूक्ष्म िै, स्वयमूभू और सनष्कलंक िै, उिपर िृसष्ट के अनेक सचत्रों ंको सचसत्रत करने वाला विी िै।

उत्तर ८, ९ और १०":'सवसवि िंिार ब्रह्म िे िी प्रकट हए िैं। वे ब्रह्म में स्तस्थत िैं और अन्त में ब्रह्म में िी सवलीन िो िाते िैं, िसि प्रकार बुलबुले िागर में सवलीन िो िाते िैं। सवसवि िंिार ब्रह्म िे असभन्न िैं। वे ब्रह्म के असतररक्त कुछ निीं ंिैं। वे ब्रह्म की िी असभव्यस्तक्त िैं।'

"ककाटी मन्त्री िारा सदये हए बुस्तद्धमत्तापूणा उत्तरों ंिे िनुतुष्ट िो गयी। सफर उिने रािा िे किा सक वि उिके प्रश्नों ंके उत्तर दे। वि उिके ज्ञान की गिराई को भी मापना चािती थी।

"रािा ने किा- 'केवल ब्रह्म का िी अस्तस्तत्व िै। यि सवसवि रूपी ब्रह्माण्ड वसुतुतः िै िी निीं।ं िंकल्प मात्र िी सवश्व का अस्तस्तत्व िै। यसद िंकल्पों ंको पूणातया नष्ट कर सदया िाये, तो िंिार सवलीन िो िायेगा। िंकल्प िी इि ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करते िैं। िांिाररकता के बिन और िमस्त ििगामी दोषों ंिसित िमारे बारम्बार िन्मों ंका कारण अज्ञानता िै।

" "िे ककाटी! तुमने अपने प्रश्नों ंमें केवल ब्रह्म का उल्लेख सकया िै, िो स्वयं इि िृसष्ट के रूप में असभव्यक्त िै और सफर भी अिैत, असवभाज्य, अनन्त, िवाव्यापक और स्वयं-प्रकािी िै। िीवनुमुक्त मिात्मा इि परम ित्ता अथवा ित्य का दिान करते िैं भूत, वतामान और भसवष्य में िसिका अस्तस्तत्व िै। परब्रह्म ित्त्व अथाात् ित्ता वाला िै। ित् (अस्तस्तत्व) और अित् (अनस्तस्तत्व) के मध्य उिका स्थान िै। िृसष्ट के प्रलय के पिात् भी ब्रह्म रिता िै। िंकल्पों ंऔर सवकल्पों ंका नाि करके िुद्ध मन िे ब्रह्म का िाक्षात्कार करना चासिए। यि अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान िै। आत्मज्ञान-सवषयक ग्रन्थों ंके अध्ययन िे ब्रह्म का केवल परोक्ष ज्ञान िो िकता िै। यि परोक्ष ब्रह्मज्ञान िै।'

"रिाा के बुस्तद्धमत्तापूणा उत्तर ि◌ुन कर ककाटी अत्यन्त प्रिन्न हई। वि बोली-'तुम और तुम्हारा मन्त्री यथाथा में ि◌न्त ि◌ो। तुम सनिय ि◌ी इि◌िि◌िार में ि◌म्मान के पात्र ि◌ो। तुम दोनों ◌ंज्ञानूिया रूप ि◌े प्रकािमान ि◌ो।
तुम्हारे ज्ञानमय ि◌ब्दों ◌ंने मुझ पर अमृतिि–ा प्रभाव डाला ि◌ै। मेरा ि◌रीर ि◌ीतल और ि◌ान्त ि◌ो गया ि◌ै। ज्ञानी निीं ◌ं
के ि◌म्पका में आने वाले वास्तव में बडे पुण्यवान् ि◌ैं। ि◌भी को तुम्हारे चरणों ◌ंको मस्तक पर ि◌ारण करना चासिए। ि
रिान् ! मुझे आज्ञा दो-सकि मैं ककाटी! तुम भुस्वाथा मैं आपके र्भोन के सलए मनुष्यों ◌ंको मत मारो। कभी सकिी ि◌ीसवत प्राणी को कष्ट मत पहँचाओ।'

"ककाटी बोली-'अच्छा, मैं वचन देती हँ भगवन्! अब ि◌े मैं कभी सकिी को निीं ◌ंमारूँगी।'

"रिाा ने किा- 'यसद ऐिा ि◌ो ि◌ाये, तो ि◌ानवरों ◌ंका मांिभिक्षण करने वाली तुम प्रासणयों ◌ंि◌े प्राप्त भिोन का त्याग कर अपनी उदर-पूसता कैिे करोगी?'

"ककाटी ने उत्तर सदया- 'मैं सफर पवात की चोटी पर ि◌ा कर दीघा काल तक सनसवाकल्प ि◌मासि में रहँगी। मैं अन्तः प्रवासित अमृत का पान करूँगी और अन्त में देि त्याग कर सवदेि-मुस्तक्त प्राप्त करूँगी। ि◌े रािन्! मैं ि◌ीवन के अन्त तक सकिी ि◌ीसवत प्राणी को निीं ◌ंमारूँगी और न ि◌ी कष्ट पहँचाऊँगी। तुम मेरे ि◌ब्दों ◌ंपर सवश्विा करके सनसिन्त ि◌ो ि◌ाओ।'

"रिाा बोला- 'ि◌े ककाटी! कृपया ि◌मारे ि◌ाथ चल कर ि◌मारे मिल में वाि करो। ि◌म तुम्हें प्रचुरता ि◌े डाकू, लुटेरे और दुष्टों ◌ंके ि◌रीर देंगे ि◌ो भीषण अपराि करते ि◌ैं। इन दुष्ट ि◌नों ◌ंके ि◌ानदार या भव्य भिोन ि◌े अपने उदर की कुष्ठिा-असन ि◌ान्त करके तुम अपना ध्यानाभ्यािा कर ि◌कती ि◌ो।'

"ककाटी ि◌िमत ि◌ो गयी। लक्ष्मी का ि◌ोभनीय रूप ि◌ारण करके रिाा और मन्त्री के ि◌ाथ उनके स्वसणाम रािभवन चली गयी। रिाा ने छि सदन में तीन िि◌ार दुष्टों ◌ंको एकसत्रत करके, ककाटी के पाि उिके भिोन के सलए पहँचा सदया। उिने ककाटी का रूप ि◌ारण सकया और तीन िि◌ार दुष्टों ◌ंको अपने किों ◌ंपर लाद सलया। सफर वि रिाा और उिके मन्त्री ि◌े सवदा ले कर सिमालय पर चली गयी। भिोन ि◌े तृप्त ि◌ो कर, कुछ देर सवश्राम सकया और सफर वि ि◌मासि में प्रवेि कर गयी। वि चार-पाँच या कभी-कभी ि◌ात वषा बाद ि◌मासि ि◌े ि◌ागती थी। सफर वि रिाा के दरबार में ि◌ा कर रिाा और मन्त्री के ि◌ाथ ि◌त्संग करती और सफर ि◌दा की भाँसत दुष्टों ◌ंका सिकार कर वापि सिमालय में अपने स्थान पर लौट आती थी। आि तक रिाा और ककाटी परस्पर समत्र ि◌ैं।"

श्री वसिष्ठ ि◌ी ने उच्चािय राम ि◌े ऐिा किा।

इि और अिल्या की कथा

वसिष्ठ ि◌ी बोले-"ि◌े कमलनेत्र राम! मन आत्मा का ि◌नन करने वाला ि◌ै। मन ि◌ी सवश्व को उत्पन्न करता ि◌ै। मन के कृत्य वास्तसवक कमा ि◌ैं; ि◌रीर के कमा कोई कमा निीं ◌ंमाने ि◌ाते । ब्रह्म ि◌ी मन की अिोयानिक ि◌स्तक्तयों ◌ंको मिझ ि◌कता ि◌ै। यि ि◌रीर मन के ि◌ारा अपनी सक्रयाओं ◌ंकी सिस्तद्ध के सलए तैयार सकया हआ ि◌ाँचा ि◌ै। मन रीर के सवषय में सचन्तन करके स्वयं ि◌रीर ि◌ी बन ि◌ाता ि◌ै। सफर वि इि ि◌रीर में उलझ कर, इिके माध्यम ि◌े सवसभन्न प्रकार के कष्ट और परीसनयाँ िि◌ता ि◌ै। ि◌ो ि◌न्त ि◌वाव्यापी आत्मा ि◌े एकरूप ि◌ो ि◌ाता ि◌ै और िी अपने ि◌रीर

को िरीर रसित िमझ लेता िै, वि िरीर िे िलि िमस्त दोषों ंिे मुक्त िो िाता िै। इि और अिल्या को िारीररक कष्ट की चेतना निीं ंथी।"

राम बोले- "िे पूज्य गुरु! यि इि कौन थे और अिल्या कौन थी? मैं उनके सवषय में िुनने को असत-उत्सुक हँ।"

वसिष्ठ िी ने किा -"प्राचीन काल में मगि (सबिार) में इन्द्रद्युम् नाम का एक रािा राज्य करता था। उिकी अिल्या नाम की पत्नी थी। उि नगर में एक व्यस्तक्त था िो इि नाम िे िाना िाता था। वि दुराचारी लोगों ं के एक िमूि का नेता था। रानी इि इि के प्रसत असत-आिक्त थी और कुछ सदन उिके िाथ रिी। यि बात रािा को बतायी गयी। रािा असत-कुरुद्ध हआ। उिने िीत काल के मध्य में उन दोनों ंको िीतल िल के तालाब में डलवा सदया; सकनु्तु उन्होंने संकंसचत् भी कष्ट की असभव्यस्तक्त निीं ंकी। वे परस्पर िँिते रिे मानो आनन्दपूणा मनोरंिन में रत िों।ं

"सफर उन्हें असि पर रखे हए बडे कडािे में फेंक सदया गया। उन्हें कुछ निीं ंहआ और किने लगे - 'िे रािन्! िम एक-दूिरे का सचन्तन करते हए अपने आत्मानन्द में मि िैं।'

"उन्हें िासथयों ंिे कुचलवाया गया, परनु्तु उन पर कोई अिर निीं ंहआ और वे बोले सक िे रािन्! िम एक-दूिरे का स्मरण करते हए आनस्तन्दत िैं।

"सफर उन्हें िलाकाओं ंऔर कोडों ंिे बुरी तरि पीटा गया। उन्हें िथौडों ंिे पीटा गया। तब भी उन्होंने संकंसचत् पीडा के सचह्न प्रदसिात निीं ंसकये। वे मुस्कराते और िँिते रिे।

"रािा आियाचसकत िो गया। उिने इि और अिल्या िे पूछा- 'क्या बात िै सक कष्ट सदने िाने पर तुम दोनों ंको कष्ट की अनुभूसत निीं ंिोती।'

"उन्होंने सनमम्ांसकत उत्तर सदया- 'िे रािन्! कोई भी कष्ट िमें एक-दूिरे िे अलग निीं ंकर िकता। िमारे सलए यि सवश्व एक-दूिरे के स्वरूप िे पररपूणा िै। िम अस्तखल सवश्व को अपने िे िी पूणा देखते िैं। िम प्रत्येक आकार और स्वरूप में अपने सप्रयतम का िी दिान करते िैं। मैं उिके चेिरे को देखता हँ और वि मेरे को देखती िै। िम आनन्द में मि िैं, अतः िमें िरीर की चेतना निीं ंिै। िमें कष्ट की अनुभूसत निीं ंिोती िै। यसद िरीर के टुकडे-टुकडे भी िो िायें, तो िमें नाम मात्र का भी कष्ट निीं ंिोगा। िब मन सकिी पदाथा के िाथ प्रबलता िे िलि िै, तो उि कष्ट की अनुभूसत निीं ंिोती। िब मन सकिी पदाथा में पूणातया तल्लीन िो िाये, तो िरीर के कष्ट को देखने वाला और अनुभव करने वाला कौन िै? केवल मन िी तो कष्ट की अनुभूसत का यन्त्र िै। यि मन अब उि पदाथा में पूणारूपेण िलि िै, रमा हआ िै सििे यि िवाासिक चािता िै। उि पीडा कैिे स्पिा कर िकती िै? पृथ्वी पर कोई िस्तक्त मन को उिके सप्रय पदाथा िे अलग निीं ंकर िकती। ये िारे िरीर मन िे िी उत्पन्न िोते िैं। मन िी िब-कुछ करता िै। वि िवोच्च िरीर िै। यसद यि िरीर नष्ट िो िाता िै, तो मन तुरन्त अपने मनचािे िरीर को िारण कर लेगा। यसद मन आत्मज्ञान के फलस्वरूप नष्ट िो िाये और उिके पुनिीवन की िम्भावना न रिे, तभी िरीरों ंकी उत्पसत्त िोनी रुकेगी।'

"रािा ने उनके वचनों ंके ित्य को िमझा। दरबार में रािा के पाि बैठे हए मुसन भरत किने लगे-'यि दम्पसत यद्यसप वािना के विीभूत थे, सफर भी इन्होंने ज्ञान के िब्द किे िैं।' रािा ने उन्हें अपने राज्य िे बािर दूिरे राज्य में भेि सदया, सििे वे स्वतन्त्रतापूवाक आनन्द उठा िकें।

"सवसभन्न अंगों ंिसित िरीर मन के असतररक्त कुछ निीं ंिै। यि िृसष्ट भी मन के सिवाय और कुछ निीं ंिै। यसद मन नष्ट िो िाये, तो िरीर और िृसष्ट दोनों ंसवलीन िो िायेंगे।"

इि प्रकार मिात्मा वसिष्ठ िी ने कथा का उपिंिार सकया।

बालक के सलए एक कथा

वसिष्ठ िी बोले- "िे िीिि राम! िन्त का सचत्त ब्रह्म िे सभन्न निीं ंिै। एक अज्ञानी का सचत्त उिकी अज्ञानता और भूल का कारण िै। ब्रह्म में अनन्त िस्तक्तयाँ िैं, िैिे इच्छा–स्तक्त, सक्रया–स्तक्त, ज्ञान–स्तक्त, भूमा- िस्तक्त और अकताा–स्तक्त आसद। परम ब्रह्म पूणा और अक्षुण्ण िै। उिकी सवचलन-रास्तक्त वायु में सवद्यमान िै; कठोरता की िस्तक्त पत्थर में; उष्णता की असि में; िून्यता की आकाि में और िरलता की िल में। उिका
आनन्द पसवत्र आत्माओं ंके हृदयों ंमें अनुभव िोता िै; उिकी वीरता योसगयों ंमें दृश्यमान िै; उिकी रचना–स्तक्त उिकी िृसष्ट के कृत्यों ंमें और उिकी िंिार–स्तक्त मिान् कल्प के अन्त में िृसष्ट के प्रलय में दृश्यमान िोती िै।
िसि प्रकार बीि में वृक्ष सनसित िोता िै, उिी प्रकार ब्रह्म में प्रत्येक वस्तु िै। ब्रह्म एक िै। वि अपनी माया िे अनेक रूपों ंमें असभव्यक्त िै। सवचारणा िे ब्रह्म स्वयं मन के रूप में प्रकट िोता िै, उपासि अथवा असवद्या के िसिमत रूप िे िीवात्मा अथाात् वैयस्तक्तक आत्मा रूप में प्रकट िै, माया की उपासि िे ईश्वर रूप में और सबके ऊपर
िबन्ध और मुस्तक्त अज्ञानी के सवचार िैं। आत्मा के बिन की बात करना ठीक निीं ंिै, क्योंसंक वि िदा
सितना अथवा रचना-स्तक्त िे ब्रह्माण्ड के रूप में प्रकट िोता िै।
मुक्त िै। आत्मा के मोक्ष की खोज व्यथा िै, िो िदेव मुस्तक्त प्राप्त िै। अज्ञानता के दलदल में फँिे िंिाररक मनुष्य के सलए यि िंिार उतना िी ित्य िै सितना सक माँ के िारा अपने छोटे बालक को िुनायी हई बूढ़ी दादी की काल्पसनक किानी।"

राम ने किा- "िे पूज्य गुरुदेव ! कृपया वि किानी मुझे बतलायें। मैं िुनने को उत्सुक हँ।"

तब वसिष्ठ िी ने कथा वणान की- "एक बालक ने एक बार अपनी माँ िे कुछ मनोरंिक किानी िुनाने को किा, तब माँ ने सनम्नांसकत काल्पसनक कथा वणान की :

'एक बार एक िून्य नामक नगर में तीन रािकुमार रिते थे। वे बहत भले, गुणवान् और वीर थे। इन तीन में िे दो कभी उत्पन्न निीं ंहए और तीिरे ने गसभात िोने के सलए कभी गभा में प्रवेि निीं ंसकया। उन्होंने यात्रा के सलए प्रस्थान सकया और आकाि के उद्यान में सवश्राम सकया। उन्होंने कई प्रकार के फल खाये और ऊपर की ओर अपनी यात्रा पुनः प्रारम्भ की। दूर तक चलने के पिात् वे तीन नसदयों ंके िंगम पर पहँचे िो तीव्र गसत िे प्रवासित थीं ंऔर उनमें लिरें उठ रिी थीं।ं इन तीन नसदयों ंमें िे दो में िल निीं ंथा और तीिरी नदी में श्वेत रेत के सिवा कुछ निीं ंथा। उन्होंने अस्तन्तम नदी में स्नान सकया और देर तक क्रीडा की और कुछ िल सपया िो दूि िैिा मिुर था। इि प्रकार उन्होंने अपनी आत्मा को प्रिन्न सकया। इिके बाद उन्होंने अपनी यात्रा आरम्भ की और िूयाास्त तक एक ऐिे नगर में पहँचे सििका अस्तस्तत्व निीं ंथा और विाँ उन्होंने तीन मकान बनाये। एक मकान की नींव निीं ंथी, दूिरे की दीवारें निीं ंथीं ंऔर तीिरे में न छत थी और न दीवारें। तीनों ंरािकुमार इन तीन िुन्दर मकानों,ं िो आकाि में अदृश्य नगर में बने हए थे, में बडे आराम िे रिे। उन्हें अपने मकानों ंमें तीन बतान समले। प्रथम दो उठाने िे चूर-चूर िो गये और तीिरा छूते िी समट्टी िो गया। उन्होंने इन बतानों ंमें बारि में िे आठ कम करके नाप कर चावल रखे और उन्हें सबना िल और असि में औपचासनक सवसि िे पकाया। उन्होंने वि भोिन अखाद्य सबना

मुँ वाले, सबना िीभ वाले और सबना दाँतों ंवाले ब्राह्मणों ंको परीा। तीनों ंरिाकुमारों ंने िष भीन को असत-प्रिन्न ी किर खाया। िन्ध्या-काल में वे लोग आखेट के सलए सनकले और आनन्दपूवाक िमय सबताया।'

"माँ ने िब किानी िमाप्त की, तो बालक ने िो कुछ िुना उि पर असतिसषात हआ। उिने िमझा सक किानी सबलकुल िच्ची थी।

"इिी प्रकार अज्ञानी मनुष्य सिनमें न सववेक िै न आत्म-सवचार, वे इि िंिार को यथाथा िमझते िैं। यि सवश्व-रूपी िवाई सकला, सििे यथाथा माना िाता िै, बालक को िुनायी हई किानी ििै िै िो बालक की माँ की कल्पना िे गढ़ी हई िै। माँ ने िवा में 'अस्तस्तत्विीन' को नाम तथा रूप दे सदया था। इिी प्रकार इि समथ्या िंिार के भ्रामक पदाथों को मन ने नाम और रूप दे सदया िै। यि ब्रह्माण्ड िंकल्पों ंकी प्रकृसत के असतररक्त कुछ निीं ंिै। मन िी इि सवश्व को िन्म देता िै। तुम्हारी कल्पना की उत्पसत्त के सिवाय वास्तव में सकिी का अस्तस्तत्व निीं ंिै। कल्पना िी िारे सवसचत्र मनगढ़न्त रूप बनाती िै। स्वगा, आकाि, पृथ्वी, वायु, नसदयाँ, पवात, वृक्ष आसद िब स्वप्न के दृश्यों ंकी भाँसत तुम्हारे िंकल्प अथवा कल्पना की उपि िैं। कल्पना 'वायवीय सनरस्तस्तत्व' को आकार दे देती िै। मन का सवस्तार िी िंकल्प िै और िंकल्प अपनी भेद िस्तक्त िारा इि सवश्व को िन्म देता िै। अस्तखल िृसष्ट किल्प का ताना-बाना िै। िंकल्प मन की िवााससक सक्रयािील िस्तक्त िै। अतएव, िे राम! िारे िंकल्पों ंको त्याग कर सनसवाकल्प स्तस्थसत को प्राप्त करो, ििाँ कोई सचत्त के रूपान्तर अथवा िंकल्प निीं ंरिते।

"िे राम! समथ्या कल्पना िे उत्पन्न दोषों ंके सिकार केवल अज्ञानी िन िोते िैं। वे इि भ्रामक िंिार को ित्य िमझते िैं। वे अकु्षण्ण (सना रसित) आत्मा में सनावान् गुण आरोसपत करते िैं। उनके सचत्त िदा उनके किल्पों ंअथवा सवचारों ंके िारा चलायमान रिते िैं। वे अपने-आपको अपने िरीरों ंिे एकरूप कर लेते िैं। परनु्त न्ति िन इन तु्रसटपूणा िारणाओं ंऔर दोषों ंिे सबलकुल मुक्त रिते िैं। उनके सलए यि सवश्व मृगमरीसचका के िमान िै। वे िदा अपने को अमर आत्मा िे एकाकार करते िैं।

"िे राम! तुम सवश्व की यथाथाता के सवषय में अपने तु्रसटपूणा सवचार को त्याग दो। िो-कुछ समथ्या और अित्य िै, उिको त्याग दो। ब्रह्म अथवा अमर, िवाव्यापक आत्मा, िो िबका यथाथा आिार और आश्रय िै, विी एकमात्र ित्य िै। ित्य की प्रकृसत का अिेषण करो। तुम कभी बद्ध निीं ंिो। तुम िदा मुक्त िो। िब केवल ब्रह्म िी ित्य िै, तो िीव किाँ रिा ? कौन बद्ध िै? कौन मोक्ष प्राप्त करता िै? बन्धन और मुस्तक्त िब मन की समथ्या कल्पना िै।

"सनावान् िरीर का अमर आत्मा िे िम्बि बतान और उिमें िमाये आकाि के िमान िै। अयथाथा िरीर िमें यथाथा प्रतीत िोता िै और िृसष्ट की कस्तल्पत अवसि िमारी सनिा में दीघा स्वप्न के िमान िै। यि सवश्व एक दीघा स्वप्न िै। यि िंिार सविाल िंगल िै। यि रोग और मृतु्य-रूपी िपों िे आच्छासदत िै। मन इि िंगल का स्वामी िै। यि िमें िब प्रकार के िंकटों ंऔर कसठनाइयों ंमें डाल देता िै। सवश्व का सवचार िी इिके अस्तस्तत्व का कारण िै। िे राम ! सवचार, बुस्तद्ध और सववेक िारा तुम अपने सचत्त िे इि िंिार का नाि करो। अपनी चंचल कामनाओं ंिारा सचत्त तुम्हें कष्ट और मृतु्य में िँिा देता िै।

"मन की लगाम ढीली मत करो। सनदायता िे उिे दबाये रखो। इिका सनरोि और नाि कर दो। तुम िीघ्र िी ित्य को पिचान कर अस्तन्तम मोक्ष प्राप्त करोगे। सफर िारे कष्ट, दुःख और भ्रास्तन्तयों ंका अन्त िो िायेगा।"

एक सिद्ध की कथा

वसिष्ठ िी बोले-"मन का कोई स्वतन्त्र अस्तस्तत्व निीं ंिोता। सिि प्रकार लिरें िागर के िल पर सनभार िैं, उिी प्रकार मन परमात्मा पर सनभार िै। मन िदा पररवसतात िोता रिता िै। यि समत्र को ितुरु और ितुरु को समत्र
मान लेता िै। मिान् को सनम् स्तर पर ले आता िै और सनम् को ऊँचा उठा देता िै। कभी इिमें कोई भावना अथवा दिा िोती िै और कभी अन्य कोई भावना अथवा दिा। यि ित्य को अित्य मान लेता िै और अित्य को ित्य। िुख-दुःख, िषा–िोक, आनन्द और कष्टये िब मन की िी उपि िैं। िुभ-अिुभ कमों का फल मन िी भोगता िै। मन के सबना पदाथा का ज्ञान निीं ंिो िकता। िमस्त भावनाओं ंका कारण मन िी िै। तुम केवल मन के िारा िी
िुनते िो, अनुभव करते, देखते, स्वाद लेते और िंूघते िो। मन िी इि िरीर को गसतमान करता िै। िमय, दूरी,
स्थान, लम्बाई, चौडाई और ऊँचाई [illegible] ब्रह्माण्ड क्रम; काला
[illegible] यि प्रदिान मन के िारा िंचासलत
ि। सिि प्रकार ऋतुओं ंिे वृक्षों ंमें पररवतान आता िै, उिी प्रकार मन िे मानव-प्रकृसत में पररवतान आता िै। सवश्व में सितने मनुष्य िैं, उतने िी मन िैं। एक मन के दो व्यस्तक्त समलना कसठन िै।

"मन पदाथों में क्रीडा करता िै। यि भ्रम पैदा करता िै। मन के खेल िे िमीपता दूरी प्रतीत िोती िै और दूरी िमीपता लगती िै। कल्प एक क्षण िैिा लगता िै और क्षण कल्प िैिा। इि सवचार को उदािरण िारा स्पष्ट करने के सलए मैं तुम्हें एक कथा िुनाता हूँ। िे राम! पूरे ध्यान िे िुनो।

"िररिचन्द्र की परम्परा का एक रािा लवण उत्तरपाण्डव नामक देि में राज्य करता था। वि एक मसिमािाली और गुणी रािा था। एक बार वि गद्दी पर बैठा था। उिके िब मन्त्री और असिकारी गण सवद्यमान थे। इि िमय एक सिद्ध अथाात् िादूगर विाँ आया। रािा को प्रणाम करके वि - िे मेरे स्वामी! मेरे अिायिनक चमत्कारों ंको देखने की कृपा करें।'

"सिद्ध ने अपना मोर पंखों ंका गुच्छा घुमाया। रािा को सनम्नांसकत अनुभव हए :

"सिंिु के रािा के एक दूत ने इि के घोडे िैिे घोडे िसित दरबार में प्रवेि सकया और बोला- 'िे मिारािा! िमारे रािा ने आपके सलए यि घोडा भेंट में भेिा िै।'

"सिद्ध ने रािा िे अनुरोि सकया सक वि उि घोडे पर बैठे और आनन्दपूवाक उिकी िवारी करे। रािा ने घोडे पर दृसष्ट डाली और दो घण्टे तक मूछाा में रिा। तत्पिात्, उिका कठोर िरीर ढीला िोता गया हआ प्रतीत हआ। थोडी देर बाद वि भूसम पर सगर गया। दरबाररयों ंने िरीर को उठाया। सफर रािा अपनी िामान्य स्तस्थसत में आ गया।

"मन्त्री गण और दरबारी लोग घबरा गये और वे रािा िे पूछने लगे- 'मिारािा! आपको क्या हआ िै?'

"रािा बोला- 'सिद्ध ने अपना मोर पंख का गुच्छा घुमाया। मुझे अपने िामने घोडा सदखायी सदया। मैं उि पर चढ़ गया और तेि िूप में रेसगस्तान में चला गया। मेरा कण्ठ िूख गया। मैं बहत थका हआ था। सफर मैं एक िुन्दर िंगल में पहुँचा। मैं िब घोडे पर चढ़ा हआ था, तो एक लता मेरी गदान में सलपट गयी और घोडा भाग गया। रात-भर गले में लता सलपटे हआ मैं िवा में लटका रिा। मैं अत्यसिक िदी िे सठठुर रिा था।

" 'सदन सनकल आया और िूया सदखायी सदया। तब मैंने गदान में सलपटी हई लता को काट डाला। सफर मैंने एक अछूत कन्या को िाथ में कुछ भोिन और िल ले कर िाते हए देखा। मैं अत्यन्त भूखा था और ििउि खाने के सलए कुछ माँगा। उिने मुझे कुछ निीं ंसदया। मैं देर तक उिका पीछा करता रिा। तब उिने घूम कर मेरी ओर देखा और बोली- "मैं न्मि िे चाण्डाल हँ। यसद तुम मेरे स्थान पर, मेरे माता-सपता के िमक्ष मुझिे सववाि करके मेरे िाथ विाँ रिने का वायदा करो, तो िो-कुछ मेरे िाथ में िै, इिी क्षण तुम्हें दे दूँगी।" मैंने ििउि सववाि करना स्वीकार कर सलया। तब उिने मुझे आिा भोिन दे सदया। मैंने भोिन कर िामुन फल का रि पी सलया।

'तब वि मुझे अपने सपता के पाि ले गयी और मुझिे सववाि करने की अनुमसत माँगी। उिने स्वीकार कर सलया। वि मुझे अपने सनवाि स्थान पर ले गयी। उिके सपता ने मांि-प्रास्तप्त के सलए बन्दर, कौवे, िुअरों ंको मार कर, उनकी निों ंकी डोररयों ंपर िुखाया। एक छोटा मण्डप बनाया गया। मैं एक बडे केले के पत्ते पर बैठ गया। मेरी टेढ़ी आँख वाली ििा ने मुझे रुसिराक्त गोलकों ंिे देख कर किा सक क्या यि िमारा िामाता िोगा ?'

'सववािोत्सव खूब िूमिाम िे प्रारम्भ हआ। मेरे श्विुर ने मुझे वस्त्र और अन्य वसुतुएँ भेंट कीं।ं ताडी और मांि का सवतरण सकया गया। मांि खाने वाले चाण्डाल ढोल बिाने लगे। कन्या का पासण-ग्रिण िंस्कार िो गया। मेरा नया नाम 'पुष्ट' रखा गया। िात सदन तक सवदािोत्सव की िूम रिी। इि सववाि िे, पिले एक कन्या उत्पन्न हई। तीन िाल में सफर एक काला लडका उत्पन्न हआ। सफर एक कन्या हई। मैं एक बृित् पररवार वाला बूढ़ा चाण्डाल िो गया और दीघा काल तक रिा। िन्तान दुःख का कारण िोती िैं। मनुष्य की वािना के फलस्वरूप िोने वाली सवपसत्तयाँ िन्तान का रूप िारण करती िैं। पररवार की सचन्ताओं ंएवं परेशासनयों ंके कारण मेरा िरीर वृद्ध और ििार िो गया। मुझे उि बीड िंगल में गमी िदी ििनी पडती थी। मैं पुराने व फटे सचथडे वस्त्र पिनता था। अपने सिर पर लकसडयों ंका गट्ठर ले कर िाता था। मुझे असत िीत िवा ििन करनी पडती थी। गिल में कन्द-मूल पर सनवााि करना पडता था। मैंने अपने िीवन के िाठ वषा इि प्रकार व्यतीत सकये मानो वे दीघाावसि के अनेक कल्प िों।ं सफर एक भयंकर अकाल पडा। बहत िे लोग भूख िे मर गये। मेरे कुछ िम्बस्तियों ं ने वि स्थान छोड सदया।

'मेरी पत्नी और मैं वि देि छोड कर िूप में चल पडे। मैंने दो बच्चों ंको किों ंपर सबठाया और एक को सिर पर सबठाया। बहत दूर चलने के पिात् मैं एक िंगल के सकनारे पहँचा। िम िबने एक नाररयल के पेड के नीचे थोडा सवश्राम सकया। िूप में लम्बी यात्रा करने के कारण मेरी स्त्री का सनिन िो गया। मेरा छोटा पुत्र, प्राचेक आँखों ंमें आँिू भर कर बोला- "सपता िी! मैं भूखा हँ, मुझे तुरन्त कुछ मांि और पेय दो, अन्यथा मैं मर िाऊँगा।" वि बारम्बार मुझे अशुरुपूणा नेत्रों ंिे किता रिा सक वि कुषिा िे मर रिा था। मैं सपतृ-वात्सल्य िे िसवत िो गया। मेरे हृदय को अत्यसिक पीडा पहँची थी। वि कष्ट ििने में अिमथा िो कर, मैंने असि में कूद कर अपने िीवन का अन्त करने का सनिय कर सलया। मैंने कुछ लकडी इकट्ठी करके ढेर लगा सलया और उिमें आग लगा दी। ज्यों–िी मैं असि में कूदने को खडा हआ, तो अपने सिंिािन िे सगर गया। िंगीत-वाद्यों ंका िब्द िुना और आप लोगों ंको मुझे इि घोष के िाथ उठाते हए पाया-'िय िो! िय िो!' अब मैं अपने को रािा लवण के रूप में देख रिा हँ, चाण्डाल निीं।ं अब मेरी िमझ में आया सक उि सिद्ध ने मुझे इतने काल तक काल्पसनक सवपसत्तयों ंमें डाला था।'

"मस्तन्त्रयों ंने सिद्ध का पूवा-सववरण पूछा। इिी बीच में यि सवसदत हआ सक िम्बरीक नामक वि सिद्ध अदृश्य िो चुका था।"

वसिष्ठ िी ने तब िमझाया- "िे राम ! यि सिद्ध सदव्य माया के असतररक्त कुछ निीं ंिै। इि कथा िे यि भली प्रकार स्पष्ट िोता िै सक यि ब्रह्माण्ड मन के सिवाय कुछ निीं ंिै। परब्रह्म िी मन और ििंार के रूप में प्रकट िोता िै। िो कुछ तुम देखते िो, वि सचत्त की िी असभव्यस्तक्त िै। िमय केवल मन का एक ढंग िै। स्वप्न में तुम पाँच समनट में एक िताब्दी की घटनाओं ंका अनुभव कर लेते िो। सचत्त को एकाग्र करने पर एक घण्टा पाँच समनट

के िमान प्रतीत िोता िै। यसद सचि एकाग्र निीं ंिो, तो दि समनट तीन घण्टों ंके िमान लगते िैं। इि िंिार में भिी को इि प्रकार का अनुभव िै। दो घण्टों ंके भीतर रािा लवण को िाठ वषा का अनुभव िो गया।

"यि िृसष्ट मन की उत्पसत्त िै। मन अथवा माया िबिे बडा मायावी अथवा िादूगर िै। मन अथवा माया इि किानी का सिद्ध िै। मन माया िै। मन िी माया का अस्त्र िै। रािा के अनुभव मनुष्यों ंकी दुःखद अवस्था के प्रतीक िैं, िो कामनाओं ंऔर इच्छाओं ंके दाि िैं और िाथ िी िंिार की स्तस्थसत के भी पररचायक िैं। यि समथ्या िंिार िविास्तक्तमान् परमात्मा की अनन्त िस्तक्त का प्रदिान िै। इि सवश्व में िारे प्राणी भ्रसमत हए सवचरते िैं। वे अयथाथा की यथाथाता में सवश्वाि करते िैं। िो ित्य िै, वि उनके सलए अित्य िै। िैिे प्रकार वृक्ष अपनी िाखाओं ंएवं डासलयों ंिारा फैलता िाता िै, उिी प्रकार मन भी अपनी कल्पना के सवसभन्न आसवष्कारों ंिे सवसूतृत िो िाता िै।

"यसद तुम मन के िंकल्पों ंअथवा कल्पनाओं ंको नष्ट कर दो, यसद मन को पूणारूपेण अनुिासित कर लो, यसद सववेक सवचार, वैराग्य और आत्मा पर सनयसमत ध्यान िारा मन पर पूणा सनयन्त्रण कर लो, तो तुम पर माया का प्रभाव निीं ंिोगा। तुम अमरता प्राप्त करके अनन्तता के िाश्वत िुख का भोग करोगे।"

४.स्तस्थसत-प्रकरण

स्तस्थसत

वसिष्ठ िी राम िे बोले- "िे वीर राम! मन िी िब-कुछ िै। िारे कायों का कताा यि मन िै। बाह्य िंिार का सनषेि और सवचारों ंका सनरोि मन-रूपी राक्षि पर सनयन्त्रण करने में िायक िो िकते िैं। सवश्व इिी प्रकार

मन में रिता िै िंै िूया में उिकी सकरणें। मन सवश्वों ंका आिान िै। मन विी िै िो सवश्व मन िे एकरूप िै। मन और िंिर घसनष्ठता और अपृथक्करणीयता िे परस्पर िम्बस्तित िैं। मन का खेल िी सवश्व की उत्पसत्त करता िै। चेतना के रूप में िी सवश्व प्रकासित िोता िै।

"सनमाल सचदाकाि पर सबना सचत्रकार, सचत्र-फलक, तूसलका अथवा सकिी अन्य िामग्री के िृसष्ट-रूपी सचत्र सचसत्रत िै। सचत्र स्वतः िी प्रकट िोता िै। वि िदा स्वयं को देखता रिता िै। िागृत अवस्था में सवश्व एक दीघा स्वप्न के िमान िै। िवाव्यापक, असवभाज्य, िमरूप, पूणा, स्वयं-प्रकािी ब्रह्म िो मौन िाक्षी िै, उिमें सवश्व की छाया दपाण में प्रसतसबम्ब के िमान िै। यि सवश्व ब्रह्म के िारा िी प्रकासित िै। ब्रह्म इि ब्रह्माण्ड का आिार िै। कारण और पररणाम का िम्बि निीं ंिै।

"िाश्वत, िुद्ध, िवाव्यापी और पूणा ब्रह्म का ध्यान करो। िनैः–िनैः मन की िारी चंचलता िमाप्त िो ियेगी। तुम परमात्मा के िाथ एकरूप िो िाओगे।

िुक्र की कथा

"सिि प्रकार एक पत्थर पर कई सचत्र उत्कीणा सकये िा िकते िैं, उिी प्रकार एक ब्रह्म में बह-रूपी िंिार प्रकट िै। ब्रह्म अिैत िै। सवश्व समथ्या िै। वि अपने अस्तस्तत्व के सलए ब्रह्म पर सनभार िै। िो समथ्या और परावलम्बी िै, उि अस्तस्तत्ववान् निीं ंकिा िा िकता। ब्रह्माण्ड किलाने योग्य वसुतुतः कुछ निीं ंिै, क्योंसक सितीय का सनमााण करने के सलए ब्रह्म िे िम्बस्तित कोई कारण या पररणाम निीं ंिै। केवल ब्रह्म िी िै। ब्रह्माण्ड ब्रह्म में छाया के असतररक्त कुछ निीं ंिै। िे राम ! िुक्राचाया की कथा ध्यानपूवाक िुनो। तब मेरे कथन का ित्य तुम्हें स्पष्ट
रूप िे िमझ आ िायेगा।
"मन्दार पवात पर एक िमतल भूसम िै, िो अनेक िुन्दर पुष्पों ंऔर वृक्षों ंिे पूणा िै। प्राचीन काल में यिाँ भृगु मुसन ने कठोर तपस्या की थी। उनका पुत्र िुक्र प्रसतभािाली था। वि असतिुन्दर भी था। वि अपने सपता िे कभी अलग निीं ंिोता था। वि सत्रिंकु की भाँसत एक मध्यम स्तस्थसत में था। वि युवावस्था की क्रीडाएँ करता हआ मन्दार के कुंिों िंमें स्वतन्त्रतापूवाक रमण करता था। कभी लडके की तरि खेलता था। कभी अपने सपता की भाँसत ध्यान में बैठ िाता था। उिके सपता िदैव सनसवाकल्प िमासि में रिते थे।

"एक सदन िब वि इि प्रकार अपने सपता के पाि बैठा था, िुक्र ने आकाि की ओर दृसष्ट डाली, तो एक सदव्य स्त्री को अपने वायवीय सवमान में आकाि पार करते हए देखा। वि उि पर मुग्ध िो गया। उिने अपने मन की वृसत्त को सनयस्तन्त्रत सकया; सकनुतु मन अपने सप्रय पदाथा के ध्यान में मि रिा। वि अपने नेत्र बन्द सकये उि स्त्री के सवषय में िोचता रिा और एक कस्तल्पत िाम्राज्य की दुसनया में डूब गया। उिने िमझा सक अप्सरा इिलोक के सलए आकाि में उड रिी थी। उिने अपने पासथाव िरीर को त्याग कर स्वसगाक देवताओं ंके आनन्दमय लोकों ंतक उिका अनुिरण सकया।

"िुक्र ने अपने िामने इि को अपने स्थान इिलोक में बैठे हए देखा। उिने इि को प्रणाम सकया और उिने िम्मानपूवाक ित्कार करके उि अपने पाि सबठाया। िुक्र ने उिी स्त्री को देखा, िो वायु-मागा िे आयी थी। वि भी उि िे प्रेम करती थी। सफर वे आनन्दपूवाक रिने लगे। तब िुक्र इिलोक िे नीचे आया। उतरते हए उिका िीव चिमा की िीतल सकरणों ंमें समल कर िीत बफा िो गया। यि बफा चावल के खेतों ंपर सगरा और चावलों ंमें पररवसतात िो गया। चावल पकाया गया और दिाणा देि के एक ब्राह्मण ने उि खाया। वि वीया में रूपान्तररत िो

गया। िुक्र िो ब्राह्मण के िुक्राणु-रूप में था, उिका पुत्र बन कर आया। तब वि तपस्तस्वयों ंके िंिगा में आया और उिने स्वयं भी मेरु पवात क्ेषेत्र के िंगल में दीघा काल तक तपस्या की। उिका एक पुत्र भी था। पुत्र में वि असत-आिक्त था। िांिाररक पदाथों के प्रसत आिस्तक्त के कारण उिका पतन हआ। विानाओं ंके कारण उिे अनेक न्मि लेने पडे। अन्त में वि गंगा िी के सकनारे एक मुसन का पुत्र हआ।

"इि बीच में िुक्र का िरीर िो उिके सपता भृगु के पाि पडा था, वि िूया की ऊष्मा और िवा के कारण अस्तस्थ-पंरि मात्र रि गया था। पाि में भृगु के रिने के कारण सिंस्र पिु और पसक्षयों ंने उिके िरीर को निीं ं खाया।

“िस्रों ंवषा पात्, मिान् भृगु अपनी सनसवाकल्प िमासि िे िागे। उन्िोंने नेत्र खोले, तो अपने िामने अपने पुत्र के िरीर को अस्तस्थ-पंरि के रूप में पडा हआ देखा। वि असत-क्क्कुरुद्ध िो कर यम को श्राप देने लगे।

"यम भृगु को वास्तसवक स्तस्थसत बताने िेतु उनके िमक्ष उपस्तस्थत हए और किने लगे-'िे मुसन! मैं केवल ईश्वर के सनयमों ंकी अनुपालना कर रिा हूँ। मैं केवल ईश्वरीय इच्छा पूरी करता हूँ। कृपया क्रोि िे अपनी तपस्या नष्ट मत करो। ईश्वरीय सनयम अटल एवं कठोर िै। ब्रह्म में न कमा िै, न भोग। वि िदा िुद्ध, कमा रसित और पररवतान रसित िै। परम तत्त्व के दृसष्टकोण िे न तो कोई कताा िै, न भोक्ता। केवल इि अज्ञानपूणा िंिार में कताा, भोक्ता और कमा िैं। िभी प्राणी िंकल्पों ंिे उत्पन्न िोते िैं। वे अपने कमाानुिार फल भोगते िैं। सनिय िी आपका मुझे भला-बुरा किना न्यायिंगत निीं ंिै। आपके पुत्र ने सनिि्िकल्प िे यि स्तस्थसत उत्पन्न की िै। सचत्त के कमा िी यथाथा कमा िैं।

'बुराई की ओर प्रवृत्त यि अज्ञानी मन िरीर को उिी प्रकार नष्ट कर देता िै िैिे छोटे बच्चे खेल में अपनी समट्टी की गुसडयाएँ तोड डालते िैं। सचत्त अपनी विानाओं ंके िारा पृथ्वी िे बँिता िै और िंिार के आकषाणों ंएवं आिाओं ंिे रसित िो कर मुक्त िो िाता िै। िो इि प्रकार िोचता िै- 'यि मेरी दिे िै, यि मेरा सिर िै और ये मेरे िरीर के िदस्य (अंग) िैं', वि मन किलाता िै। िंिार में अपने िीवन के िारा वि िीव किलाता िै। अपने िंकल्प के िारा यि बुस्तद्ध किलाता िै। िब क्रोि के सचह्नों ंिसित 'मैं'-'मेरा' के सवचार उत्पन्न िोते िैं, तो अिंकार किलाता िै। विी मन अपने सवसभन्न सक्रयाकलापों ंके अनुिार इन सवसभन्न नामों ंिे असभसित िोता िै। यि मन िी अलग-अलग भेदों ंके सवचार िारा ब्रह्माण्ड िै। िब मन ित्य का प्रकाि प्राप्त करता िै, तो यि प्रकािवान् बुस्तद्ध किलाता िै। िब आप और आपका पुत्र ध्यानस्थ थे, तब आपका पुत्र प्रबल कामना के विीभूत हआ, इि िरीर को त्याग कर सदव्य लोक को चला गया, िैिे कोई पक्षी अपना घोंिला छोड कर खुली िवा में चला िाता िै। वि विाँ एक सवश्ववािु नामक सदव्य स्त्री के िाथ रिा। वि देवलोक िे चला गया। विाँ के वातावरण ने सनकल कर सफर दिााणा प्रदेि में एक ब्राह्मण के पुत्र रूप में िन्म सलया। उिने पूणा िीवन-चक्र पार सकया-कोिल राज्य के रािा के रूप में; एक सविाल िंगल में सिकारी; गंगा के तट पर िंि; िूयावंिी रािा; पुण्डरा का रािा और सफर िाल्व दिे में िूयावंि का गुरु हआ। एक कल्प की अवसि तक वि सवद्यािरों ंका रािा हआ; एक मुसन का कुिाग्र बुस्तद्ध वाला पुत्र हआ; िौरवा दिे में िािक; एक अन्य दिे में वि िैव मत के अनुयासययों ंका गुरु हआ; एक अन्य दिे में बाँि का िमूि; िंगल में एक सिरण; एक िंगल में अिगर; सवन्ध्य पिासडयों ंमें और कैकटव में सिकारी और सत्रगता में एक गदाभ।"

'इि प्रकार सवसभन्न गभों में िोते हए उिने अपनी विाना के प्रभाव िे उच्च और नीच अनेक िन्म िारण सकये। अन्त में यि गंगा तट पर एक ब्राह्मण ऋसष के पुत्र-रूप में विुदेव नाम िे पैदा हआ। इि िन्म में उिने अपनी इस्तियों ंपर सनयन्त्रण प्राप्त सकया। गत आठ िौ वषों िे िटाएँ बाँिे हए वि तप में लीन िै। यसद आप अपने पुत्र के समथ्या िन्मों ंकी शंखला िानना चािते िैं, तो अपनी सदव्य दृसष्ट िे दिेख कर िकते िो।'

"मुसन भृगु ने क्षण-भर में अपनी अन्तदृासष्ट ि अपने सनमाल सचत्त के पारदिीं दपाण में प्रसतसबस्तम्बत अपने पुत्र के ारि िन्मों ंकी घटनाएँ देख लीं।ं पारदिी दपाण ासिने स्वयं-प्रकािी आत्मा ि प्रकाि प्राप्त सकया था।
उन्ोंनें यम ि किा- 'कृपया मेरे पूवा-दुव्याविार को क्षमा करें। आप िवाज्ञ िो। आप िी िवाश्रेष्ठ सविाता िो। तीनों ं
कालों ंके ज्ञाता आप िी िो। आप भूत और भसवष्य के स्वामी िो।'
"तब यम भृगु को गंगा-तट पर ले गये, ािाँ विुदेव तपाििना कर रिा था। विुदेव िमासि में था। यम ने चािा सक विुदेव िमासि ि सनकल उन्ें देखे । विुदेव ने नेत्र खोले और अपने पूवाििन्म के सपता भृगु के िाथ यम को खडे हए देखा। विुदेव ने अपने स्थान ि उठ कर उनका स्वागत सकया। वे िब एक पत्थर की पट्टी पर बैठ गये।

"विुदेव बोला- 'अि मैं आपकी उपस्तस्थसत ि िन्य हआ। मैं पसवत्र िो गया और अत्यसिक आनस्तन्दत हँ।'

"भृगु ने अपने पुत्र को आिीष दी - 'ईश्वर करे, तुम आत्मज्ञान प्राप्त करो! तुम अज्ञान ि मुक्त िोओ! तुम दिव ब्रह्मानन्द का अनुभव करो!' "विुदेव अथाात् िुक्र ने नेत्र मूँदे और सदव्य दृसष्ट ि अपने िमस्त पूवाििन्मों ंकी घटनाएँ देख लीं।ं वि भावी िन्मों ंि मुक्त िो गया।

"अपने पूवाििन्मों ंका स्मरण करके विुदेव आियाचसकत िो गया। वि बोला- 'परम ित्ता का सविान िन्य िै, िो आसद और अन्त ि रसित िै और ासिकी ित्ति ि यि सवश्व िंचासलत िै। मैंने मिान् कसठनाइयाँ ािन की िैं। मैं सचरकाल तक िंिार-चक्र में फँिा रिा और मैंने देखने योग्य िब-कुछ देख सलया िै। अब मैंने आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया िै। मैं पुनिान्म के बिन ि मुक्त िो गया हँ। ि सपता! उठो, मन्दार पवात पर पडे हए िरीर को देखें िो एक मुरझाये हए पिौ की भाँसत िूख गया िै।'

"वे तीनों ंमन्दार पिासडयों ंकी ओर उि िरीर को देखने के सलए चल सदये। विुदेव ने भृगु के पुत्र-रूप में अपने पूवाििरीर को देख कर किा- 'ि सपता! यि सनसेति दिे िै ासिका आपने सवसभन्न प्रकार के पौसष्टक भोिन ि पोषण सकया था। यि मेरा विी िरीर िै िो प्रेमपूवाक चन्दन ि असभसषत सकया गया था। मनुष्य िाश्वत िुख तभी भोग िकता िै, िब सक मन का सवनाि िो िाये। केवल आस्तत्मक सवचार िी मनुष्य को आत्मा की उपलस्ति करा िकता िै। ब्रह्मज्ञान अथवा आत्मा का ज्ञान प्राप्त िोने पर मनुष्य आनन्द के िागर में डूब िाता िै और इि भयंकर िंिार के भीषण कष्टों ंि मुक्त िो िाता िै।'

"यम बोले-'ि िुक्र! अब तुम विुदेव के िरीर को त्याग कर अपने मृत िरीर (पूवाििरीर) में प्रवेि करो ािै रािा अपने मिल में प्रवेि करता िै। अिुरों ंके गुरु बन कर उन्ें िमुसचत उपदेि दो।' यम उनिे सवदा ले कर अन्तिाान िो गये।

"िुक्र ने विुदेव के िरीर को त्याग कर यम भगवान् के सनदेिों ंके अनुिार अपने पूवाििरीर में प्रवेि कर सलया। ासि प्रकार नसदयों ंकी िुष्क िैि वषाा ऋतु में िल-प्रवाि ि पररपूणा िो िाती िै, उिी प्रकार िरीर की िमस्त सिराएँ, िमसनयाँ, िभी कोसिकाएँ और ररक्त स्थान सफर ि रुसिर ि भर गये। िरीर के रुसिर ि पूणा िो िाने के कारण िब अंग स्तखल गये ािै झील में कमलों ंके िमूि और िरे-भरे पिौ में नयी कोपलें और कसलयाँ स्तखल उठती िैं। िारी दिे में नासडयों ंने प्राणों ंको स्वतन्त्रतापूवाक घूमने सदया। वृद्ध मिात्मा भृगु ने अपने पुत्र के मृत िरीर को पुनः िीसवत देख कर, िुस्तद्धकरण मन्त्र पढ़ कर, अपने कमण्डल का पसवत्र िल सछडक कर उि पसवत्र सकया। तब िुक्र ने उठ कर अपने सपता को प्रणाम सकया। तब सपता ने िुक्र का आसलंगन सकया और उि पर प्रेमाश्रुओं ंकी वषाा की। दोनों ंपुनः समलन पर आनस्तन्दत हए। दिे व काल के पररवतानों ंके मध्य अपनी

मिसचत्तता एवं स्वभाव की स्तस्थरता को िुरसक्षत रखते हए सपता और पुत्र ने िीवनुमुक्त अवस्था में िमय व्यतीत सकया। कालान्तर में िुक्र ने अिुरों ंका गुरुत्व प्राप्त सकया और भृगु मानवों ंके पूज्य पैतृक पद पर रिे।"

इि प्रकार मिात्मा वसिष्ठ िी ने कथा िमाप्त की।

वसिष्ठ िी आगे बोले-"वेदान्त िम्बिी ग्रन्थों ंका अध्ययन करने वाले सवद्याथी को अपने स्वाध्याय के फल की तुरन्त चिाना निीं ंकरनी चासिए। उिे ब्रह्म अथवा अमर आत्मा पर सनयसमत रूप िे ध्यानाभ्यिा करना चासिए। िनैः-िनैः सचत्त-िुस्तद्ध िोगी तथा सचत्त में दृढ़ता और स्तस्थरता आ िायेगी। अन्ततोगत्वा मन आत्म-िाक्षात्कार प्राप्त कर लेगा।

"िो अपने स्त्री, पुत्रों,ं िन-िम्पसत्त और अन्य िांिाररक िम्पसत्त में आिस्तक्त रिता िै, वि एक दुःखी मनुष्य िै। वि आिाओं ंके िैकडों ंबिनों ंमें बँिा रिता िै। उिे सचत्त की िास्तन्त निीं ंरिती। सवषयािक्त िीवन-यापन िे उिे कोई लाभ निीं ंिोता। वि ित्य को अित्य िमझता िै और इि प्रकार वि अपना मागा तथा िीवन खो देता िै। िन िारे दुःखों ंकी िड िै। िनोपािान करना कष्टदायक िै। उिकी रक्षा करना और भी कष्टदायक िै। िन खोना और असिक कष्टदायक िै। परनु्तु उन मनुष्यों ंपर कष्ट का कोई प्रभाव निीं ंिोगा िो वैराग्य और सववेक िे िम्पन्न िैं, िो िंिार को सतनके के िमान मान कर उिके िारे िम्बिों ंको इि प्रकार त्याग देते िैं िसि प्रकार िपा अपनी कैचुली को।

"िो मनुष्य िुद्ध बुस्तद्ध और स्पष्ट बोि-िस्तक्त िे िम्पन्न िैं, िो स्वभावतः िमाग्रन्थों ंके अध्ययन िेतु प्रवृत्त िैं और िो कुछ दोषपूणा एवं अित्य िै, उिका त्याग कर मोक्ष के सपपािु िैं, वे िी इि भीषण िंिार को पार कर िकते िैं। िो ित्यवादी और िुद्ध िैं, िो वेदों ंिारा सनसदाष्ट मागा का अनुिरण करते िैं और िो िन्तों ंकी िंगसत में रिते िैं, वे सवनाि िे बच िाते िैं। वे पूणाता और अमरता प्राप्त करते िैं। सिन्होंने आत्मज्ञान िारा प्रकाि प्राप्त कर सलया िै, अष्ट सदग्पालों ंिारा उनकी रक्षा िोती िै। िो ज्ञान के सपपािु और ित्यािेषी िैं, िो िुद्ध वैसश्वक प्रेम िे म्पिन्न िैं और िो सनरन्तर आस्तत्मक सवचार में िंलि िैं, वे िी िच्चे मानव किलाते िैं। अन्य िभी पिु मात्र िैं।

"सकिी को भी गलत मागा पर निीं ंचलना चासिए। सकिी को अकरणीय कमा निीं ंकरने चासिए। अमृत-पान के बाद भी राह को अनेक कष्टों ंका िामना करना पडा, क्योंसंक वि गलत मागा पर चला और उिने गलत कमा सकया था।

"बुस्तद्धमान् लोग िो िमाग्रन्थों ंके ज्ञान और िद्गुणों ंिे िम्पन्न िैं, िो िीिी मागा पर चलते िैं, िो आचार-सवचार के सनयमों ंका पालन करते िैं और िो इस्तिय-िुखों ंकी कामना निीं ंकरते, वे आिायिनक काया कर िकते िैं। वे कोई भी काया कर िकते िैं, चािे सकतना कसठन क्यों ंन िो। वे कुछ भी प्राप्त कर िकते िैं। उन्ें िरलता िे प्रसिस्तद्ध, दीघाायु और आत्मज्ञान प्राप्त िो िकते िैं। िो चीिें अन्य िन प्राप्त निीं ंकर िकते, वे उन्ें िरलता िे प्राप्त िो िकती िैं। िंकट और कसठनाइयाँ उनिे दूर भागती िैं। वे अिािारण व्यस्तक्त िैं। उनमें अपने भाग्य को वि में करने की, िमस्त बुराई को भलाई में पररणत करने की और अपनी िमृस्तद्ध को सचरस्थायी बनाने की िस्तक्त िोती िै। अपने िमस्त प्रयािों ंमें वे अत्यसिक िफल िोते िैं।"

"िे राम! िारे दुःख, भय और सचन्ताओं ंको त्याग कर िमाग्रन्थों ंिारा सनसदाष्ट मागा पर चलो। आत्मा के ज्ञान के सबना भौसतक पदाथों िे क्या लाभ िै? भौसतक िम्पसत्त को सतनके के िमान िमझो। िन-िम्पसत्त केवल सवपसत्तयाँ लाती िै। सनष्कामता परम िास्तन्त और िाश्वत िुख की प्रास्तप्त की ओर अग्रिर करती िै।

भीम, भिा और दृढ़ की कथा

“िन्तों ंकी िंगसत के असतररक्त इ िंिार–ागर िे मुस्तक्त का कोई उपाय निीं ंिै। तीथायात्रा, तपस्या और ास्त्रों ंका अध्ययन आसद तुम्हारी मुस्तक्त के सलए सकिी काम के निीं ंिैं। िािक को सकिी िन्त के पसवत्र चरणों ंमें िाष्टांग प्रसणपात कर उिकी िायता िे िन्म-मरण के चक्र िे छुटकारा पाना चासिए। िन्त वि िै सििने अपने अिंकार और क्रो का नाि कर सदया िै, सििे आत्मा का ज्ञान िै, िो िमा के मागा पर चलता िै और ामाास्त्रों ंके सनदोनुिार अपना िीवन व्यतीत करता िै। सिन्होंने ब्रह्म–ाक्षात्कार निीं ंसकया िो, उन्होंने सचदाकाि को निीं ंपिचाना िै; परन्तु सिन्होंने ब्रह्म को पिचान सलया िै, उन्हें स्वयं सचदाकाि िि िोता िै। यसद अिंकार-रूपी बादल (तुच्छ 'मैं') ज्ञान-रूपी िूया को ढक देता िै, तो ब्रह्म-रूपी कमल (अनन्त 'मैं') कभी निीं ं स्तखलेगा। पुनिान्म-रूपी तने िे सित 'अिंकार'-रूपी अंकुर, 'मेरा' और 'तेरा'-रूपी लम्बी-लम्बी िाखाओं ंिे सित वित्र फैला हआ िै और वि सवपसत्तयों,ं दुःख और कष्ट-रूपी फल देता िै। िब तक अिंकार रिेगा, कामनाओं ंका अन्त निीं ंिोगा। िो अपने हृदय िे अिंकार के अंकुर को िड िे सनकाल फेंकता िै, वि सनिय िी (िंिार-वृक्ष रूप िे असभसित) माया के वृक्ष को िैकडों ंिाखाओं ंमें बढ़ने िे रोक िकेगा।"

अब राम वसिष्ठ िी िे बोले- "िे िम्माननीय गुरुदेव! अिंकार की क्या प्रकृसत िै? इि भयंकर अिं-भाव को िम सकि प्रकार नष्ट कर िकते िैं ? अिं को नष्ट करने िे क्या लाभ िै? क्या अिं-भाव िरीर में िै या मन में अथवा दोनों ंमें, अथवा िरीर त्यागने िे िी इििे छुटकारा समलता िै?"

वसिष्ठ िी ने उत्तर सदया- "िो न सकिी वसुतु की इच्छा रखता िै और न सकिी वसुतु िे घृणा करता िै, िो रि िमय मन की िास्तन्त बनाये रखता िै, वि अिं-भाव िे प्रभासवत निीं ंिोता। तीनों ंलोकों ंमें तीन प्रकार का अिं-भाव िै। इनमें िे दो प्रकार लाभदायक एवं उच्च प्रकृसत के िैं; सकनुतु तीिरा सनकृष्ट प्रकार का िै। उिे सबलकुल त्याग देना चासिए।

"प्रथम अतुयुच्च और असवभाज्य अिं िै िो िाश्वत िै और िारी िृसष्ट में व्याप्त िै। वि परमात्मा िै सििके असतररक्त प्रकृसत में कुछ निीं ंिै। **'अहं ब्रह्माऽखि'** - मैं ब्रह्म हँ" मन्त्र पर ध्यान करो। अपने-आपको ब्रह्म िे एकाकार करो। यि िास्तत्वक अिंकार िै।

"िो ज्ञान िमारी अपनी आत्मा को अनिा की नोक िे भी असिक िूक्ष्म अथवा बाल के िौवें भाग के मिान छोटा और िदा रिने वाला बताता िै, वि दूिरे प्रकार का अिंकार िै। ये दो प्रकार के अिंकार िीवनुमुक्त अथवा मुक्त िन्तों ंमें पाये िाते िैं। ये मनुष्य को मुस्तक्त की ओर अग्रिर करते िैं। ये बिन का कारण निीं ंिोते। अतः ये लाभप्रद एवं उच्च प्रकृसत के िैं।

"तीिरे प्रकार का अिंकार वि ज्ञान िै िो 'मैं' को िाथ, पाँव आसद िे बनी दि िे एकरूप मानता िै, िो रीर को िी आत्मा िमझता िै। यि अिं का िवाासिक सनकृष्ट रूप िै। यि िभी िांिाररक लोगों ंमें पाया िाता िै। पुनिान्म-रूपी सवषैले वृक्ष के बढ़ने का यिी कारण िै। इि प्रकार के अिं वाले मनुष्य कभी ििो में निीं ंआ िकते अथाात् उन्हें कभी िमझ निीं ंआ िकती। अिंख्य लोग इि प्रकार के अिंकार िे भ्रसमत िैं। उन्होंने अपनी बुस्तद्ध, सववेकिीलता और सवचार–स्तक्त को खो सदया िै। इि प्रकार के अिंकार िे घातक पररणाम सनकलते िैं। मनुष्य िीवन की बुराइयों ंके प्रभाव में आ िाते िैं। िो इि प्रकार के अिंकार के दाि िैं, वे दोषपूणा कमा करने की प्ेरेरणा देने वाली अनेक कामनाओं ंिे पीसडत िोते िैं। यि उन्हें पिुिु–ी अवस्था में ले िाता िै। इि प्रकार के अिंकार को येन-केन-प्रकारेण सनदायता िे नष्ट कर देना चासिए।

"इि सनकृष्ट अिंकार को दूिरे दो प्रकार के अिंकारों ंिि नष्ट कर देना चासिए। सितना िी तुम इि सनकृष्ट अिं को कम करोगे, उतना 'ब्रह्मज्ञान' अथवा आत्मा का प्रकाि प्राप्त िोता िायेगा।

"प्रथम दो उच्च प्रकार के अिंकारों ंके िारा ब्रह्म को प्राप्त करने का प्रयाि करो। यसद तुम इि परमोच्च सनमाल स्तस्थसत में दृढ़ता िि स्तस्थत िो िाओ, िििाँ इन दो अिंकारों ंको भी एक-एक करके छोड सदया िाये, तब वि स्तस्थसत ब्रह्म का असवनािी पद िै। 'मैं' को भौसतक िरीर िि एकरूप (तादात्म्य) मत करो। अपने-आपको परमोच्च आत्मा अथवा परब्रह्म िि एकाकार करो।

"िि राम! हृदय में स्तस्थत िो कर मुक्त रिो, ऐिी स्तस्थसत में तुम अिंकार के आवेग िि भी मुक्त िो। मनुष्य के ऊपर अिं के प्रभाव के दृष्टान्त-रूप में तुम इि कथा को ध्यानपूवाक िुनो!

"पाताल में एक िम्बर नाम का बलिाली अिुर था, िो िादू की कला में सनपुण था। वि स्वगा में देवताओं ं तक के सलए भय बना हआ था। एक बार उिने देवताओं ंिि युद्ध करने के सलए अपनी अिेय िेना भेिी। उिने अपनी िेना की रक्षा िेतु दम, व्याल और कट-तीन राक्षि उत्पन्न सकये। इन राक्षिों ंके कोई पूवा-िन्म निीं ंथे, अतः वे िर प्रकार के मानसिक अनुबन्ध िि मुक्त थे। यद्यसप उनमें कोई अिं-भाव निीं ंथा, सफर भी उनमें ज्ञान का प्रकाि निीं ंथा। वे इि प्रकार मृत्यु के भय िि रसित हए युद्ध करते थे िैिे कोई बालक असि िि खेलता िो। उन्होंने देवताओं ंको बहत परेिान सकया।

"सनरन्तर युद्ध करते रिने िि, उनमें धीरे-धीरे 'मैं' पन का भाव उत्पन्न िो गया। एक बार अिं-भाव उठने पर िरीर में िीवन को बढ़ाने, िन-िम्पसत्त, स्वास्थ्य और भोगैश्वया आसद प्राप्त करने की कामनाएँ उत्पन्न िोने लगीं।ं इन कामनाओं ंने उनकी इच्छा-िस्तक्त को दुबाल बना कर उनके मनों ंमें सवक्षेप उत्पन्न कर सदया। वे लडने में अिमथा िो गये और उन्हें मृत्यु-भय िताने लगा। देवताओं ंने इि स्तस्थसत का लाभ उठा कर भयंकर आक्रमण कर सदया। भयभीत िो कर तीनों ंराक्षि भाग गये। सफर देवताओं ंने अिुरों ंकी िेना को परास्त कर सदया।

"िम्बर इि प्रकार सचन्तन करने लगा - 'दम, व्याल और कट, सिन्हें मैंने असभमानी देवताओं ंके सवनाि िेतु उत्पन्न सकया था, अपने असभमान, मूखाता और अिं-भाव के कारण युद्ध में पछाड सदये गये। वे आत्मज्ञान िि रसित थे। उनमें 'मैं' और 'मेरा' पन का प्रबल भाव था। अब मैं सफर अपनी माया-िस्तक्त िि अिुर उत्पन्न करूँगा िो आत्मज्ञान िि पूणा िोंगे, िो आत्मज्ञान के िास्त्रों ंमें दक्ष िोंगे और िो समथ्या अिंकार िि रसित िोंगे। वे युद्ध में देवताओं ंको परासित कर िकेंगे।'

"सफर िम्बर ने अपनी माया-िस्तक्त िि तीन अिुरों ंको उत्पन्न सकया। उन्होंने िमुद्र की ितह पर छाये हए बुलबुलों ंकी भाँसत आकाि-मण्डल को पररपूणा कर सदया। वे िवाज्ञ थे। उन्हें आत्मा का ज्ञान था। वे िब वैराग्यवान् और सनष्पाप थे। उनका सचत्त िान्त था। वे दैवी गुणों ंिि िम्पन्न थे। वे प्रेम, घृणा, िंिय, भय, भ्रम, आिस्तक्त, अिंकार और 'मेरा' पन िि रसित थे। वे िारे ब्रह्माण्ड की लेि मात्र भी परवाि निीं ंकरते थे। वे भीम, भाि और दृढ़ नामों ंिि िाने िाते थे।

"िम्बर ने उन्हें देवों ंिि युद्ध करने िेतु आदेि सदया। वे अिंख्य वर्षों तक लडते रिे। उनमें गवा उत्पन्न निीं ंहआ। देवताओं ंिि लडने में वे सनभाय रिे। वे इि दृढ़ सवश्वाि िि भाग सनकलते थे सक िरीर देि कुछ निीं ंिै और िििे लोग 'मैं' किते िैं, वि भी कुछ निीं ंिै। उन्हें भूत और भसवष्य का कोई सवचार निीं ंथा। उन्हें मृत्यु का भय निीं ंथा। उनका मन सकिी वस्तु में आिक्त निीं ंथा। स्वयं को िन्ता माने सबना वे ित्रुओं ंको मारते थे। वे कामनाओं ंिि पूणातया मुक्त थे। वे अपना कताव्य करके भी अपने को अकताा मानते थे। वे युद्ध इि भाव िि लडते थे सक अपने स्वामी िम्बर के प्रसत कताव्य पालन कर रिे िैं। वे आिस्तक्त और प्रेम िि सवहीन थे। िो लोग अिंकार

रसित िैं और िो आत्म-सचन्तन का अभ्यिा करते िैं, वे िन्म-मृतुयु के भय िे रसित िो िायेंगे। िो-कुछ पदाथा रिलता िे उपलि िोवें, उनिे वे िदा िनुतुष्ट रिंगे। वे िबको िमदृसष्ट िे देखेंगे।

"िारे देवता युद्धक्षेत्र िे भाग कर भगवान् िरर की िरण में गये और उन्ें िाष्टांग प्रणाम सकया। भगवान् रिर ने युद्धक्षेत्र में िा कर, तीनों ंअिुरों ंके िाथ युद्ध सकया। भगवान् के िारा अिुरों ंका िंिार हआ और उन्ें वैकुण्ठिाम को भेि सदया गया। भगवान् िरर के िारा मारे गये अथवा बचाये गये, दोनों ंिी िमान रूप िे उनके परम िाम के असिकारी िैं।

"विानाएँ (िूक्ष्म वृसत्तयाँ) बिन पैदा करती िैं। यसद विानाओं ंका निा कर सदया िाये, तो बिन सवलीन िी िायेगा। आत्मज्ञान रूपी असि िे िारी विानाएँ भस्म िो िाती िैं। यसद कामनाएँ नष्ट िो िायें, तो मन सबना घी के दीपक के िमान सनिलता प्राप्त कर लेगा। मन अपने अस्तस्तत्व को इसिलए प्राप्त करता िै, क्योंसंक लोग पदाथों के सवचार को प्रश्रय देते िैं और पदाथों के िंस्कार मन पर पडते िैं। यसद इन सवचारों ंका निा कर सदया िाये, तो मन तुरन्त सवलीन िो िायेगा। कामनाओं ंके कारण िी मन िंिार में बन्दी रिता िै। मन के कामनाओं ंिे मुक्त िोने पर वि मुक्त हआ किलाता िै।

"प्रथम तीन अिुर-दम, व्याल और कट-अपने अिंकार के कारण परासित हए। भीम, भिा और दृढ़ नामक अिुरों ंने अिंकार–िीनता के कारण सविय प्राप्त की।

"िे राम! उपयुाक्त कथा िे तुम भली प्रकार िमझ िकते िो सक िो लोग 'अिं-भाव' िे रसित िैं, वे िदा फिलता प्राप्त करेंगे। दम, व्याल और कट के उदािरण का कभी अनुिरण मत करना। भीम, भिा और दृढ़ के आचरण को अपनाओ। िे सनष्कलंक राम! अपने आत्मज्ञान के िारा िमस्त बातों ंको भली प्रकार िे िमझ कर िदा के सलए आनन्दमय आत्मा में िास्तन्तपूवाक विा करो।"

५.उपिास्तन्त-प्रकरण

लय

वसिष्ठ िी राम िे इि प्रकार बोले- "िे मनस्वी राम! यि िमझ लो सक यि सवश्व समथ्या िै। यि ब्रह्माण्ड केवल आत्मज्ञान की प्रकृसत का िै। रािी और तामिी प्रकृसत के लोग, क्रमिः सक्रयािीलता तथा आिस्तक्त अथवा प्रमाद और अज्ञानता िे युक्त हए, िन्म और मृतुयु के सवचार िे भ्रसमत रिते िैं। परोपकार की िास्तत्त्वक प्रकृसत वाले लोग इि गिन भ्रम को िरलता िे सनकाल देते िैं िैिे िाप अपनी कैंचुली उतार फेंकता िै। vec 4 िदा िन्म-मरण के भय िे मुक्त रिते िैं। ितं्संग, िास्त्रों ंका स्वाध्याय और िी आचरण के अभ्यिा िारा वे सववेक, अन्तदृासष्ट और उसचत ज्ञान िे िम्पन्न िोते िैं।

"ित्य और अित्य के भेद को िमझना िीखो और ित्य पर स्तस्थर री। िो पिले कभी निीं ंथा और अन्त में भी िसिका अस्तस्तत्व निीं ंरिेगा, वि कदासप ित्य निीं ंिै। िो प्रारम्भ में और अन्त में दोनों ंिमय रिता िै, वि त्यि अथवा यथाथा िै। सवश्व को उत्पन्न करने वाला मन िै।"

राम बोले-"मैं पूणा आश्वस्त हँ सक मन सवश्व का उत्पसत्तकताा िै। िे पूज्य मागा-दिाक! मुझे बताइए सक मन के िारा उत्पन्न भ्रम को नष्ट करने के अचूक उपाय क्या िै?"

वसिष्ठ िी ने किा- "िास्त्रों ंका ज्ञान, वैराग्य और िन्तों ंका िंग मन के िारा उत्पन्न सकये भ्रम का सवनाि करने में ििायक िोगा। पावन िन्तों ंके उपदेि िािक को आत्म-सवचार का अभ्याि करने में ििायक िोते िैं। वि अित्य िे ित्य को पिचानने में िमथा िोता िै। िे राम ! यि िान लो सक यि ब्रह्माण्ड िावाभौम आत्मा का िी सवस्तार िै। एक वसुतु िे दूिरी वसुतु को सभन्न िमझने की भूल त्याग दो। िब ब्रह्म िी िै। इि सवचार का नाि कर दो सक मैं और िृसष्ट सभन्न िैं।

"ििि प्रकार सवसूतृत िागर के िलों ंमें कोई भेद निीं ंिै, इिी प्रकार िाश्वत और िावाव्यापक ब्रह्म में कोई भेद निीं ंिै। िबको एक िी मानने के सवश्वाि में कोई भूल निीं ंिै। यि िमझ लो सक िैत िै िी निीं।ं अपने-आपको एक आध्यास्तत्मक ित्ता मानो। िमस्त रसचत पदाथों का वसुतुतः अस्तस्तत्व निीं ंिै। यि िमझ कर सक तुम ब्रह्म िे सभन्न निीं ंिो, िब दुःखों ंको त्याग दो। यि सवचार मत करो सक तुम कोई सवविता की स्तस्थसत में िो। िििनील, िान्त और िमसचत्त बनो।

"िुख और दुःख, िन्म और मृतुयु, गमी और िदी, लाभ और िासन, सनन्दा और सुतुसत, आदर और सनरादर-मन की कल्पना मात्र िै। मात्र एक परम सिद्धान्त िै और विी िदा रिता िै।

"भूत अथवा भसवष्य के सवषय में सवचार मत करो। िान्त और सनरिक्त बनो। सववेकी बनो। िभी आिाओं ंऔर अपेक्षाओं ंको त्याग दो। ब्रह्म में सनवाि करो और िागर के िमान पूणा िो िाओ तथा ििार की उत्ेितेनापूणा सचन्ताओं ंिे मुक्त िो िाओ। प्रेेम और घृणा िे ऊपर उठो। िांिाररक पदाथों के सलए आकांक्षा त्यागो। िबके प्रसत िमदृसष्ट सवकसित करो। िान्त री। अपनी अन्तज्योंसंत िे मसण की भाँसत चमको। आत्मज्ञान में दृढ़ सवश्वाि रखो। अपने में िनुतुष्ट रि कर उत्ेितेनापूणा ििार की सचन्ताओं ंिे मुक्त िो िाओ।

"मनुष्य अपने अस्तन्तम िन्म में अत्यन्त िरलता िे ब्रह्मज्ञान प्राप्त करेगा। वि अपने अस्तन्तम िन्म में िन्तों ंके िमस्त गुण–िावाभौम प्रेेम, उदारता, सतसतक्षा, िमदृसष्ट, िमसचत्तता, करुणा, क्षमा आसद प्राप्त कर लेगा।

रािा िनक की कथा

"आत्माओं ंसक मुस्तक्त के सलए िवाश्रेेष्ठ माने िाने वाले दो मागा िैं। एक वि मागा िै ििसमें सिष्य गुरु के सनदेिों ंका ध्यानपूवाक अनुिरण करता िै। ििि िन्म में गुरु िे दीसक्षत हआ िै, उिी िन्म में मुस्तक्त समल ियेगी
अथवा आने वाले सकिी िन्म में। दूिरा मागा िै स्विः–िाना िे ज्ञान प्राप्त करना। मनुष्य में ज्ञान स्वतः िागृत िोता िै। आकाि िे अप्रत्यासित रूप िे सगरे हए फल की भाँसत उिमें ब्रह्मज्ञान का उदय िो िाता िै। िे राम ! अब मैं तुमिे एक प्राचीन कथा का वणान करूँगा, ििसमें ऊपर बताये हए सितीय मागा के अनुिार आकाि िे सगरे हए फल की भाँसत आत्मज्ञान िागृत हआ था।

"एक बार सवदि राज्य में एक बलिाली और गुणी रािा राज्य करते थे। उनका नाम िनक था। वे बडे निी, उदार और िज्जन थे। वि सवषुणु के िमान प्रिा की रक्षा करते थे। वि अनेक िद्गुणों ंि िम्पन्न थे।

"एक सदन वि विन्त ऋतु के ििुावने मिौम में अपने िुन्दर उद्यान में गये, िो सवसभन्न प्रकार के िुगस्तित पुष्पों ंि पररपूणा था। अपने मस्तन्त्रयों ंएवं अनुचरों ंको उद्यान के बिार छोड कर वे अकेले िी उद्यान में चारों ंतरफ भ्रमण करने लगे। विाँ उन्ोंने सिद्धों ंके गीत िुने। ि कमलनयन राम! अब मैं तुम्हें सिद्धों ंके गीत िुनाऊँगा, िो उनके अनुभवों ंका वणान करते िैं।

"प्रथम सिद्ध ने गाया- 'ज्ञाता और ज्ञेय परस्पर समलते िैं। वैयस्तक्तक आत्मा परम आत्मा में लीन िो िाता िै। परम ज्ञान एवं िुख की उत्पसत्त िोती िै। यि आत्मज्ञान िै। इिकी आकांक्षा िोनी चासिए।'

"दूिरे सिद्ध ने गाया- 'मनुष्य को िमस्त विानाओं ंका उनूमूलन करके िारे दृश्य पदाथों का त्याग कर देना चासिए और आत्मा अथवा ब्रह्म पर सनरन्तर ध्यान लगाना चासिए िो िमस्त ज्योसतयों ंकी ज्योसत िै।'

"तृतीय सिद्ध ने गाया- 'िमें िवाव्यापक, िाश्वत प्रकाि पर सनरन्तर ध्यान करना चासिए िो िारे अन्य पदाथों को प्रकासित करता िै, िो िबके मध्य िै और िो निीं ंिै और िो ित् और अित् के मध्य सनष्पक्ष िाक्षी िै।'

"चौथे सिद्ध ने गाया- 'िम उि स्वयं ज्योसतमायी आत्मा पर ध्यान लगाते िैं िो िदैव अपने को िमस्त िीवों ं अथवा आत्माओं ंमें 'मैं' किता िै और िो 'अ' अक्षर िे प्रारम्भ िो कर 'ि' में अनुस्वार िे िमाप्त िोता िै 'अिं', सििे िम 'िोऽिं' िे श्वाि-प्रश्वाि के िाथ सनरन्तर अन्दर ले िाते और बािर सनकालते िैं।'

"कुछ सिद्धों ंने गया-'िम उि यथाथा अस्तस्तत्व की उपािना करते िैं, िो िब-कुछ िै, सििकी िभी वस्तुएँ िैं और सििके िारा िब-कुछ बना िै। िम उिकी स्तुसत करते िैं सििे िबकी उत्पसत्त हई िै, सििके सलए उनका अस्तस्तत्व िै, सििमें वे सनसित िैं, सििमें िब वापि िाते िैं, और सििमें िब सवलीन िो िाते िैं।'

"कुछ और सिद्धों ंने किा- 'िो लोग हृदय की गुिा में स्तस्थत परमात्मा को छोड कर बािर ईश्वर को खोिते िैं, वे वस्तुतः अपने िाथ में रखी अमूल्य कौस्तुभ मसण को त्याग कर िीपी की खोि में रत िैं।'

"सिद्धों ंके एक अन्य िमूि ने गाया- 'यि आत्मा केवल उनके िारा प्राप्त की िा िकती िै सिन्ोंने िमस्त विानाओं ंका पूणातया नाि कर सदया िै।'

"एक और िमूि ने गाया- 'िो लोग सवश्व के पदाथों में िुख निीं ंिै, यि िानते हए भी अपने सचत्त को उनमें लगाये रखते िैं, वे मानव निीं,ं गधे िैं।'

"एक पाँचवें िमूि ने गाया- 'िरीर के सववरों ंि बारम्बार सनकल कर फुफ्कार करने वाले इस्तिय-रूपी िपों को सववेक-रूपी िलाका िे इि प्रकार मार देना चासिए सिि प्रकार इि ने अपने वज्र िे पिाडों ंको तोड डाला था।'

"सिद्धों ंके अस्तन्तम िमूि ने गाया - 'सििका सचत्त िान्त िै और िो िमदृसष्ट िे िम्पन्न िै, वि अमर आत्मा को प्राप्त करेगा िो िुख और ज्ञान स्वरूप िै और िो पररपूणा ित्ता िै। यि मोक्ष अथवा अस्तन्तम मुस्तक्त िै।'

(सिद्धों ंके ये गीत 'सिद्धगीता' िैं।)

"सिद्धों ंके गीतों ंिे िनक अत्यसिक प्रभासवत हए। वि तुरन्त उद्यान िे चले गये, अपने मस्तन्त्रयों ंएवं अनुचरों ंको भिे कर स्वयं मिल की िबिे ऊपर की मंसिल के कक्ष में बन्द िो कर बैठ गये। विाँ सिद्धों ंिारा गाये हए गीतों ंके यथाथा अथा पर गिन सचन्तन करने लगे।

"वि अपने-आपिे यि किने लगे- 'मैं िंिार का क्या भरोिा कर िकता हँ और सकि प्रकार मैं इि सवश्व पर सनभार रि िकता हँ, सिसमें कुछ िार िी निीं ंिै, न िुख िै न िी यथाथाता? और सफर भी, मैं निीं ंिानता सक मेरा सचत्त इिके िारा क्यों ंभ्रसमत िै। मैं िदैव दुःख और सवपसत्तयों ंिे ग्रसित रिता हँ यद्यसप मेरे पिा प्रचुर िन-म्पसत्त िै। मेरे िीवन के िौ वषा िाश्वतता में एक क्षण के िमान िैं; सफर भी मैंने अपने िीवन को बडी मित्ता दी हई िै। अिंख्य ब्रह्माण्डों ंिे तुलना करने पर मेरा िाम्राज्य अणु मात्र िै। मैं अपनी विानाओं ंएवं इस्तियों ंका दाि बन गया हँ। मेरे राज्य की अवसि छोटी–िी िै। यि किै िै सक एक सवचारिनव्यस्तक्त की भाँसत मैं इिकी अवस्तस्थसत में स्वयं को िुरसक्षत अनुभव करता हँ। वतामान िीवन निावान् िै, सफर भी मैं मूखा इि पर भरोिा सकये हए हँ। इस्तियों ंके पदाथा िो मुझिे दूर िैं, वे िमीप प्रतीत िोते िैं; और िो िवाासिक िमीप िै-मेरी अन्तरात्मा-वि मेरी अज्ञानता के कारण मुझे िवाासिक दूर प्रतीत िोती िै। मुझे अपनी अन्ततम आत्मा, िो िाश्वत िै, को पिचानने के सलए ऐस्तिक पदाथा त्याग देने चासिए।

"प्रत्येक वसुतु निावान् िै। यिाँ कोई भी वसुतु स्थायी और लाभप्रद निीं ंिै। मिानतम पुरुष भी कालान्तर में सनम्तम क्यों ंिो िायेंगे? इि अज्ञानता ने किाँ िे मेरी आत्मा को आवृत कर सलया िै? िब मैं कष्ट और सवपसत्त में हँ, तब यि िम्पसत्त और अनेकों ंिम्बिी गण सकि काम के िैं? मेरी िन–म्पसत्त पानी के बुलबुले के िमान िै। यि मेरे िामने समथ्या असभव्यस्तक्त िै। कई िम्राट् और रािा अपनी िम्पसत्त िसित नष्ट िो गये। कई इि िाश्वतता-रूपी िमुि में बुलबुलों ंकी तरि सनगले िा चुके िैं। अतएव सकिी वसुतु का कोई भरोिा निीं ंिै।

"करोडों ंब्रह्मा चले गये। पृथ्वी के रािा िूल में समल गये। सफर मेरे िीवन और उिके स्थासयत्व में क्या सवश्वाि? िंिार एक दीघा स्वप्न िै और ऐस्तिक िरीर मन की भ्रास्तन्त िै। यसद मैं िरीर और पदाथों का भरोिा करूँ, तो िचमुच दोषी हँ। अिंख्य ब्रह्माण्ड, ब्रह्मा और िीव आये और गये। िे मन! सफर तुम्हारे अस्तस्तत्व का स्थासयत्व किाँ िै? मेरा अपना सवचार और अन्य पदाथों का दािन, मेरे मन की समथ्या कल्पना िै। मेरे अिं-भाव ने मुझे पकड रखा िै। अपनी इच्छाओं,ं अिंकार और िरीर के प्रसत आिस्तक्त के कारण मैंने अपने को इि अज्ञानपूणा स्तस्थसत में डाल सदया िै। मैं मूखा हँ। प्रसतक्षण मेरे िीवन की अवसि नापी िाती िै। सदन और रातें बीत रिी िैं और सफर भी मैंने अपने ित्य और अक्षुण्ण आत्मा को निीं ंपिचाना। काल-रूपी िादूगर, इि सवश्व-रूप खेल के मैदान में, िब मनुष्यों ंको स्तखलौने बना कर उन्ें गेंदों ंकी भाँसत उछाल रिा िै। बि, सितने िीवन मैंने सबताये, वे पयााप्त िैं।

'िम एक के बाद दूिरी कसठनाई िेलते रिते िैं और सफर भी इतने सनलाज्ज िैं सक इि सवपसत्तपूणा िांिाररक िीवन िे ऊबते निीं।ं िम देखते िैं सक िारे पदाथा निावान् िैं, सफर भी िम असवनािी की खोि निीं ं करते। अज्ञानी िन सनत्य-प्रसत अत्यन्त पापमय कृत्य करते िैं। युवावस्था में अज्ञानता में डूबे रिते िैं; प्रौढ़ावस्था में विानाओं ंिे दग्ध िोते िैं और स्तस्त्रयों ंके पाि में फँिे रिते िैं; वृद्धावस्था में वे अपने पररवार की सचन्ताओं ंिे दबे रिते िैं। वे िंिार के भार िे करािते िैं। वे दुःख और पश्चात्ताप िे सघरे हए मृतुयु को प्राप्त िो िाते िैं। उन्ें िुभ कमा करने और ईश्वर की उपािना का िमय कब समलेगा ?

'िम िदैव इि खोि में रिते िैं सक दूिरों ंकी अपेक्षा क्या असिक आनन्ददायक और स्थायी िै, परनुतु अमर आत्मा को कभी निीं ंखोिते िो िमारी िमस्त िांिाररक सचन्ताओं ंिे परे िैं। स्तस्त्रयाँ, अपने कमल-नेत्र तथा आकषाक मुस्करािट िसित िीघ्र िी म्लान िो कर मृतुयु को प्राप्त िोती िैं। यसद अनेकों ंब्रह्मा और सवषुणु पलक

झपकने मात्र िे उत्पन्न िों ंऔर नष्ट िो िायें, तो उनके िामने मैं क्या हँ-एक तुच्छ िीव हँ। ज्ञानी िनों ंने इ सिवश्व को सवपसत्तयों ंका एक अिीम िागर किा िै। सफर यिाँ कोई िुख की आिा कैिे कर िकता िै?

"िंिार-रूपी वृक्ष की िड सचत्त िै िो पुष्प, कोपलों ंऔर फलों ंिे युक्त िाखाओं ंिे चतुसदाक् प्रिाररत िै। यि माया कैिे आयी? यि मन सवश्व-रूपी मंच पर नृत्य करता िै िो िंकल्प किलाता िै। मन िंकल्पों ंका िमूि िै। यसद िंकल्पों ंका नाि िो िाये अथाात् िंकल्प न रिें, तो िन्म-मृतुयु-रूपी वृक्ष भी नष्ट िो िायेगा। मुझे आत्मा-रूपी मोती का अपिरण करने वाले चोर का पता लग गया िै। अब मैं िाग गया हँ। मैंने अपनी आत्मा के चोर को पिचान सलया िै-उिका नाम मन िै। मैं दीघा काल िे इ िकपटी दुष्ट िारा ठगा िा रिा हँ। अब मैं इिके िारा स्वयं को भ्रसमत निीं ंिोने दूँगा। मैंने इिे मार डालने का सनिय कर सलया िै। मैं सववेक-रूपी िुई िे मन का भेदन करूँगा और आत्मिंयम और अनािस्तक्त-रूपी गुणों ंकी डोरी िे इिे बाँध दूँगा। अब मैं आध्यास्तत्मक ज्ञान के सलए िागृत िो गया हँ और अपनी आध्यास्तत्मक खोि में ितत लगा रहँगा। मैंने अपनी सचरकाल िे खोयी हई आत्मा को पा सलया िै। मैं अपनी िुद्ध अमर आत्मा का ितत सचन्तन करके परम िास्तन्त प्राप्त करूँगा। मैं अपने प्रबल ितुरु मन को परासित कर दूँगा और यि सवचार त्याग दूँगा सक 'मैं िरीर हँ और यि िनिम्पसत्त तथा अन्य िामग्री मेरी िै।'"

'सिद्धों ंके ममास्पिी गीत (सिद्धगीता) िुन कर मैंने िमस्त आध्यास्तत्मक अनुभव प्राप्त कर सलये िैं। मैं उन्िें अपना गुरु िमझता हँ। मैंने अपने सचत्त का पूणातया नाि कर सदया िै। अब मैं िाश्वत िुख की अनुभूसत कर रिा हँ। मैं दुःख और कष्टों ंिे पूणातया मुक्त हँ। िैत-भाव, सवसभन्नता और भेद लुप्त िो गये िैं। मैं िवात्र एक आत्मा का दिान कर रिा हँ। मैं िदा िान्त हँ।

'मैं, वि, तुम, यिाँ, विाँ, अब और तब के सवचार मुझमें निीं ंरिे। मैं आत्मज्ञान की िरािना करता हँ, सििने मेरी अज्ञानता का सविनाि करके मुझे इ उच्च स्तस्थसत पर ला सदया िै।'

"इ प्रकार िनक दीघा काल तक िमासि में स्तस्थत रिे। वि िमासि िे िाग कर किने लगे- 'मैं अब िवात्र एकमात्र असवभाज्य ब्रह्म को देखता हँ। िदैव अपने स्वरूप में स्तस्थत हँ। कुछ भी मुझे बासित निीं ंकर िकता। मैं प्रेम और घृणा िे सनरन्तर मुक्त हँ। िांिाररक पदाथों की मुझे कामना निीं ंरिी। मैं विाना रसित हँ। मुझे िमदृसष्ट प्राप्त िो गयी िै। मैं िमता का असिकारी िो गया हँ।'

"सफर वि सबना कतृात्व की भावना के रािकाि करने लगे। सबना काल का सचन्तन अथवा आकांक्षा सकये वे रािकीय कताव्यों ंका सनवािन करने लगे। वे िीवनुमुक्त अथाात् िीसवत रिते हए भी मुक्त िो गये। वे न भूत की परवाि करते थे न भसवष्य की। "िे राम! आत्मज्ञान ितत आत्म-सचन्तन मात्र िे प्राप्त सकया िा िकता िै, कमों िे निीं।ं िांिाररक वृसत्त वाले लोग ऐस्तिक पदाथों िे सचपटे रिते िैं। पूवािन्म में सकये गये प्रयािों ंके फल-स्वरूप आत्मज्ञान की आकांक्षा िोती िै। मनुष्य को चासिए सक दुःख एवं पुनिान्म के िनक घोर अज्ञान को सनतान्त नष्ट कर दे।

"यसद कोई परमात्मा को प्राप्त करना चािता िै, तो उिे िवाप्रथम कामनाओं,ं आकांक्षाओं ंऔर अिं-भाव को नष्ट करना िोगा।

"अिंता-रूपी मेघ के सछन्न-सभन्न िोने पर सदव्य ज्योसत िूया के िमान प्रकािमान िोती िै। सििने आत्मा को पिचान सलया िै, वि बाह्य िंिार के सवचारों ंिे मुक्त िो िाता िै। उिको इ िंिार के िुख-दुःख प्रभासवत निीं ंकरते। वि प्रेम और घृणा िे मुक्त िो िाता िै। ब्रह्म-रूपी िूया को आवृत करने वाला अिंकार-रूपी गिन

मेघ आत्मज्ञान िे सछन्न-सभन्न िो िाता िै। ज्ञासनयों ंकी हृदय-रूपी गुिा में बन्द अमूल्य ज्ञान-रूपी रत् कल्पवृक्ष के मिान क्षण-भर में मनवांसछत फल देगा।

"सचत्त का खेल िी इि सवश्व के रूप में प्रकािमान िै। यि िंिार ब्रह्म िे सभन्न निीं ंिै। इिका कोई अलग अस्तस्तत्व निीं ंिै। यि सवश्व, सवश्व के रूप में, कभी निीं ंिै। यि सवश्व ब्रह्म के सिवाय कुछ निीं ंिै। मन-रूपी ब्रह्म इि ृसिष्ट के रूप में प्रकट िोता िै।

"अनिास्तक्त, एकत्व के ज्ञान िे समल कर मन-तत्त्व को सपघला देती िै। फल-स्वरूप िवोत्तम एवं उच्चतम ुखि की स्तस्थसत प्राप्त िोती िै। मनुष्य परम आत्मा में स्तस्थत िो िाता िै िो िीवन का मुख्य ध्येय िै।

"िे कमलनेत्र राम! अब तुम िनक की भाँसत आत्म-तत्त्व का सचन्तन और ध्यान करके आत्मज्ञान प्राप्त करो।" इि प्रकार वसिष्ठ िी ने उपिंिार सकया।

गासि की कथा

वसिष्ठ िी बोले- "िे राम ! माया भगवान् की भ्रमात्मक िस्तक्त िै। वि असत-प्रबल िै। सिन्हें भगवत्कृपा प्राप्त िै, वे िी उिे िीत िकते िैं।

"गीता में किा गया िै- 'प्रकृसत के स्वभाव िे सनसमात मेरी माया पर सविय पाना असत-कसठन िै; परन्तु िो मेरा आश्रय लेते िैं, वे उि पर सविय प्राप्त कर िकते िैं' (७/१४)।

"माया की मसिमा और अनन्त क्षमता का वणान करना िम्भव निीं ंिै। माया को िीत कर िी आत्मज्ञान प्राप्त सकया िा िकता िै। मन माया का प्रबल अस्त्र िै। माया मन के िारा काम करती िै। मन माया की िी रचना अथवा उिका िी रूप िै। मन पर सविय पाने िे िी माया का नाि िो िकता िै। िन्म और मृत्यु का दूिरा नाम माया िै। गासि की कथा ध्यानपूवाक िुनो। तुम्हें माया और उिकी सक्रयाओं ंका स्पष्ट ज्ञान िो िायेगा।

"कौिल नाम का एक राज्य िै िो िंगलों ंऔर फल के वृक्षों ंिे पररपूणा िै। एक बार विाँ गासि नामक एक सविान् रिता था। वि असत-कुिाग्र बुस्तद्ध और वेदों ंका परम ज्ञाता था। गुणों ंकी वि प्रसतमा था। वि अपने समत्र–िम्बस्तियों ंका िाथ छोड कर तपश्चर्या िेतु एक िंगल में चला गया। भगवान् सवष्णु के दिानों ंकी आकांक्षा िे वि आठ मिीने तक कण्ठ तक िल में खडे िो कर तप करने लगे। भगवान् सवष्णु गासि के िामने प्रकट हए और उििे तप करने का उद्देश्य पूछा।

"गासि ने तट पर आ कर भगवान् को िाष्टाग नमन सकया और बोला- 'िे भगवान्! आप तीनों ंलोकों ंके आश्रय िैं। मैं िस्तच्चदानन्द परब्रह्म में लीन िोना चािता हूँ। कृपा कर मुझे माया और उिकी सक्रयाओं ंकी प्रकृसत को िाक्षात् िमझने की क्षमता प्रदान करें।'

"भगवान् िरर बोले- 'िवाप्रथम तुम माया का िाक्षात् दिान करोगे, सफर अपनी भस्तक्त के िारा माया िे मुक्त िोने में िमथा िोओगे।' तत्पिात् भगवान् तुरन्त उिकी दृसष्ट िे ओझल िो गये सििि प्रकार गिवानगर।

"गासि भगवान् का दिान पा कर असत-प्रिन्न हआ। भगवान् के िंि गा में आने िे उिका हृदय आनन्दमि िो गया। सफर उिने कुछ सदन वन में व्यतीत सकये। एक सदन िब वि िरोवर में स्नान कर रिा था, वि भगवान् िरर के िब्दों ंपर सवचार करने लगा :

"उिने अपने-आपको अपने घर में सकिी रोग िे मृत पाया। उिने देखा सक िमस्त समत्र–म्बिी इकट्ठे िी गिये थे और उिके मृत िरीर के पाि रो रिे थे। उिने यि भी देखा सक उिकी भक्त पत्नी उिके चरणों ंके पाि बैठी फूट-फूट कर रोती हई अश्रुरिरा बिा रिी थी। उिने देखा सक उिकी माता अिह्य दु:ख िे उिका आसलंगन कर रिी थी। सफर उिने देखा सक उिके रोते-चीखते िम्बस्तियों ंने उिके मृत िरीर को स्नान कराया और अस्तन्तम स्किार िम्पन्न सकये और दिे को िला सदया। इि प्रकार गासि ने िरोवर के िल में खडे-खडे िी मन की समथ्या सक्रयाओं ंको, मन के िारा देख सलया।

"तत्पिात् गासि ने (इि स्वप्न में) भूटान के पाि एक गाँव में रिने वाली काले रंग की एक चाण्डाल स्त्री िे लडके के रूप में पुनः िन्म सलया। वि िोलिवें वषा में आया। वि भी वषाा ऋतु के काले मेघ िैिे वणा का था। उिने उिी िाती की कन्या िे सववािि सकया और उिके िाथ आनन्दपूवाक रिने लगा। उिके कई बच्चे थे। वि वृद्ध िो गया। पत्तों ंऔर फूि की झोपडी में िििु की भाँसत रिने लगा। उिके िारे कुटम्बी िन मृतुयु के कूरूर िाथों ं के सिकार बन गये। वि अकेला िी िीसवत रिा।

"वि एकाकी िीवन िे ऊब गया, अतः सवसभन्न दिेों ंमें िाने लगा। अन्त में कीर नामक िनी नगर में पहँचा। वि रािकीय िडक पर िा रिा था। उि नगर का रािा मर चुका था। रािा के कोई उत्तरासिकारी निीं ं था। रािा चुनने की परम्परागत प्रथा के अनुिार विाँ के लोगों ंने राज्य के िाथी को िीरे–विारात और किीदाकारी सकये हए रेिमी वस्त्रों ंिे िििुस्तज्जत करके रािा का चयन करने को छोड सदया। चाण्डाल ने िाथी को बडी सिज्ञािा िे देखा। िाथी उिके पाि आया और उिे अपनी लम्बी िूँड िे उठा कर अपने िौदे पर रख सलया। लोग नगाडे और िंगीत वाद्य बिा कर आनन्द िे आठों ंसदिाओं ंिे सचल्लाने लगे-"तुम्हारी िय िो ! तुम्हारी िय िो!" रािभवन की िुन्दर स्तस्त्रयों ंने अनेक आभूषणों ंतथा पुष्पमालाओं ंिे उिे िििुस्तज्जत सकया। उिे रािगद्दी पर सबठा सदया गया। मस्तन्त्रगण और मुख्य िेनापसत उिके आदिे का पालन करने लगे। अब वि गवल नाम िे असभसित हआ।

"उिने पूरे आठ वषा तक कीर राज्य पर ििािन सकया। एक सदन वि िारे आभूषण उतार कर रािभवन के पाि गली में घूमने लगा। उिने विाँ अछूत िासत के लोगों ंकी एक टोली को अपने िंगीत वाद्य बिाते हए देखा। टोली के मुस्तखया, एक वृद्ध ने कीर के वतामान रािा को देख कर पिचान सलया और उिे पुराने नाम िे म्बिोसित करके बोला- 'मेरे पुराने िम्बिी कटंि! तुम अब किाँ िो? आि तुमिे समल कर मुझे बडी प्रिन्नता हई। क्या यिाँ के रािा ने तुम्हारी िंगीत-दक्षता के कारण तुम्हें नौकरी दे दी िै?'

"रािा ने उि वृद्ध के िब्दों ंकी ओर ध्यान निीं ंसदया और तुरन्त रािभवन के अन्तरंग कक्ष में चला गया। स्तखडकी में खडी हई रािभवन की स्तस्त्रयों ंऔर अनुचर गणों ंने यि िब िुना और उन्िें अत्यन्त दु:ख हआ सक उनका रािा िन्म िे चाण्डाल था। रािा का चेिरा पीत-वणा िो गया।

"स्तस्त्रयों ंऔर िेवकों ंने मस्तन्त्रयों ंको बताया- 'यि पृथ्वीपसत, िमारा रािा, चाण्डालों ंकी िवाासिक सनम्नासित का िै। अब िम क्या करें?'

"अब स्तस्त्रयाँ, अनुचर और मन्त्री गण ििे बच कर दूर खडे िो गये। वे उिे छूते निीं ंथे। िभी के िारा वि सतरसकृत सकया गया। वे परस्पर किने लगे सक असि में स्वयं को िीसवत भस्म करने के असतररक्त अन्य सकिी

तप िे दीघा काल तक चाण्डाल के िाथ रिने का पाप निीं ंिुल िकता। पररणामतः िारे नागररक, बचे्चे तक एक सविाल असि के कुण्ड में सगर गये। इि भयंकर त्रािदी को देख कर चाण्डाल रािा गवल के हृदय पर बडा प्रभाव हआ। वि अत्यन्त पीसडत हआ।

"रािा अपने मन में िोचने लगा- 'मेरे नागररक मेरे िंिगा के कारण लपटों ंमें नष्ट िो गये। सफर मेरे िीवन िे क्या लाभ? मैं भी असि की लपटों ंमें नष्ट िो िाऊँ।'

"उिने अपने सलए एक सचता तैयार करवायी और उिमें अपने िरीर को चढ़ा सदया। िब उिने लपटों ंके मध्य दिे को रखा, तो कष्ट और वेदनापूणा अनुभव ने िल में खडे हए गासि को उिके सदवास्वप्न ने िगा सदया। उिका हृदय िडकने लगा और िरीर काँपने लगा। कुछ िमय पिात् उिका सचत्त िुद्ध हआ। वि माया के प्रभाव िे मुक्त िो गया। उिका सचत्त सबलकुल िान्त था। वि िरोवर के सकनारे लौट कर सचन्तन करने लगा सक वि क्या था? क्या देखा और राज्य में उिने क्या सकया?

"तब गासि ने मन में िोचा- 'मैं विी गासि हँ और िल में स्नान कर रिा हँ। िो-कुछ मैंने देखा, वि सबलकुल आिायिनक िै। मैं तो असववासित हँ और पत्नी के स्वरूप को भी निीं ंिानता। मैं दाम्पत्य प्रेम िे अपररसचत हँ।' गासि इन सवचारों ंपर मनन करता हआ कुछ सदन अपनी कुसटया में िी रिा।

"कुछ िमय बाद उिे अपने मकान पर असतसथ-रूप में एक ब्राह्मण का आसतथ्य करने का िंयोग हआ। फलों ंऔर मिु के भोिन िे ब्राह्मण असतिन्तुष्ट हआ। दोनों ंने िन्ध्याि-मय सनत्य कमा सकये। िूयाास्त िोने पर वे अपने-अपने आिनों ंपर बैठे हए सवसभन्न सवषयों ंपर वाताालाप करने लगे और आत्मज्ञान की कथाएँ िुनी। तब गासि ने बातचीत के मध्य पूछा- 'श्रीमान्! आप पतले और दुबाल क्यों ंसदखायी दे रिे िैं?'

"असतसथ ने उत्तर सदया- 'मैं मिीना-भर प्रसिद्ध कीर नगरी में रिा। विाँ मुझे एक व्यस्तक्त समला, सििने सनम्नांसकत घटना िुनायी :

"'उि व्यस्तक्त ने किा- "इि दिे में एक रािा ने आठ वषा राज्य सकया। सफर लोगों ंको पता चला सक वि सनकृष्टतम (श्वानभक्षी) चाण्डाल िासत का था। पररणाम-स्वरूप िारे ब्राह्मण एवं अन्य िन एक असि-कुण्ड में िल कर भस्म िो गये और रािा ने भी विी िी सकया।' यि िमाचार िुन कर मैंने वि स्थान छोड सदया और अपने पापों ंका प्रक्षालन करने िेतु प्रयाग की यात्रा पर चला गया। विाँ मैंने तपस्या और चािायण व्रत सकया। इि कारण मैं पतला दुबला और दुबाल िो गया हँ।'

"इि वणान को िुन कर गासि असत आिायासचसकत हए। वि मन में िोचने लगे-'िो-कुछ मैंने अपने म्बिस्तियों ंके मध्य हई अपनी मृतु्य के सवषय में देखा, वि तो सनःिन्दिे मेरे मन की भ्रास्तन्त थी; परनु्त चाण्डाल बन िाने वाला मेरे स्वप्न का उत्तरािा भाग तो चाण्डाल नगर में प्रवेि करने वाले ब्राह्मण के चािायण व्रत िे ित्य प्रमासणत िोता िै। अतएव मुझे तुरन्त भूटान िा कर चाण्डाल का पूरा सववरण िानना चासिए।'

"अतः चाण्डाल के रूप में पूवािन्म की घटनाओं ंकी ित्यता की स्वयं िाँच करने िेतु वि यात्रा पर सनकल पडा और स्वप्न में देखे हए भूटान दिे में प्रवेि सकया। उिने अपना िन्म-स्थान, चाण्डालों ंकी बस्ती देखी। चाण्डालों ंने उिे कटंि और उिके िीवन का सवसूतृत सववरण सदया।

"वि और भी आगे कीर दि में गया िाँ उिनै मिल देखा और विाँ के लोगों ंिे अपने िीवन में घसटत घटनाएँ िुनी। उि बडा आिया हआ। वि मन में िोचने लगा-'क्या यि भगवान् सवष्णु की माया िै? अब मुझे माया की प्रकृसत और उिकी सक्रयाएँ पूणारूपेण स्पष्ट िो गयी िैं। माया वास्तव में बडी रिस्यमयी िै।'

"वि तुरन्त पवात की गुफा में गया और भगवान् िरर को प्रिन्न करने िेतु एक वषा तक कठोर तपस्या की। वि थोडे िे िल मात्र पर रिा। भगवान् सवष्णु उिके िमक्ष प्रकट िो कर बोले- 'िे गासि ! तूने माया की मसिमा और उिके यथाथा स्वरूप को भली प्रकार िे देख सलया िै। तूने माया िारा फैलाये हए भ्रास्तन्तपूणा िाल को िमझ सलया िै। अब तुम और असिक क्या चािते िो? तुम यिाँ कठोर तपस्या क्यों ंकर रिे िो ?'

"गासि ने भगवान् को दण्डवत् प्रणाम सकया; उनकी सुतुसत की और बोला- 'िे भगवान् ! मैंने भली प्रकार माया की प्रकृसत िमझ ली िै, सफर भी मैं माया की प्रच्छन्न आन्तररक स्तस्थसत िे अनसभज्ञ हँ। िे भगवान्! यि कैिे िीता िै सक वि दृश्य िागृत अवस्था में िी दृश्यमान् रिते िैं? मैंने िमझा सक िब मैं िल में खडा था, क्षण-भर के सलए मैंने समथ्या स्वप्न की भाँसत कुछ देखा िोगा, परनुतु वि िब मेरी बािरी इस्तियों ंऔर दृसष्ट में कैिे प्रकट िो गया? चाण्डाल िासत में िन्म लेने की मेरी भ्रास्तन्त मेरे नेत्रों ंके िामने कैिे आ गयी? वि मेरी सूमृसत मात्र में रि िानी चासिए थी।'

"भगवान् सवष्णु ने उत्तर सदया- 'िो कुछ बािर दृसष्ट में आता िै, वि वसुतुतः मनुष्य के मन का दृश्य िै। पृथ्वी, िमुि, पवात और आकाि का अस्तस्तत्व निीं ंिै। वे िब मन में िसन्नसित िैं। इि ब्रह्माण्ड का और अन्य पदाथों का आिार मन िै। मन के सिवाय और किीं ंउनका अस्तस्तत्व निीं ंिै। मन की भ्रास्तन्त के कारण िब लोग यि िोचते िैं सक िंिार ित्य िै और इसिलए वे पदाथों को भोगते िैं। िसि प्रकार बीि में फूल और फल सनसित िैं, उिी प्रकार यि पृथ्वी एवं पदाथा केवल मन में िी सनसित िैं। िारी िृसष्ट मन में िी िसन्नसित िै। वतामान में वसुतुओं ंका दीखना, असवद्यमान भूतकाल और अदृश्य भसवष्य के सवचार-ये िब मन के कृत्य िैं, िैिे बतानों ंका बनाना और निीं ंबनाना, दोनों ंकुम्हार के कृत्य िैं।

'िीवन का नाटक एक िमय में मात्र आंसिक दृश्य सदखाता िै। मन की पररवतानिील स्तस्थसत में चाण्डाल का एक दृश्य प्रसुतुत करना कोई आियािनक बात निीं ंिै, िब सक उिमें उतनी िी िरलता िे अपने भण्डार में िे अनन्त रूप प्रकट करने की क्षमता िै। तुम्हें आिया क्यों ंिोता िै, िे गासि ! यसद तुम्हारे मन, ििमें िमूपूणा ब्रह्माण्ड को प्रकट करने की क्षमता िै, ने तुम्हारे िमक्ष एक चाण्डाल के िीवन को प्रसुतुत कर सदया िो पूणा का एक तुच्छ अंि मात्र िै।

'मन के िंस्कार के कारण िी तुम एिा िोचने लगे थे सक तुम चाण्डाल थे। सचत्त की एकाग्रता िे तुम्हारे मन का सवचार चाण्डाल के िीवन में प्रसतसबस्तम्बत िो गया िै। वि प्रसतसबम्ब ब्राह्मण असतसथ ने ग्रिण कर सलया। कौवे और फल की कथा की भाँसत, भूटान और कीर दिे में रिने वालों ंके मनों ंमें चाण्डाल के िीवन का सवचार प्रसतसबस्तम्बत हआ। प्रसतसबम्ब िभी के मनों ंमें यथाथा प्रतीत िोने लगा। ये िब मन की कल्पना का प्रपंच था। कुछ भी ित्य निीं ंथा। िब तुम्हारे मन की कल्पना की उडान थी। िो-कुछ तुमने िुना और देखा, तुम्हारी कल्पना का िाल मात्र था। िैिा और िािा िे भ्रसमत मन, स्वप्न की भाँसत पदाथों को देखने लगता िै मानो वे उिके िामने सवद्यमान िैं। न विाँ कोई मेिमान था, न नगर; न कोई भूटानी थे, न कीरी। यि िब सदवा स्वप्न था। िो-कुछ तुमने अपने सचत्त की दृसष्ट िे देखा, वि िब समथ्या था। ित्य यि िै सक एक बार भूटान िाते हए तुम इि पवात की गुफा में ठिरे थे। लम्बी यात्रा के कारण तुम्हें प्रगाढ़ सनिा आ गयी। तुमने चाण्डाल, भूटान और कीर दिे का स्वप्न देखा, ििने िल में उपािना के िमय िब सदखाया। यि िब तुम्हारे मन की भ्रास्तन्त थी। मन की असभव्यस्तक्तयाँ वास्तव में आियािनक िैं। सवसभन्न िन िृसष्ट के स्वप्न को अनेक रूपों ंमें देखते िैं िैिे एक िी प्रकार के खेल िे लडके सवसभन्न रूपों ंमें अपना मनोरंिन करते िैं।

'प्रायः ऐिा िोता िै सक कौवे और नाररयल के फल की कथा की भाँसत एक िी िमय में कई घटनाएँ घसटत िोती िैं। नाररयल के पेड पर फल बहत भारी िोता िै और वृक्ष में दृढ़ता िे लगा रिता िै, ििािे अचानक सकिी के सिर पर न सगर पडे। ऐिे वृक्ष के नीचे एक मनुष्य एक नाररयल के गुच्छे पर दृसष्ट लगाये बैठा था। उिी िमय एक कौवा उड कर गुच्छे पर िा बैठा और एक नाररयल सगर पडा। मनुष्य बोला- "कौने के पंि बहत मिबूत िैं। फल को तोडने के सलए एक तीक्ष्ण औिार की आवश्यकता पडती िै। पर कौवे ने इिे तोड सदया।" ित्य यि था सक फल सगरने िी वाला था, कौवा केवल आ कर उि पर बैठा और वि सगर गया। यि एक आकस्तस्मक िंयोग था।

'उिी प्रकार चाण्डाल का सवचार िारे भूटानी, कीर और तुम्हारे मन में एक–िाथ िी आया, क्योंसक बहत िे लोग एक िी सवचार के िोते िैं, भले िी वि गलत िो। यि ित्य िै सक गाँव की िीमा पर िो मकान तुमने खण्डिर िालत में देखा, वि एक चाण्डाल ने बनाया था। पर तुम्हारा यि सवचार गलत था सक तुमने वि मकान बनाया। यिाँ तुम भूल पर िो।

"अज्ञानी िन-सिनमें 'मैं', 'तुम', 'वि', 'मेरा', 'तेरा', 'यि' और 'वि' के भेद-भाव िोते िैं—को िी भ्रम, दुःख और कष्ट िोते िैं। िो लोग अिीम, िवाव्यापी आत्मा को िी िवात्र देखते िैं और सिन्होंने यि ज्ञान प्राप्त कर सलया िै सक यि िृसष्ट ब्रह्म के सिवाय कुछ निीं िै, वे िदा आनस्तन्दत एवं िान्त रिते िैं। उन्िें पदाथों की इच्छा निीं िोती। उन्होंने अज्ञान का नाि कर सदया िै। तुम अब तक मानसिक भ्रास्तन्त के प्रभाव में िो। तुमने पूणा ज्ञान प्राप्त निीं सकया िै। मोि एक रिस्यमय चक्र िै। मन इि चक्र के (पसिये) की धुरी िै। सववेक और ज्ञान के िारा इि मन का नाि कर दो, तब तुम्हें माया निीं िताये गी। इि पिाडी की गुफा में िा कर दि वषा तक प्रबल तप और ध्यान करो। इि अवसि के अन्त में तुम्हें ब्रह्म का पूणा ज्ञान िो िायेगा।'

"यि कि कर सवष्णु भगवान् गासि की दृसष्ट िे ओझल िो गये।

“गासि ने दि वषा तक तपस्या की। उिने अपनी िारी आकांक्षाओं, आिस्तक्तयों तथा भीषण भ्रम को त्याग सदया और अन्त में आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया। वि िाश्वत िुख के परम पद पर पहँच गया िो भय, कष्ट और ऐस्तिक पदाथों की कामना िे मुक्त था। वि िीवनुमुक्त अथवा मुक्त िाधु बन गया।"

उद्दालक की कथा

वसिष्ठ मुसन बोले- "िे राम! मुसन उद्दालक की भाँसत पंचभूतों पर सविय पा कर, देि और िंिार के सवचार िे मुक्त िो िाओ, आत्मा की खोि प्रारम्भ करो। िभी के मूल कारण पर गिनता िे सवचार करो और लोकातीत सदव्य प्रकाि िे अपने सचत को आलोसकत िोने दो।" श्री राम ने वसिष्ठ िी िे किा- "िे श्रद्धेय गुरु ! कृपया मुझे बताइए सक उद्दालक मुसन ने सकि प्रकार पंचभूतों पर सविय पा कर अद्वैत-स्तस्थसत प्राप्त की ?"

वसिष्ठ मुसन बोले- 'अब मैं तुम्हें उिकी कथा िुनाऊँगा। वि बडी मनोरंिक और प्रेरणास्पद िोगी। आत्मा की खोि िारा वि असनवाचनीय भव्यता युक्त सनमाल ब्रह्म-पद पर पहँच गये। यि मिात्मा गिमादन पिासडयों पर रिता था ििाँ बहत िुन्दर दृश्यावली थी। उिने कठोर तपस्या की, िमाग्रन्थों का अध्ययन सकया और वि अत्यन्त श्रद्धाभस्तक्तपूवाक सनयसमत रूप िे अपने सनत्य कमा करता था। उिके हृदय में सववेक उदय हआ। वि अपने मन में इि प्रकार िोचने लगा :

'मैं िन्म-मरण िे कब मुक्त िोऊँगा? कब मुझे अपने िंकल्पों ंिे तथा आकषाण-सवकषाणों ंकी दो िाराओं ं ि छुटकारा समलेगा? कब मुझे पूणा सनसवाकल्प िमासि का आनन्द प्राप्त िोगा और मैं िास्तन्तपूवाक अपने सनि-स्वरूप में िदैव स्तस्थत िो िाऊँगा? मैं कब विाना िे पूणातया मुस्तक्त पाऊँगा? कब ऐस्तिक सवषयों ंकी कामना मिाप्त िोगी? कब मैं कमल-पत्र पर ओि की बूँद के िमान अनिाक्त बनूँगा? कब मेरे गिन ध्यानस्थ िोने की स्तस्थसत में िंगल की छोटी सचसडयाँ मेरे बालों ंकी िटाओं ंमें घाि के अपने घोिले बनायेंगी?'

"पद्मािन में बैठे हए उद्दालक परम तत्त्व पर सचन्तन करने लगे। वि अपने मन पर सनयन्त्रण निीं ंकर िके। उनका मन बन्दर की भाँसत एक सवषय िे दूिरे सवषय पर दौडने लगा। वि इि प्रकार िोच कर अपने मन िे किने लगे- 'िे मूखा मन! तू नािवान् पदाथों की ओर क्यों ंदौडता िै? तू इनिे लेिमात्र भी िुख प्राप्त निीं ंकर िकता। तू स्वाथापरक कृत्य क्यों ंकरता िै? ये कृत्य अत्यसिक कष्ट उत्पन्न करते िैं। िास्तन्तपूवाक परम ित्ता में सवश्राम करो। तुम्हें िाश्वत िुख प्राप्त िोगा। िब्द, स्पिा, रूप, रि और गि के पीछे तुम क्यों ंभागते िो? विानाएँ तुम्हें बाँिने के सलए बुने हए िाल िैं। िे नािमझ मन! सिरण की भाँसत िब्द िारा, िाथी की भाँसत स्पिा िे, पतंगे
की भाँसत रूप िे, मछली की भाँसत रि िे और मिुमक्खी की तरि गि िे मृत्यु को मत प्राप्त िो। सिरण, िाथी, पतंगा, मछली और िंि की मिुमक्खी में िे प्रत्येक एक इस्तिय मात्र की तृस्तप्त के प्रसत आिस्तक्त िोने के कारण मरते िैं; परन्तु तुम पाँचों ंइस्तियों ंको तुष्ट करने की आकांक्षा के िारा और असिक खतरे में िो। पाँचों ंइस्तियों ंिारा िामूसिक रूप िे िताये िाते हए तुम परम िास्तन्त का िुख कैिे प्राप्त कर िकते िो? सनिय िी तुम्हारा दुभााग्य िै! तुमने अपने को इच्छाओं ंके िाल में फँिा रखा िै, सिि प्रकार रेिम का कीट अपनी िी लार िे सनकले हए िागे िे बने िाल में अपने को फँिा लेता िै। िमस्त विानाओं ंिे अपने को मुक्त करो। तब तुम बिन िे छूटोगे।

मैंने सिर िे पाँव तक अपने िरीर के प्रत्येक अणु का सवश्लेषण कर सलया िै। उिके सकिी भी भाग में मुझे 'मैं' किलाने वाली वस्तु निीं ंसमली। केवल 'ब्रह्म' अथवा परम ित्ता िारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त िै। उिका न नाम िै न रूप। वि सबना रंग का और सनगुाण िै। न वि लम्बा िै न छोटा, न लघु िै न बृित्। मैं स्वयं िी वि िवाव्यापी आत्मा हँ।"

'िे मन! तुमने िब प्रकार के भेद-भाव उत्पन्न कर सदये िैं। तुम िी िारे कष्टों,ं सचन्ताओं ंऔर सवपसत्तयों ंका कारण िो। मैं सववेक एवं 'मैं कौन हँ" के अनुिन्धान िारा तुम्हें िीघ्र िी नष्ट कर दूँगा।

"दि, मन, प्राण अथवा इस्तियों ंके सलए 'मैं' कैिे प्रयुक्त सकया िा िकता िै? सकि प्रकार 'मैं' को मांि और अस्तस्थयों ंिे सनसमात ढाँचे अथवा नेत्र, कान, नाक अथवा सिह्वा के सलए प्रयुक्त सकया िा िकता िै? 'मैं' तो िवाव्यापी, अमर, असवभाज्य और स्वयं प्रकािमान िै। मैं दीघा काल तक तुम्हारे िारा ठगा िाता रिा। मेरे आत्मा-रूपी रत्न का अपिरण करने वाले चोर तुम िो। अब मैं तुम्हारा सवश्वाि निीं ंकरूँगा। तुमिे और िरीर िे मेरा कोई नाता निीं ंिै। तुम िे, िरीर िे और इस्तियों ंिे मेरा िम्बि क्षसणक िै।

'िे मन! तुम अपने मूल स्थान को चले िाओ। व्यथा िांिाररक इच्छाओं ंके वन में भ्रमण मत करो। मिझदार बन कर उि िाश्वत िुख की स्तस्थसत में चले िाओ, ििाँ िे लौटना निीं ंपडता।

"मैं अब िान्त हँ। मेरा हृदय आनन्द िे पररपूणा िै। अब मैं अपने मन, िरीर और इस्तियों ंके बिन िे मुक्त हँ। िभी पदाथों की एकता दृश्यमान िै। मैं सनभाय हँ। मैं अपने-आपको िभी में, िवाकाल और िवात्र, िब-कुछ अनुभव करता हँ। मुझे िमत्व एवं िमदृसष्ट प्राप्त िो गयी िै। मैं अपनी आत्मा की मसिमा अनुभव कर रिा हँ। मैं अपने में िन्तुष्ट हँ। अपनी आत्मा में आनस्तन्दत हँ।'

"सफर उद्दालक अि-खुले नेत्रों ंिे पद्मािन लगा कर ध्यानमि िो गये। वि िमुसचत रूप िे, उच्च स्वर िे प्रणव अथाात् ॐ का उच्चारण करने लगे-ऐिे उच्च स्वर में, िो घण्टे की आवाि की भाँसत गूँि रिा था। प्रणव में

ाढ़ै तीन मात्राएँ िोती िैं। िब ॐ के प्रथम अंि अकार का उच्चारण सकया, तो रेचक अथाात् प्राण को बािर छोडने की सक्रया हई। उनके हृदय की असभ िारे िरीर में व्याप्त िो कर उिे िलाने लगी। यि पसवत्र एकाक्षर प्रणव-उच्चारण िारा योगाभ्याि का प्रथम चरण था। यि प्रणवयोग की प्रथम स्तस्थसत िै। उन्ोंनें रेचक की इि स्तस्थसत को िठयोग के सकिी अभ्याि िे प्राप्त निीं ंसकया। दूिरे चरण अथाात् प्रणव के उकार में कुम्भक (श्वाि रोकना) हआ। देि में िो असि प्रदीप्त हई थी, अब वि क्षण-भर में सबिली की चमक की भाँसत सवलुप्त िो गयी। िरीर श्वेत भस्म की तरि, बफा के िमान श्वेत-वणा िो गया। यि प्रणवयोग का सितीय चरण िै। उन्ोंनें यि स्तस्थसत िठयोग िारा प्राप्त निीं ंकी। सफर तृतीय चरण में-प्रणव के 'म' कार में पूरक (श्वाि लेना) घसटत हआ। अब उद्दालक को पूणा सवश्राम का आनन्द अनुभव हआ। यि प्रणवयोग का तृतीय चरण िै। उद्दालक का िरीर सवष्णु के स्वरूप की भाँसत ज्योसतमाय िो गया।

"उन्ोंनें प्राणायाम का अभ्याि करके प्राण और अपान पर सनयन्त्रण कर सलया। प्राण के बसिगामन को रोकने िेतु देि के नविारों ंको बन्द कर सदया। तब बडी कसठनाई िे उन्ोंनें इस्तियों ंको अपने सवषयों ंकी ओर िाने िे रोका। अपने सनयस्तन्त्रत मन को उन्ोंनें हृदय-गुिा में बन्द कर सदया। कठोर िंघषा िारा उन्ोंनें अपने सवचारों ंको नष्ट सकया।

"स्वतः िी उनके मन में िंिय के िमूि बारम्बार उठने लगे। िैिे प्रकार एक योद्धा ितुरु का सवनाि करता िै, ऐिे िी उन्ोंनें िाििपूवाक अपनी बुस्तद्ध-रूपी तलवार िे उन िंियों ंको नष्ट सकया। तत्पिात् उन्ोंनें सववेक के िारा मानसिक सवकार को नष्ट सकया। तब उन्ें अपने िमक्ष एक िुन्दर पुंि सदखायी सदया। इि स्तस्थसत को पा करके वि सनिालु िे िो गये। उन्ोंनें सनिा की स्तस्थसत का सनराकरण सकया। सफर उन्ोंनें नीलाकाि का सवस्तार देखा। इतने में मोि आ गया। उिे भी िफलतापूवाक सछन्न-सभन्न कर सदया। सवकार, प्रकाि, सनिा, आकाि और मोि–भी स्तस्थसतयों ंको पार करके अन्त में उन्ोंनें सनसवाकल्प िमासि की स्तस्थसत को प्राप्त कर सलया, सििका वणान सकिी भाषा के िारा निीं ंसकया िा िकता। िभी दृश्यमान पदाथा अदृश्य िो गये। वि एक अमृत-िागर में सनमि िो गये। उन्ोंनें असनवाचनीय भव्य ब्रह्म-पद को प्राप्त कर सलया। िब प्रकार के कष्टों ंिे वि मुक्त िो गये। एक िंि की भाँसत वि आनन्द के िागर में तैरने लगे।

"छि मिीने पिात् उद्दालक िमासि िे िागे। सिद्ध, देवता और स्वगा की अप्सराएँ चारों ंओर िे घेर कर उन्ें आकृष्ट करने लगे। देवराि इि ने उन्ें देवलोक प्रस्तुत सकया। उद्दालक ने स्वीकार निीं ंसकया।

"देवता लोग बोले- 'िे िम्माननीय मिात्मन्! िम लोग आपका िासदाक असभनन्दन करने िेतु प्रतीक्षा कर रिे िैं। इि सदव्य रथ पर िवार िो िाइए। यि आपको देवलोक ले िायेगा। स्वगा िुख का अस्तन्तम स्थान िै, ििाँ आपकी इच्छाओं ंकी पूणा तृस्तप्त िोगी। यिाँ सदव्य अप्सराओं ंको देखो। वे पंखे और पुष्पमालाएँ सलये आपकी िेवा में खडी िैं। स्वगा के िुख के िमान और कोई िुख निीं ंिै। इि कल्प की िमास्तप्त तक आप स्वगीय िुख को भोग िकते िैं। इन स्वगीय िुखों ंको भोगने के सलए िी आपकी तपस्या फसलत हई िै।'

"परन्तु उद्दालक देवताओं ंिारा प्रस्तुत प्रलोभनों ंतथा स्वगा की अप्सराओं ंके कुसटल िाव-भावों ंिे संकंसचत् भी सवचसलत निीं ंहए। उन्ोंनें िमुसचत मानपूवाक व्यविार करते हए अनुरोि सकया सक वे िस्तन्तपूवाक चले िायें। देवताओं ंने िमझ सलया सक असिक ठिरना व्यथा िोगा, क्योंसक उद्दालक उनके आकषाणों ंिे संकंसचत् मात्र भी निीं ं सडगे। अतएव वे अपने सदव्य स्थान को लौट गये।

"िो िन्त सनसवाकल्प िमासि की आनन्दमयी स्तस्थसत (परम ित्ता के िाथ योग) में क्षण-भर रिे अथवा िैिार वषा तक रिे, उिके पिात् वि पुनिान्म के कारक ऐस्तिक भोगों ंकी कभी कामना निीं ंकरेगा।

"उद्दालक सवन्ध्य तथा सिमालय क्षेत्र की घासटयों ंमें, वनों ंव िंगलों ंमें स्वतन्त्रतापूवाक भ्रमण करते रिे और गिन िमासि में सदन, मिीने तथा वषा व्यतीत कर सदये। पूणा िास्तन्त की स्तस्थसत प्राप्त करके वि िीवनुमुक्त िो गये। वि दुःख, िंिय और बारम्बार िन्म-मरण के कष्ट िे मुक्त िो गये।

"सनसवाकल्प िमासि के दीघाकालीन अभ्यिा िे उद्दालक ने अपने मन को परम चेतना अथवा सचत्त-ामिान्य में सवलीन करके ित्त्वि–ामान्य प्राप्त कर सलया।"

श्री राम बोले- "िे िम्माननीय गुरु ! ित्त्वि–ामान्य क्या िै? कृपया इि सबन्दु पर प्रकाि डालें।"

वसिष्ठ िी ने उत्तर सदया - "िंकल्पों ंअथवा सवचारों ंके नष्ट िोने पर मन िुद्ध चैतन्य की प्रकृसत का िो िाता िै। यि चैतन्य िी ित्त्वि–ामान्य िै। ित्त्वि–ामान्य वैसश्वक अस्तस्तत्व िै। यि तुरीयातीत की स्तस्थसत िै। सिि प्रकार कपूर असि में सवलीन िो िाता िै, उिी प्रकार मन िुद्ध चैतन्य में सवलीन िो िाता िै तथा बािरी व भीतरी पदाथा और िमस्त दृश्यमान् िगत् अदृश्य िो िाते िैं। यि ित्त्वि–ामान्य िै। ज्ञानी अथवा िीवनुमुक्त का लोकातीत अनुभव िी ित्त्वि–ामान्य िै। पदाथों के प्रकट िोने पर एक िन्त उिी प्रकार अपने-आपको स्वरूप में अन्तसनासित कर लेता िै, सिि प्रकार कछुआ अपने सिर और अंगों ंको िमेट लेता िै। उि पदाथों का कोई सवचार निीं ंिोता। उनका उि पर सकसचत् भी प्रभाव निीं ंिोता। यि िै ित्त्वि–ामान्य।

"ज्ञान और सववेक िारा सनसवाकल्प िमासि में स्तस्थत हआ िीवनुमुक्त िी ित्त्वि–ामान्य का आनन्द अनुभव करता िै, अज्ञानी निीं।ं

"दीघा काल के पित्, उद्दालक ने पृथ्वी पर अपने भौसतक िरीर को त्याग कर श्री सवदेिमुक्त िोने के सवषय में िोचा। वि पद्मािन में बैठे। आि खुले नेत्रों ंिे उन्िोंनें नवािारों ंको बन्द करके इस्तियों ंपर सनयन्त्रण सकया। उन्िोंनें अपने सिर, गदान और िड को िीिी रख कर प्राणों ंको रोका। सफर उन्िोंनें अपनी सिह्वा के कोने को तालु पर लगा कर खेचरी मुद्रा की। दाँतों ंको भींचं सलया। श्विा सबलकुल रुक गया। उनकी मुखाकृसत िान्त और सनमाल थी। उन्िें एकत्व का परम अनुभव हआ। उन्िोंनें स्वयं को ब्रह्मानन्द–ािगर में सनमि कर सदया। उनका मुख तिो कमल के िमान स्तखल रिा था। वि ज्योसतयों ंकी परम ज्योसत के िाथ एकाकार िो गये और सवदेिमुस्तक्त प्राप्त कर ली।

"िो सनरन्तर आत्मा की खोि के िारा सनसवाकल्प िमासि में प्रवेि करते िैं, वे िाश्वत ब्रासह्मक िुख को भोगेंगे और अमरता प्राप्त करेंगे। िब मनुष्य को यि अनुभव प्राप्त िो िाता िै, तो पदाथों के सलए िारी वािनाएँ सबलकुल िमाप्त िो िायेंगी।"

भाि और सवलाि की कथा

वसिष्ठ िी बोले- "िे िीिीिी राम! िो िन ध्यानाभ्याि करके आत्मा अथाात् परम ित्ता में आनन्द मि रिते िैं, वे कष्ट, दुःख, सवपसत्तयों ंएवं सचन्ताओं ंिे मुक्त रिते िैं।

"िीव अथवा वैयस्तक्तक आत्मा एक वृषभ के िमान िै। वि िंिार-रूपी गिन वन में लक्ष्यिीन भ्रमण करता रिता िै। वि वािनाओं ंकी दृढ़ रस्सी िे िकडा रिता िै। कमा-रूपी कोडों ंिे मार खाता िै। रोग-रूपी मस्तक्खयों ंिे काटा िा कर कष्ट पाता िै। वि िांिाररक कष्टों ंके भारी बोझ िे दबा करािता रिता िै। उिका िरीर

सनरन्तर आगे-पीछे िलचल के कारण िख्मीि–ा िो िाता िै। अज्ञानता के कारण वि अिख्य िन्मों ंके गिन कूप में सगर गया िै।

"सिज्ञािु को चासिए सक वि मन का नाि करके िीी अन्तदृासष्ट िे अपनी अमर आत्मा को िाने। तभी वि अिं-भाव और स्वाथापरता िे छुटकारा पा िकता िै। उिे सनरन्तर िन्त-मिात्माओं ंतथा िीवनुमुक्तों ंका िंिगा करके आत्मज्ञान-प्रास्तप्त के उपाय खोिने चासिए।

"िुद्ध एवं भली प्रकार अनुिासित मन िी आत्मज्ञान-प्रास्तप्त का सनसित िािन िै। यसद मन आत्मा में लीन िो िाये, तो तुरीय अथाात् ब्रासह्मक चेतना की स्तस्थसत का आनन्द प्राप्त िोगा।
"यसद आस्तत्मक खोि आरम्भ की िाये, तो मन िनैः-िनैः पसवत्रता के उच्च स्तर को प्राप्त कर लेगा। मनुष्य को उच्चतर मन के िारा सनम्नतर मन का नाि करके ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना चासिए। तभी इि भीषण िंिार के िारे कष्टों ंका अन्त िोगा। िब मन का नाि और सनम् अिं का सवनाि िो िायेगा, तब आत्मा का प्रकाि उदय िोगा और आत्मा का अमर िुख उत्पन्न िोगा।

"िे वीर राम! इि अनुभव के दृष्टान्त-रूप में तुम्हें एक प्राचीन कथा िुनाता हूँ, सििमें भाि और सविाि दो भाइयों ंका वातााालाप िै।

"भाि और सविाि नामक दो िािु िह्य पवात स्तस्थत असत्र ऋसष के आश्रम में रिते थे। वे असत्र ऋसष के दो पुत्र थे। वे पुष्प और उनकी िुगस्ति की भाँसत पारस्परस्रक स्नेिपूवाक रिते थे, मानो वे दो िरीरों ंमें एक िी आत्मा और मन िों।ं वे दोनों ंएक-दूिरे िे इि प्रकार िंयुक्त थे, मानो एक वृक्ष की दो िाखाएँ िों।ं

"कालान्तर में वृद्ध माता-सपता की मृत्यु िो गयी। भाइयों ंने दाि-िंस्कार की सक्रयाएँ िम्पन्न कीं।ं अपने माता-सपता के देिाविान पर वे अत्यन्त दुःखी हुए और प्रबलता िे अश्रु-प्रवाि सकया। अब वे एक-दूिरे िे अलग िो कर सवपरीत सदिाओं ंमें चले गये। एकान्त िंगल में रि कर कठोर तपस्या में वे अपना िमय व्यतीत करने लगे। उन्होंने िारी आकांक्षाएँ नष्ट कर दीं।ं उनके िरीर कृि (दुबाल) िो गये, परन्तु उन्हें ित्य ज्ञान प्राप्त निीं ं हुआ। सफर वे एक बार समले।

"सविाि ने किा- 'िे भाि। मेरे सप्रय भाई! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। मेरे हृदय के अन्तस्तल में तेरे सलए स्थान िै। तू मेरा िीवन िी िै। भाई! बताओ, मुझिे अलग िोने के पिात् तुमने कैिे और किाँ िमय व्यतीत सकया? क्या तुम्हें िास्तन्त प्राप्त हुई? क्या तुमने आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया िै? क्या तुम प्रिन्न िो ? क्या तुम मानसिक कष्टों ंऔर सचन्ताओं ंिे मुक्त िो गये? क्या तुमने अनन्त का िुख और िाश्वत का आनन्द प्राप्त कर सलया िै?'

"भाि ने उत्तर सदया- 'आि तुमिे समल कर मैं अपने को भाग्यिाली मानता हूँ। िम िास्तन्त की आिा कैिे कर िकते िैं, िब तक दृढ़ और गिरी िडों ंिे सिसित वािनाओं ंका बीि नष्ट न िो िाये और मन का नाि न िो िाये। िम िाश्वत िुख का अनुभव कैिे कर िकते िैं, िब तक िम आत्मज्ञान प्राप्त न कर लें और िब तक िम आत्मा का िाक्षात्कार न कर लें। देखो, सकि प्रकार िमारे िीवन व्यथा के िांिाररक कायों में, स्वाथापूणा प्रयािों ंमें और सनरथाक गपिप में व्यतीत िो रिे िैं। िरीर मुरझाये हुए वृक्ष की भाँसत नाि को प्राप्त िो िाता िै। श्वेत बालों ं और झुरी पडी चमा िे वृद्धावस्था आ घेरती िै। िम अलौसकक आनन्द का कैिे अनुभव कर िकते िैं, िब तक उपिवी कामनाएँ नष्ट न िो िायें और आिा-भय आसद िमाप्त न िो िायें। िम ब्रह्म के िुद्ध आनन्द को कैिे भोग िकते िैं, िब तक िम िुद्ध बुस्तद्ध अथाात् सववेक-रूपी फावडे िे सवसभन्न प्रकार की कामना-रूपी घाि-फूि को न उखाड फेंकें?

"मृतुयु-रूपी चूिा िीवन-रूपी गाँठ को िड ि काटने को िदैव िलि रिता ि। िंिररक िीवन-स्रोत कामनाओं ंऔर आकांक्षा-रूपी कीचड िसित प्रवासित रिता ि, सिमें सचन्ताओं ंऔर परिसनयों ंके झाग उठते रिते ि और पुनिान्मों ंके भँवर सवद्यमान िैं। मन इस्तियों ंि सित नाचता रिता ि। उि क्षण-भर के सलए भी सवश्राम निीं।ं

'अज्ञान-रूपी रोग के इलाि िेतु ब्रह्मज्ञान िी सनसित सवसिष्ट उपचार ि। पुनिान्म-रूपी गिन दु:ख के सलए यि िवोपरर उपाय अथवा रामबाण औषसि ि। सिन्होंने ब्रह्मज्ञान प्राप्त निीं ंसकया ि और िो अपना िमस्त िीवन इस्तिय-भोगों ंमें व्यथा गँवाते िैं, वे बारम्बार िन्म-मरण के चक्र में फँिते िैं। सिि प्रकार िवा के झोंकों ंि वृक्षों ंके िूखे पत्ते उडा सलये िाते िैं, उिी प्रकार अज्ञानी िन मृतुयु के प्रवाि िारा बिा सलये िाते िैं।'

"भिा की भावपूणा वाताा िुन कर सवलिा असत-प्रिन्न हआ। सफर दोनों ंभाई ब्रह्मज्ञान की प्रास्तप्त के सलए श्रमपूवाक िलि िो गये। उन्होंने परम ित्ता पर सनरन्तर और गिन ध्यान करके आत्म-िाक्षात्कार सकया और िीवनुमुक्त िो गये।

"कष्ट, सवपसत्तयाँ, सचन्ताएँ और भ्रम उन्हीं ंलोगों ंको प्रभासवत करते िैं िो िंिररक और अज्ञान की दलदल में फँिे िैं। सिन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया ि, वे िदैव ब्रह्म अथाात् अनन्त का िाश्वत िुख अनुभव करते िैं।"

वसिष्ठ िी बोलते रिे- "ि वीर राम! कामनाओं ंके िूत्र ि बँिे हए कष्टदायक मन का नाि आत्मज्ञान ि िी िोगा। आकषाणों ंि रसित िुद्ध सचत्त वाला व्यस्तक्त सवसभन्न प्रकार के िंिररक कृत्य करता हआ भी कभी बँिा निीं ंिोगा, इिके सवपरीत आिस्तक्त युक्त अिुद्ध सचत्त वाला व्यस्तक्त सवसभन्न प्रकार के तप भी करे, तब भी वि िदा बंिा रिेगा। िो मनुष्य आिस्तक्त रसित िो कर िुद्ध मन ि कमा करता ि, उिमें सनरिास्तक्त के कारण कतृात्व का भाव, फलाकांक्षा तथा कताा-भोक्ता पन निीं ंरिेगा।"

श्री राम बोले- "ि पूज्य गुरुदेव ! आकषाण क्या ि? अनाकषाण क्या ि? वि क्या आकषाण ि िो मनुष्य को बिन में डालता ि? वि अनाकषाण क्या ि िो मुस्तक्त की ओर अग्रिर करता ि? इि बिन को मैं सकि प्रकार नष्ट कर िकता हँ? इन सबन्दुओं ंपर प्रकाि डासलए।"

वसिष्ठ िी ने उत्तर सदया- "यसद कोई यि सवश्वाि करता ि सक यि दिे स्थायी ि, यसद वि दिे और इिके असिष्ठाता अथवा अन्तवािी अथवा अन्तयाामी िाश्वत आत्मा में भेद निीं ंकर िकता ि और वि िदा िरीर के सवषय में िी सचन्तन करता रिता ि, तो वि आकषाण का दाि ि और आकषाण ि बँिा ि। यि आकषाण ि। सन:िंदेि यि बिन में डालेगा। यि सवश्वाि ि सक प्रत्येक वस्तु ब्रह्म अथवा आत्मा िी ि और इि िृसष्ट में प्रेम अथवा घृणा के सलए कुछ निीं ंि, यि अनािस्तक्त ि। यि अनािस्तक्त मोक्ष अथाात् अस्तन्तम मुस्तक्त की ओर ले िायेगी।

"िीवनुमुक्त अनािस्तक्त ि िम्पन्न िोते िैं। अनािस्तक्त आने पर मन िंिररक भोगों ंको त्याग देता ि। अि-भाव लुप्त िो िाता ि और पदाथों के सलए आिस्तक्त नष्ट िो िाती ि। अनािस्तक्त की स्तस्थसत मोक्ष की ओर अग्रिर करती ि। िो अनािक्त िैं, वे न कमा को चािते िैं न अकमा को। आिस्तक्त और आकषाण मनुष्य को पुनिान्म में फँिाते िैं।

"यि आकषाण दो प्रकार का िोता ि-बन्ध्य और अबन्ध्य। प्रथम प्रकार अज्ञानी ि िम्बस्तित ि और दूिरा उनका आभूषण ि सिन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया ि। प्रथम पदाथों के प्रसत आिस्तक्त के कारण पुनिान्म की

ओर अग्रिर करता िै और दूिरा सवविेक एवं आत्मज्ञान उत्पन्न करता िै। भगवान् सवष्णु तथा सिद्ध गण अबन्ध्य आकषाण िारा सवसभन्न कमों में रत रि कर इि पृथ्वी का िंरक्षण करते िैं।

"िीवनुमुक्त सवश्व-कल्याण के सलए अनेक कृत्य करते हए भी आिक्त निीं िोता। यद्यसप वि पदाथों िे गिंगा रखता िै, सकन्तु वि सनतान्त उदािीन रिता िै। उिका पदाथों में कोई आकषाण निीं िै। उिका सचत्त िदैव परम ित्ता पर स्तस्थर रिता िै। वि इि िंिार को समथ्या मानता िै। वि न भावी आिाओं में रिता िै, न वतामान स्तस्थसत का भरोिा करता िै और न भूतकाल की सूमृसतयों का आनन्द लेता िै। िुप्तावस्था में, परम ज्योसत के प्रकाि में वि िागता िै। िागृत अवस्था में वि सनसवाकल्प िमासि की गिन सनिा रसित सनिा में मि रिता िै। वि कमा करते हए भी ऐिे रिता िै मानो कुछ निीं करता। वि कताापन के सवश्वाि की भूल सकये सबना िी कमा करता िै। वि न सकिी बात पर आनस्तन्दत िोता िै न दुःख मानता िै : बालक के िाथ बालक िैिा व्यविार करता िै और वृद्धों के िाथ वृद्ध बन िाता िै। युवकों की िंगसत में वि युवक बन िाता िै और ज्ञानी िनों के िाथ गम्भीर िो िाता िै। वि दूिरों के िुख में आनस्तन्दत िोता िै और िो लोग कष्ट में िैं, उनिे ििानुभूसत रखता िै।

"सबना सचत्त के लगाये, िरीर की सक्रयाओं मात्र िे वि बािरी कृत्य करता िै, िैिे प्रकार पालने में लेटा हआ बच्चा मन िे सबना सकिी आिय के स्वतः िी अंग-प्रत्यंग की सक्रयाओं िे खेलता रिता िै। अन्तमान िारा सबना सकिी लक्ष्य के बािरी िरीर िारा की गयी सक्रया सकिी कताा का कमा निीं मानी िाती और न िी वि उिे अच्छे अथवा बुरे पररणाम का भोक्ता बनाती िै। वि दुःख में म्लान निीं िोता और िुभ भाग्य िे िसषात निीं िोता िै। न िफलता पर गसवात िोता िै न असफलता िे दुःखी िोता िै।

"िब मन को ऐस्तिय-भोगों में निीं रमने सदया िायेगा, तो वि िनैः-िनैः सवनष्ट िो िायेगा। यि 'िुषुस्तप्त िागृत' किलाता िै। िैिे प्रकार नदी िमुि में समलती िै, उिी प्रकार वैयस्तक्तक आत्मा परम आत्मा में समल िाती िै। िब दृसष्ट और दृश्य िष्टा में लीन िो िाते िैं, तो परम आत्मा का िुख अनुभव िोता िै। यि तुरीयावस्था िै।

"िब िारी कामनाएँ नष्ट िो िाती िैं, प्रिररत मन का िमाप्त िो िाना िी मोक्ष िै। मन और उिके सवचारों को मूल िे नष्ट कर दो। यसद व्यस्तक्त को आत्मज्ञान प्राप्त िो िाता िै, तो बिन किाँ रिेगा? मुक्त मिात्मा सिनके सचत्त िान्त िैं और सिन्ोंने आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया िै, आकांक्षाओं िे पूणातया मुक्त िैं। सनष्कामना िी िंिार-रूपी िंगल को काटने वाली कुल्हाडी िै। सनष्काम भाव िन्तोष और िास्तन्त- रूप वृक्ष में पुष्पों का एक गुच्छ िै। कामना रसित व्यस्तक्त हृदय की िारी दुबालताओं िे मुक्त रिता िै। कामना रसित व्यस्तक्त के सलए िमूपूणा ब्रह्माण्ड सतनके के िमान िै।

"िो लोग अपने सनि-स्वरूप अथाात् आत्मा में स्तस्थत िैं, उनें अपनी देिों की चेतना िी निीं रिेगी। इि िंिार के अनेकों प्रलोभनों के मध्य रि कर भी वे अपने लक्ष्य िे कभी सवचसलत निीं िोंगें। यद्यसप मानवता के कल्याण िेतु वे सवश्व में कायारत रिें; परन्तु उनके मन िदैव ब्रह्म में स्तस्थत रिेंगे, िैिे प्रकार स्त्री घर के कायों में व्यस्त रिे, तो भी उिका सचत्त दूर रिने वाले उिके प्रेमी में लगा रिता िै। िमस्त कामनाओं के नष्ट िोने पर मन के भीतर की परम िास्तन्त मोक्ष की ओर अग्रिर करेगी। कामना रसित मनुष्य को मोक्ष पुरस्कार-स्वरूप समलेगा। कामना रसित लोग िुखी िीवनुमुक्त िैं। सिनके सचत्त कामनाओं में रत रिते िैं, वे बद्ध िैं। सवदेिमुक्त इन दोनों प्रकार के लोगों िे भी बहत उच्च िैं।

"ऐिे िीवनुमुक्त न भसवष्य के सलए सकिी वस्तु की कामना करेंगे और भूतकाल की वस्तुओं के सवषय में िोचेंगे। वे िदैव िंिार की भलाई के सलए की थी। भूतकावे प्रकृसत में सकिी अनिोनी घटना पर आियाचसकत अथवा भयभीत निे िोंगे। वे कभी ििे निीं िोंगें, चािे िूया िीतल िो िाये अथवा चिमा तपने लगी अथवा असि की लपटें नीचे की ओर िाने लगें, अथवा नदी का प्रविा ऊपर को बिने लगे। सवसवि रूपीय पदाथों वाला यि

िैिे मन के चलायमान िोने िे प्रकट िोता िै, िैिे प्रकार िमुि में िल के सिलने-डुलने िे अिंख्य लिरें उठती िैं।"

राम बोले- "िे पूज्य गुरु! सचत्त के सवक्षेप का क्या कारण िै और व्यस्तक्त उिे सकि प्रकार सनयस्तन्त्रत कर िकता िै? कृपया इन सबन्दुओं ंको मुझे िमझाइए।"

वसिष्ठ िी ने उत्तर सदया- "सचत्त का सवक्षेप सतलों ंमें तेल, बफा में श्वेतता. पुष्पों ंमें िुगस्ि और असि में लपटों ंकी भाँसत सचत्त िे िी िम्बस्ित िै। इि सवश्क्क्षेप के नाि के दो मागा िैं—योग और ज्ञान। मन की वृसत्तयों ंके सनरोि को योग किते िैं। इिमें मन को एक पदाथा पर स्तस्थर सकया िाता िै। ज्ञान िै-आत्म-सवश्लेषण और वस्तुओं ं की पूणा छानबीन। सचत्त प्राणों ंके सवचलन के सिवाय कुछ निीं ंिै। प्राण पर सनयन्त्रण करने िे सचत्त पर भी सनयन्त्रण िो िायेगा। यसद सचत्त पर सनयन्त्रण िो िाये, उिमें उठने वाले सवक्षेपों ंको िमाप्त कर सलया िाये, तो िारे कष्ट िाते रिेंगे और पुनिान्म का अन्त िो िायेगा।"

राम बोले-"प्राण पर सनयन्त्रण कैिे िो? उिकी िलचल को कैिे रोका िाये, क्योंसंक यि प्राण अत्यन्त प्रबल वेग िे सनरन्तर चलता िै?"

वसिष्ठ िी ने उत्तर सदया -"प्राण की िलचल सनरन्तर और सनयसमत प्राणायाम के अभ्याि अथाात् श्वाि को सनयस्तन्त्रत करने िे रोकी िा िकती िै। योग के सवद्याथी को योगिास्त्रों ंका पूणा ज्ञान िोना चासिए। उिे कामनाओं ं िे रसित िोना चासिए। सकिी गुरु िे दीक्षा लेनी चासिए। िन्त-मिात्माओं ंतथा योसगयों ंके ििंग में रिना चासिए। तभी वि प्राण पर सनयन्त्रण करने में िफल िोगा।

"ऊिा अथवा प्राण नासडयों ंिारा फेफडों,ं िमसनयों ंऔर िरीर की मांिपेसियों ंमें भ्रमण करते िैं। यि प्राण की िलचल िी िरीर के आन्तररक अंगों ंमें िस्तक्त का िंचार करती िै। इि िस्तक्तवान् श्वाि के स्पन्दन िे हृदय में इच्छाएँ और भावनाएँ िागृत िोती िैं। प्रबल प्राण की स्फुरणा िे हृदय की गुिा में िडकन और सचत्त िारा ज्ञान उत्पान िोता िै। यसद प्रासणक श्वाि रुक िाये, तो सचत्त िान्त िो िाता िै। यसद मन की सक्रया बन्द िो िाये, तो सवश्व के अस्तस्तत्व का बोि िमाप्त िो िायेगा; क्योंसंक िब प्रगाढ़ सनिा में मन सनस्तिय रिता िै, तो भी िंिार का कोई भान निीं ंिोता।

"सकिी एक सवषय पर ध्यानस्थ िोने िे भी श्वाि रुक िायेगा। ध्यान के िाथ पूरक और रेचक के सनयसमत अभ्याि िे प्राणों ंका स्पन्दन रुक िायेगा। ॐ के उच्चारण, ॐ उच्चारण की अस्तन्तम ध्वसन की यथाथा प्रकृसत पर ध्यान तथा ॐ के अथा पर गिन सचन्तन िे प्राणावरोि िोगा। पर कुम्भक (श्वाि रोकना) के अभ्याि िे भी प्राण रुकेगा। खेचरी मुिा भी प्राण पर सनयन्त्रण करती िै। सिह्वा की नोक को मोड कर िब तालु के सछि पर ले िाते िैं, तो तालव्य सछि बन्द िो िाता िै। तब वायु ग्रसिका के ऊपर ले िायी िाती िै। इििे प्राण का स्पन्दन बन्द िो िाता िै। िब िंकल्पों ंिे मुक्त हआ मन ररक्त िो िाता िै, तो प्राण रोका िा िकता िै। नासिका के सिरे िे बारि इंच की दूरी तक श्वाि चलता िै। इि स्थान को ध्यानपूवाक देखना चासिए। इि सवसि िे भी प्राण को रोका िा िकता िै। दृसष्ट को दोनों ंभौंिों िके मध्य केस्तित कर लें; इििे प्राण का स्पन्दन रुक िायेगा।

"इन अभ्यािों ंके िारा प्राण पर सनयन्त्रण िो िकता िै, तब मनुष्य िनैः िनैः पुनिान्मों ंिे मुक्त िो िायेगा। इन पद्धसतयों ंके अभ्याि िे िी व्यस्तक्त दुःख िे मुक्त िो कर, सदव्य आनन्द िे पररपूणा िो कर परम ित्ता में लीन िोगा। प्राण पर सनयन्त्रण िोने पर सचत्त अत्यन्त िान्त िो िायेगा। सचत्त और प्राण का घसनष्ठ िम्बि िै। यसद सचत्त िान्त िोता िै और अपने कारण अथाात् आिार में सवलीन िो िाता िै, केवल ब्रह्म िेष रिता िै। इिका

सचत्त ारी कामनाओं ंऔर आकांक्षाओं ंे मुक्त ो गया ै और सिने परम त्ता में ाश्वत सवश्राम पा सलया ो, वि ावाश्रेष्ठ व्यस्तक्त ै।"
राम ने का- "े म्माननीय गुरु! आपने मुझे योग का मागा बताया, सििे मन और प्राण को सनयस्तन्त्रत सकया ाता ै। अब कृपया मुझे वि सवसि बतलाइए, सििे आत्मा के पूणा ज्ञान अथाात् ब्रह्मज्ञान के ारा मन को वि में सकया ाता ै।"

वसिष्ठ ी बोले-"केवल ब्रह्म का ी ावात्र अस्तस्तत्व ै ो आसद, मध्य और अन्त रसित ै, यि दृढ़ सवश्विा ी यिथाथा ज्ञान अथवा पूणा ज्ञान ै। ब्रह्म अस्तखल सवश्व में व्याप्त ै। सवश्व केवल आत्मा की प्रकृसत का ै। यि दृढ़ सवश्विा सक सवसभन्न पदाथों की स्तक्तयाँ आत्मा ी ैं। आत्मज्ञान, अथाात् आत्म–ाक्षात्कार ै। अज्ञानता े ी न्म और कष्ट ोते ैं। सि प्रकार मारी दोष युक्त दृसष्ट े रस्सी में पा सदखायी देता ै और मुसचत दृसष्ट उ तुरुसट को दूर कर देती ै, इी प्रकार पूणा ज्ञान में इने मुस्तक्त सदला देता ै। ब्रह्मज्ञान मनुष्य में पूणाता लाता ै। 'ब-कुछ ब्रह्म ी ै' यि तत्त्वज्ञान ै। यि दृढ़ ज्ञान और दृसष्ट सक 'सवश्व ब्रह्म' ी ै', , पूणाता ै। ब सवश्व ै, तो अस्तस्तत्व अथवा अनस्तस्तत्व का भाव अथवा अभाव, बिन या मुस्तक्त सफर कि ं री? ावात्र एक आत्मा को ी देखो ! अनेकता में एकता मझो। आत्मा को पिनाया। सफर वृक्ष, पवात, नदी, पात्र और वस्त्र के ारे भेद नष्ट ो ायेंगे। उनके ाथ को ंकल्प भी सवलीन ो ायेंगे।

"ब्रह्म ी ब-कुछ ै, एिा व्यापक दृसष्टकोण रखने े तुम्हें लकडी, पत्थर गा तुम्हारे वस्त्र में भेद निीं ं प्रतीत ोगा। सफर क्यों ंतुम यि व्यथा के भेद करने में अपनी सच रखते ो ? यि मझो सक केवल ब्रह्म ी िा रसित तत्त्व ै, सिका आरम्भ े अन्न तक अस्तस्तत्व ै। यि मझ लो सक यि ब्रह्म ी तुम्हारी आत्मा ै। सचदाभाि अवता वैयस्तक्तक आत्मा तथा ारे पदाथा अन्ततोगत्वा ब्रह्म में सवलीन ोते ैं।

"े कमलनेत्र राम! आनन्द ब्रह्म में सवश्राम करो। ब्रह्म ी मन के ारा नाम-रुपां में असभव्यक्त ोता ै, सि प्रकार मुि का ल झाग, बुलबुलों,ं तरंगों ंऔर लिों ंआसद के रूप में। ो त्यपथगामी ै, ो सनत्यः आत्मानिुान का अभ्याि करता ै, वि ांाररक भोगों ंके ाल में कभी निीं ंफँगा। वि कभी ांाररक प्रलोभनों ंऔर ऐस्तिक–ुखों ंके ारा सवचसलत निीं ंोगा। वायु के ामने चट्टान की भाँसत वि असवचसलत रिगा। ी अत्यन्त सवषम पररस्तस्थसतयों ंतथा सवरिी स्तस्थसत में भी सवचसलत निीं ंोते-वे ी पुरुष ैं सिन्ोंने मोक्ष प्राप्त कर सलया ै। लोग ाश्वत ास्तन्त के ाम्राज्य में प्रवेि पाने के असिकारी ैं। वे ी आत्म–ाक्षात्कार प्राप्त करेंगे।

वीतिव्य की कथा

"अब मैं तुम्हें एक मागा बताऊँगा, ो मोक्ष की ओर अग्रिर करता ै। े वीर राम! इ पूणा ध्यानपूवाक ुनो। पूवा-काल में वीतिव्य नामक एक तपस्वी सवन्ध्य पिासडयों ंमें रिता था। कालान्तर में वि कमाकाण्डीय सक्रयाओं ंे अिनुतुष्ट रिने लगा, ो मनुष्यों ंको भ्रास्तन्त में डालती ैं और ो लोगों ंके रोगों ंतथा कसठनाइयों ंका कारण बनी हई ैं। उिने असि को आहसत देना बन्द कर सदया। वि सनसवाकल्प मासि प्राप्त करना चािता था। उिने पत्तों ंऔर केले के वृक्ष की डासलयों ंे एक झोपडी बनायी । उिने मृगचमा का आिन सबछाया । वि वउ्मािन लगा कर बैठ गया और अपने दोनों ंाथ एसडयों ंपर रखे । उिने नेत्र बन्त्द कर सलये । ीरे–ीरे मन को
बािरी पदाथो े खीचं कर उिे स्तस्थर कर सलया और अन्त में अपने हृदय में दृढ़ता े स्तस्थत कर सदया।
"वि अपने मन में इ प्रकार सवचार करने लगा सक 'मैंने अपने मन को सनयस्तन्त्रत सकया; सकन्तु सफर प्राण के ारा यि सवसक्षप्त ोने लगा ै। वायु ारा उडाये गये ूखे पत्ते की भाँसत यि बि रिा ै। यि बाह्य अंगों ंको इ प्रकार चासलत करता ै, ैिे रथवान अपने घोडों ंको ाँकता ै और सफर अंगों ंके ारा अपने सवसभन्न सवषयों ंकी

ओर ले िाया िाता िै। वि एक सवषय िे दूिरे सवषय की ओर दौडता रिता िै, िैिे बन्दर एक वृक्ष िे दूिरे पर कूदता िै। मैं इि अपने मागा िे रोकने की चेष्टा करता हँ, परनु्त यि पदार्थों की ओर िी दौडता िै। यि उत्कण्ठा और उतु्सुकता िे उनका अनुिरण करता िै। पंच ज्ञानेस्तियाँ मानो सचत्त के िी िार िैं और मैं उनका िष्टा मात्र हँ। मैं मूक िाक्षी हँ।

'िे मेरी दुष्ट और ितभागी इस्तियो ! तुम क्यों ंव्यथा में अपने को सवपसत्तयों ंऔर मुिीबतों ंमें डालती िो? तुम क्यों ंइतनी नािमझ िो सक अिान्त िो कर भटकती िो? मैं िुद्ध चैतन्य हँ। मैंने मन और इस्तियों ंका िंिगा सकया, इि कारण मेरा पतन हआ। िवाज्ञ आत्मा नेत्रों ंऔर कानों ंको भली प्रकार िानता िै, परनु्त ये इस्तियाँ अन्तरात्मा को निीं ंिानतीं।ं ये ब्राह्मण और िूद्र, सबस्तल्लयों ंऔर चूिे तथा नेवला–िाँप की भाँसत िैं। िे मन! तुम गली के एक कुत्ते की तरि लक्ष्यिीन क्यों ंभटकते िो? िे सवकृत बुस्तद्ध! तुमने अिंकार के कारण इि नािवान् िरीर को अमर आत्मा िमझ रखा िै। 'मैं' को िरीर और पदार्थों िे िंयुक्त मत करो। अिंकार की भ्रास्तन्त िे उत्पन्न पृथकता का नाि करो। िे मन! सिि प्रकार िूया उदय िोने पर अिंकार सवलीन िो िाता िै, इिी प्रकार आस्तत्मक खोि िे तुम तुरन्त सवलीन िो िाओगे। िे मन! अब तुमने सनिय कर सलया िै सक ित्य का मागा अपना कर आत्मा की खोि करोगे। वतामान मागा िचमुच प्रिंिनीय िै। तुम िीघ्र िी आत्मा के िाश्वत िुख को प्राप्त करोगे।'

"इि खोि के िारा वीतिव्य ने दृढ़ता िे मन, इस्तियों ंऔर प्राण पर सनयन्त्रण कर सलया। उिने नासिका के अग्र भाग पर दृसष्ट स्तस्थर की। उिको देि अचल िो गयी। श्वाि रुक गया। सफर उिने तीन िौ वषा िमासि में ऐिे व्यतीत सकये मानो एक क्षण था। सिंिों ंकी दिाड का भयंकर िब्द और सिकाररयों ंकी चीख-सचल्लाि भी उिे िमासि िे निीं ंिगा िकी। उिका िरीर बाढ़ों ंमें आये हए रेत के ढेर िे किीं ंतक दब गया था। िमासि िे िागने पर उिे सवसदत हआ सक उिका िरीर रेत िे दब गया िै। प्राण का िुचारु िंचालन निीं ंथा। अतएव िरीर में भी सु्फुरण निीं ंथा। उिने सचत्त के भीतर प्रवेि करके पाया सक उिने कैलाि पवात के ढाल पर एक तपस्वी की भाँसत िौ वषा व्यतीत कर सदये थे, और सफर िौ वषा सवद्यािर की भाँसत, देवलोक में देवेि की भांसत पाँच युगों ंतक रिने के पिात सिव िी का पुत्र गणेि हआ। सदव्य दृसष्ट िे वीतिव्य अपने पूवा–िन्मों ंकी घटनाओं ंको देख िका। उिे भूत, वतामान और भसवष्य - तीनों ंकालों ंका ज्ञान था।

"वीतिव्य ने अपनी देि को रेत में िे सनकालना चािा। वि अपने िूक्ष्म िरीर िारा िूया के पाि गया और सपंगला िे किा सक वि उिके िरीर पर िंसचत रेत को िटा दे। सपंगला ने बादल के रूप में सवन्ध्य की गुफा में प्रवेि सकया। बादल ने एक सविाल िाथी का आकार ग्रिण सकया। इि िाथी ने समट्टी और रेत को िटा सदया। सपंगला अपने मूल स्थान को चली गयी। मुसन के िूक्ष्म िरीर ने उनके िरीर में प्रवेि करके उिे िीवन्त कर सदया। मुसन ने स्नान करके िूया की उपािना की। सफर उिने कुछ िमय नदी के सकनारे पर व्यतीत सकया। उिे िांिाररक पदार्थों का कोई आकषाण निीं ंथा। उिमें आत्म–िंयम, पे्रम, करुणा, िास्तन्त, दया, िन्तोष, बुस्तद्धमत्ता और आन्तररक िुख था।

"वीतिव्य इि प्रकार अपने िे किने लगा- 'अब तक मैं अपनी िारी इस्तियों ंको सनयस्तन्त्रत करता रिा, अब मैं सनसवाकल्प िमासि में प्रवेि करके चट्टान की भाँसत असडग रहँगा। मैं स्वयं को िुख के िागर अथाात् पूणा चैतन्य में सवलीन कर दूँगा। मैं अपनी आत्मा में स्तस्थत िो िाऊँगा। मैं ऐिा िो िाऊँगा मानो कोई प्रगाढ़ सनिा में िो। िंिार के सलए मृतक िो िाऊँगा। मुझे सवश्व की कोई चेतना निीं ंरिेगी। प्रगाढ़ सनिा में रिते हए भी इि िंिार में िागृत की भाँसत िो िाऊँगा। मुझे अपने स्वरूप की पूणा चेतना िोगी। मुझमें पूणा िागृसत रिेगी। मैं तुरीय का आनन्द अनुभव करूँगा, ििाँ सवषमता निीं ंिै। मैं ब्रह्म के एकरूपत्व का अमृत-पान करूँगा।'

"इि प्रकार सचन्तन करके वि ध्यानस्थ िो गया। वि छि सदन और रात िमासि में रिा। उिने आत्मा के िाश्वत िुख को भोगा और िीवनु्मक्त िो गया। उिने िन्म-मृतु्य तथा िुख-दुःख आसद िन्द्वों िे मुस्तक्त पा ली।

"अब वि सवदिमुस्तक्त प्राप्त करना चािता था। वि एक पवात की गुफा में िा कर पद्मािन लगा कर बैठ
गया और िोचने लगा- 'ि े कामनाओ! मैं तुमिे सवदाई लेता हँ। मैंने तुम्हारे िारा भौसतक िुख भोगे। अब मैं सनष्काम िो गया हँ और िास्तन्त-िुख का अनुभव कर रिा हँ। ि े क्रोि ! तुमने दुष्टों ंि े रक्षा करने में मेरी ििायता की, अब मैं तुमिे सवदा लेता हँ। अब मुझे सचत्त की िास्तन्त प्राप्त िो गयी िै। मुझे तुम्हारी िारी चालाकी सवसदत िो
गयी िै। ि े सवषयानन्द ! तुम्हें सवदा करता हँ। असंख्य िन्म-चक्रों ंमें अपने कटु िुखों ंको भोगने िेतु तुम मुझे प्रलोभन देते रिे। इि सवश्व में तुम्हारे िाथ मैं पयााप्त खेल खेल चुका। ि े सवषय-भोगो ! मैं तुम्हें सवदा करता हँ। तुमने दीघा काल तक मुझे भ्रम में रखा। अब मैं तुम्हारी पहँच ि े ऊपर उठ गया हँ। तुमने मुझे अपनी िस्तच्चदानन्द प्रकृसत सवसृमृत करा दी। ि े कष्ट! तू मेरा रक्षक िै। तूने मेरे नेत्र खोल सदये । तुम मेरे सलए सछपे वेि में वरदान िो। तुमने आत्मा का िाश्वत िुख प्रकट कर सदया। तुम्हारे सबना मैं िीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने की चेष्टा कभी निीं करता । तुमने मुझे आस्तत्मक खोि, ध्यानाभ्याि एवं िमासि के मागा पर अग्रिर कर सदया। ि े िरीर, मेरे पुराने एवं घसनष्ठ समत्र! मैं अब तुम्हें त्यागता हँ। मैं तुम्हारे प्रसत ि मुसचत िम्मान अपाण करता हँ। यद्यसप तुमने मुझे अत्यसिक यातनाएँ दीं,ं सफर भी मैंने तुम्हारे ििारे ि े भव-िागर पार सकया िै। ि े लोभ ! मुझे अव िन्तोष समल गया
िै। अब मुझे िांिाररक लाभ निीं ंचासिए। मुझे मोक्ष-रूपी परम िन समल गया िै। मुझे िवोच्च लाभ प्राप्त िो गया िै। मैं तुम्हें सवदा करता हँ। ि े आिस्तक्त एवं काम ! अब मुझे असिक मत िताओ। मैंने वैराग्य और पसवत्रता प्राप्त कर ली िै। मैं तुम्हें नमस्कार करता हँ, ि े मेरी सप्रय कन्दरा ! ध्यानाभ्याि में तुम मेरी ििायोगी रिी िो। िब मैं इि कोलािलपूणा सवश्व के िोरगुल ि े पूणा थक गया था, तो तुम्हीं ंमेरा एकमात्र आश्रय थीं।ं ि े मेरी छडी ! थकान दूर करने के सलए तुम मेरी िवाश्रेष्ठ समत्र थीं।ं मेरे वृद्ध िरीर का तुम ििारा थीं।ं ि े मेरे प्रबल प्राणो ! अब मैं तुम्हें सवदा
करता हँ। अनेक िन्मों ंतक तुम मेरे िाथ रिे। ि े मेरे िुभ कमों! मैं तुम्हें बारम्बार नमस्कार करता हँ। तुम्हारी सिक्षा ि े िी मैं दुष्कमा करने ि े बचा रिा और िीक्षा ि े मोक्ष प्राप्त कर िका। ि े सिओ और समत्रो! मैं तुम िबी अब सवदा लेता हँ। ईश्वर करे, तुम िब िुखी रिो। तुम िबको असन्तम लक्ष्य प्राप्त िो।'
"उिने िीमे ि े प्रणव उच्चारण सकया, सििने िमस्त ऐस्तिक पदार्थों और िंकल्पों ंका सनवारण कर सदया। उिने ॐ पर ध्यान लगाया। सिकार का लोप हुआ और प्रकाश प्रकट हुआ। उिका हृदय प्रकाशमान् िो गया। सफर वि िाग्रत-िुषुस्तप्त अवस्था में एक चट्टान की भाँसत स्तस्थत िो गया। उिने तुरीयावस्था प्राप्त कर ली। वि पूणा चैतन्य िो गया, पूणा ित् िो गया। उिने नास्तस्तकों ंके िून्य, ब्रह्मवासदयों ंके परब्रह्म, िांख्य के पुरुष, योसगयों ंके ईि, िैवों ंके सिव, कालवासदयों ंके काल तथा माध्यसमकों ंके मध्यम की स्तस्थसत प्राप्त कर ली।

"वि 'वि' िो गया िो िन्तों ंके िारा िाना िाता िै, िो िबमें व्यापक िै, िो िारी ज्योसतयों ंको ज्योसत देता िै, िो एक और अनेक िै, िो िमस्त िास्त्रों ंका उपिीव्य िै, िो सवश्व का आश्रय और आिार िै। वि बीि िि वषा तक उि उच्च स्तस्थसत में रिा, प्रिन्नतापूवाक सवश्व भर में भ्रमण करता रिा। अन्त में ज्योसतयों ंकी ज्योसत में सवलीन िो गया और सवदिमुस्तक्त प्राप्त कर ली।"

६.सनवााण-प्रकरण
मुस्तक्त

वसिष्ठ िी राम िे बोले- "िे राम ! कोई पदाथा एक क्षण आनन्द देता िै, दूिरे क्षण कष्ट। स्वस्थावस्था में दूि आनन्द देता िै; परनुतु विी दूि ज्वर, बदििमी तथा पेसचि की स्तस्थसत में कष्ट और उल्टी उत्पन्न करता िै। यि िभी लोगों ंका अनुभव िै। िब तुम कोई वसुतु पाने की इच्छा करते िो, तो िी वि वसुतु िुख देती िै। अतएव इच्छा आनन्द का कारण हई। भोग इच्छाओं ंकी क्षसणक तृस्तप्त करता िै। िब तृस्तप्त िो िाती िै, तो वि वसुतु आनन्दप्रद निीं ंरिती ।

"क्षसणक िुखों ंमें आनन्द का अनुभव करना मूखाता िै। िे राम ! िारी इच्छाओं ंऔर सवचारों ंका नाि कर दो। सवषयों ंिे मन का िंिगा मत रखो। िसे आत्मा का ज्ञान निीं ंिै, वि बद्ध िै; िसे ब्रह्मज्ञान िै, वि बिन िे मुक्त िो िाता िै। अतः िे राम! सनरन्तर और गम्भीरता िे ब्रह्म का सचन्तन करके ब्रह्मज्ञान प्राप्त करो।

"मन बडा चंचल दुष्ट िै। यिी बिन और मुस्तक्त का कारण िै। वि सनरन्तर चलायमान रिता िै। वि सनसमष मात्र में पाताल िे आकाि को उछलता-कूदता रिता िै। इिमें क्षण मात्र में िंिार को रचने अथवा नष्ट करने की िस्तक्त िै। मन का सवक्षेप भ्रास्तन्त को िन्म देता िै। मन असवद्या अथवा अज्ञान का िी पररणाम िै। िे राम ! वािना के सविाि अथवा प्राण के सनयन्त्रण िारा मन को नष्ट कर दो। मन वािनाओं ंके िमूि के सिवाय कुछ निीं ंिै। यसद वािनाएँ नष्ट िो िायें, तो मन का अस्तस्तत्व निीं ंरि िकता। मन के सवस्तार और िंकुचन िे िी सवश्व की उत्पसत्त तथा लय िोता िै। अतएव वृसत्त, िंकल्प अथवा सवचारों ंकी लिरों ंपर सनयन्त्रण िारा मन की सक्रया को बन्द कर दो। प्राण के सनयन्त्रण िे मन का सनयन्त्रण िोगा। प्राण की िलचल िे मन की चंचलता उत्पन्न िोती िै। िीवन-श्वाि िे िंिार के व्यापार िम्पन्न िोते िैं और बन्द भी िोते िैं। प्राणायाम के अभ्याि िे श्वाि को रोको। यसद मन का सविाि िो िाये, तो तुम्हें अनन्त िुख की अनुभूसत िोगी। यसद दृसष्ट और दृश्य िष्टा में सवलीन िो िायें, यसद ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय एक िो िायें अथाात् सत्रपुटी का लय िो िाये, तो तुम्हें आत्मा की परम िास्तन्त प्राप्त िोगी।

"इच्छाओं ंका त्याग, श्वाि का सनयन्त्रण तथा उसचत खोि, हृदय और मन की सक्रयाओं ंको रोक देंगे और पररणामतः कामना तथा भ्रास्तन्त का सनराकरण िोगा। िािी ज्ञान सवषयी मन को दुबाल बनाता िै। दोषपूणा िमझ सवषयािक्त सचत्त को दृढ़ करती िै। िन्त का सचत्त कोई सचत्त निीं ंिै। वि ब्रह्म िी िै। वि पसवत्रता का िार िी िै। िसि प्रकार रिायसनक प्रसक्रया िे ताम्र बन िाता िै, उिी प्रकार ध्यान की प्रसक्रया िे सवषयी मन िुद्ध िो िाता िै। भेद-भाव और सभन्नताएँ मन के िारा िी उत्पन्न िोते िैं। वसुतुतः उनका कोई अस्तस्तत्व निीं ंिै। सनम् अथवा अिुद्ध मन िंिार के सनम् पदाथों में क्रीडा करता िै। उच्चतर अथाात् पसवत्र मन ब्रह्म अथाात् परम आत्मा में िास्तन्तपूवाक सवश्राम करता िै। ब्रह्म एक िै। वि मन के िारा अनेक िो िाता िै िो सवभासित करता, भेद उत्पन्न करता तथा सवखस्तण्डत करता और पृथक् करता िै। मनुष्य तथा ब्रह्म (ईश्वर) के मध्य सवभासित दीवार मन िी िै। िािारण सभसत्त तो ईंट, पत्थर और िीमेन्ट िे बनती िै, परनुतु यि रिस्यमयी दीवार वािनाओं, ंसवचारों, ंराग-िेष और अिं-भाव िे सनसमात िै। यसद आस्तत्मक खोि अथवा ध्यान के िारा यि सभसत्त सगरा दी िाये, तब तुम केवल

एकरूपता और एकत्व का अनुभव करोगे। 'एक' िी यथाथा ि। केवल ब्रह्म िी ित्य ि। रस्सी में िपा की भाँसत अथवा मृगमरीसचका में िल अथवा खम्भे में चोर की भाँसत बहत्व समथ्या ि।"

सबल्वफल की कथा

"वसिष्ठ िी ने क्रम चालू रखा- 'ि राम ! अब एक छोटी–ी मनोरिक कथा िुनो, िो पिले कभी निीं ं
ुनायी गयी। यि मैं तुम्हारी सिक्षा के सलए िक्षेप में किता हँ। एक िुन्दर सविाल सबल्वफल िोता ि, सििका आकार कई मील दूरी के िमान सवसृतृत ि। कई कल्प अथवा युगों ंतक भी वि नष्ट निीं ंिोता। मिु अथवा सदव्य अमृत–ी उिकी मिुर िुगस्ि ि। वि असत-कोमल और रिीला िोता ि। वि ि वाश्रेष्ठ फल ि। िमस्त फलों ंका
ारितत्त्व ि। वि इतना दृढ़ और स्तस्थर ि ििा मन्दराचल और इतना अचल ि सक कल्प के अन्त में भीषण तूफानों

ि भी न सिले। वि कभी भूसम पर निीं ंसगरता ि। कभी अपक्कावस्था में निीं ंपाया िाता ि। वि षडरिों ंि पररपूणा ि। भीतर इिके अिंख्य बीिों ंके रूप में करोडों ंिििार ि। इिमें गूदा और मज्जा सनसित ि, िििारे िीवों ंका आश्रय ि और िबका पोषण करते ि। इि अिाियानक फल के गूदे का भाग ि-अनन्त ज्ञान अथवा िुद्ध चैतन्य । इिकी मज्जा ि सचत्–स्तक्त ि िो आकाि, िमय, दूरी, गसत, सदिाएँ तथा सवसि-सविान आसद उत्पन्न करती ि।"

राम बोले-"पूज्य गुरु ! यि िुन्दर दृष्टान्त ि। मैंने सबल्वफल िी कथा (रूपक) को िमझ सलया ि। सबल्वफल स्वयं ब्रह्म िी ि। वि अकुषुण्ण, अिीम िस्तच्चदानन्द परमात्मा ि। वि िवाव्यापी ज्ञान अथवा िुद्ध प्रज्ञा के असतररक्त और कुछ निीं ंि। इि ज्ञान-रूपी सबल्वफल की छाल ब्रह्म के अण्डाणु एवं िमस्त िििार ि।"

वसिष्ठ िी ने उपििंार सकया-"ब्रह्म अत्यन्त स्वासदष्ट आध्यास्तत्मक फल ि। वि आनन्द और ज्ञान का सपण्ड ि। िो व्यस्तक्त इि अत्यन्त अिाियानक फल को खाता ि, वि अमरता प्राप्त करता ि।"

सिस्तखध्वि की कथा

वसिष्ठ िी बोले-"रािा सिस्तखध्वि िापर युग में मालवा दिे में उत्पन्न हए थे। वि बडे न्यायी, दयालु, ियािील, सविालहृदयी, दृढ़ और गुणी थे। िौराष्टर की रानी चूडाला उनकी पत्नी थी। चूडाला सववेक एवं सवचार ि म्पिन्न थीं। वि इि प्रकार सवचार करती थी-'यि 'मैं' क्या ि? मैं कौन हँ? मेरा वास्तसवक स्वरूप क्या ि? मन में सवक्षेप किाँ ि आता ि? इिका कारण क्या ि? यि कै और किाँ ि उद्भूत हआ ि? इि अिभावी 'मैं' को सकि प्रकार नष्ट सकया िाये? क्या कोई अस्तन्तम ित्य ि, िो िरीर और मन ि स्वतन्त्र िो और िो अमर तथा अपररवतानीय िो ? उि परम ित्य को सकि प्रकार प्राप्त सकया िाये? मुस्तक्त क्या ि ? बिन क्या ि? सवद्या अथवा यथाथा ज्ञान क्या ि? असवद्या अथाात् अज्ञान क्या ि? माया क्या ि? यि िििार क्या ि? बिन और असवद्या ि कै छुटकारा पाया िाये ? सकि प्रकार िाश्वत िुख, अमरता और परम िास्तन्त प्राप्त िो ?

'यि िरीर िड ि। यि पाँच तत्त्वों ंका हआ ि। यि निावान् ि। इिका आसद और अन्त ि। अतः 'मैं' ज्ञिा इिके सलए प्रयुक्त निीं ंिो िकती। 'मैं' दि इस्तियों ंके सलए प्रयुक्त निीं ंिो िकता। इस्तियाँ मन के िारा

चलायमान िोती िैं। वे भी िड िैं। वे रि िे उत्पन्न हई िैं। 'मैं' िंज्ञा मन के सलए भी प्रयुक्त निीं ंिो िकती। मन भी िड िै। इिका आसद और अन्त िै। यि आत्म-प्रकािक निीं ंिै। यि तन्मात्राओं ंके िास्त्त्वक अंि िे बना िै। यि बुस्तद्ध के िारा कमा में प्रवृत्त िोता िै। बुस्तद्ध को भी अिंकार िे बल प्राप्त िोता िै। अतः यि 'मैं' निीं ंिो िकती। अिंकार िीव के िारा चलायमान िोता िै, अतएव िीव भी 'मैं' निीं ंिो िकता। यि मात्र छाया िै। ििै िल के िूख िाने पर िूया की परछाई लुप्त िो िाती िै, उिी प्रकार मन-रूपी झील के िूख िाने पर अथाात् िब मन का
नाि कर सदया िाता िै, तो छाया मात्र िो िीव िै, वि तुम िो िाता िै। िस्तच्चदानन्द आत्मा अथवा ब्रह्म िी िै,
इस्ियों, ं प्राण, मन, बुस्तद्ध और िीव का स्रोत िै, विी ित्य अिीम 'मैं' िै। 'मैं' इि आत्मा अथाात् अमर आत्मा िे एक... रानी चूडाला ने ... आत्मा पर ध्यान लगाया और आत्म–िाक्षात्कार प्राप्त कर सलया। वि ज्ञानी और योसगनी भी थी। उिमें यौसगक िस्तक्तयाँ थीं। ं वि आकाि में चल िकती थी। उिमें अष्ट सिस्तद्धयाँ अथवा परा िस्तक्तयाँ थीं। ं

"सिस्तखध्वि को सवश्वाि निीं ंथा सक उिकी पत्नी ज्ञानी और योसगनी िै। चूडाला ने अपने पसत को आत्मज्ञान का कुछ आभाि देने का प्रयत्न सकया, परन्तु वि उिके सनदेिों ंिे लाभास्तित निीं ंहआ।

"सिस्तखध्वि एक अिन्तोषप्रद िीवन-यापन कर रिे थे। उनके सचत्त में िास्तन्त निीं ंथी। एक सदन वि चूडाला िे बोले- 'इि िांिाररक िीवन में मुझे कुछ िुख निीं ंसमलता। मेरे हृदय में सवषाद िै। मैं वन में प्रवेि करके तप और ध्यानाभ्याि करना चािता हँ। मुझे अनुमसत दो।'

"चूडाला बोली- 'मेरे पूज्य स्वासमन् ! िीवन के इि काल में आपको िंन्याि निीं ंलेना चासिए।'

"सिस्तखध्वि ने चूडाला के िब्दों ंकी परवाि न करके आधीरासत्र में रािमिल िे प्रस्थान कर सदया। बारि सदन तक चलते-चलते उन्होंने मन्दार पवात की घासटयों ंके वन में प्रवेि सकया। उन्होंने कठोर तप सकया, मन्त्रोच्चारण सकया और फलों ंपर िीवन-यापन सकया। उनका िरीर धीरे-धीरे क्षीण िोने लगा।

"चूडाला ने िागने पर देखा सक उिके पसत िो पाि में िो रिे थे-निीं ंिैं। उिने िमझ सलया सक वि वन में चले गये िैं। उिे हृदय में भारी दुःख हआ। अठारि वषों तक उिने स्वयं राज्य का िािन सकया।

"अब वि अपने पसत की स्तस्थसत देखना चािती थी। एक रासत्र को अपनी यौसगक िस्तक्त िे आकाि में चलने लगी और मन्दार पवात पर उतरी। वेष बदल कर वि एक मिान् ब्राह्मण के पुत्र कुम्भ मुसन के रूप में प्रकट हई।

"सिस्तखध्वि तुरन्त उठा और अपने िमक्ष उपस्तस्थत ब्राह्मण-पुत्र को नमन सकया, िो पृथ्वी को सबना स्पिा सकये वायु में खडा था। चूडाला ने सिस्तखध्वि को योग में प्राप्त अपनी उच्च उपलस्तियों ंके प्रसत सवश्वस्त करने के सलए िवा में खडे िोने की यौसगक िस्तक्त प्रदसिात की थी।

"सिस्तखध्वि बोला- 'िे कुम्भ मुसन ! मैंने कठोर तप सकया, परन्तु मुझे आत्मज्ञान प्राप्त निीं ंहआ िै। इिके सवपरीत मेरे कष्ट और बढ़ गये िैं।'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'आत्मा का िाश्वत िुख तभी प्राप्त िोता िै, िब व्यस्तक्त गुरु के चरणों ंमें बैठ कर श्रुसतयों ंका श्रवण करे और उपसनषदों ंके मिावाक्यों ंपर सचन्तन करे। सिष्य िाश्वत िुख तब भोग िकता िै,

बि गुरु िारा प्रदत्त ज्ञान उिमें पररपक्व िो िाता िै। आप बिन और मुस्तक्त की प्रकृसत की िन्तों ंके िाथ बैठ कर चचाा क्यों ंनिीं ंकरते? आप इन प्रश्नों ंका उत्तर क्यों ंनिीं ंखोिते -"तू कौन िै? सवश्व कैिे प्रकट हआ? यि कब और कैिे िमाप्त िोगा?" एिा क्यों ंिै सक तुम अज्ञानता की स्तस्थसत में रिते हए इन मूखों ंके स्तखलौनों ंमें आनस्तन्दत िो कर पृथ्वी के भीतर सबल में रिने वाले कीडे की भाँसत रिते िो। िभी वस्तुओं ंमें ज्ञान िी सवशेष्ठ िै। ज्ञान िी िन्म और मृत्यु को उनके दोषों ंिसित नष्ट कर िकता िै। तुम उिे क्यों ंनिीं ंचािते ? सिि प्रकार एक कीडा सिि
लकडी में रिता िै, उिमें सछि करने में िी अपना िीवन पूरा कर देता िै, क्या तुम भी इि प्रकार अपना िम्पूणा िीवन कष्टप्रद तपस्या में िी व्यतीत करना चािते िो? क्या तुम अमरता और परम िाश्वत िास्तन्त सदलाने वाला ज्ञान
प्राप्त करना निीं ंचािते ? अिुद्ध वािनाओं,ं असवद्या और उिके प्रभाव को आत्मज्ञान िारा नष्ट करके िीवनुमुक्त िो िाओ। िुभ कृत्य अिुद्ध वािनाओं ंको नष्ट कर देंगे? अिुद्ध वािनाओं ंका सवनाि िोने पर मन का नाि िो
ायिेगा औरतुम्हारे सितलखध्वि ने कुम्भ मुसन को नमन करके कि-'कृपया आप मुझे अपना सिष्य स्वीकार कर लें, मुझे आत्मज्ञान के रिस्यों ंमें दीसक्षत करें। आप मेरे पूज्य गुरु िो।'

"कुम्भ मुसन ने कि- 'िे रािन् ! मैं तुम्हें दो कथाएँ िुनाता हँ- एक सवद्वान् मनुष्य और सचन्तामसण की तथा िाथी की कथा। एक बार िास्त्रों ंका ज्ञाता एक िनी मनुष्य था। चािी हई प्रत्येक वस्तु प्रदान करने वाली सचन्तामसण को प्राप्त करने िेतु उिने पूिा, प्राथाना एवं अन्य पुण्य कृत्य िम्पन्न सकये। वि इि सचन्तामसण की खोि में सनकला। उिने इि ज्योसतमाय रत् को अपने िमक्ष देखा और मन में िोचने लगा-"यि सचन्तामसण निीं ंिो िकती। सचन्तामसण तो कठोर तपस्या िारा प्राप्त की िा िकती िै। मैंने तो असिक तप सकया निीं।ं" उिने यि स्वणा अविर खो सदया और सचन्तामसण की खोि में भटकता रिा। एक सिद्ध ने उि सवद्वान् को मूखा बनाना चािा। उिने उिके मागा में एक काँच का छोटा टुकडा डाल सदया। उि सवद्वान् मूखा ने इि भंगुर टुकडे को िच्चा रत् िमझ सलया। उिने वि उठा सलया िै और िोचा िै सक यि उिे चािी हई वस्तु देगा। इि सवश्वाि िे उिके पाि िो-कुछ था, वि िब दान में दे डाला। इि झूठे रत् को ले कर िंगल में चला गया। वि नकली रत् उिके सकिी काम का निीं ंथा। अपनी गिन अज्ञानता के कारण उिने दुस्सि कष्ट िि े।

'अब दूिरी कथा िुनो-सवन्ध्य पवात क्षेत्र में एक सविाल िाथी रिता था। उिे एक सिकारी ने िाल में फँिा सलया-उिे बडी मिबूत लोिे की िंिीर बाँि दी गयी। उिके बडे-बडे तीक्ष्ण दाँत थे। िाथी ने दृढ़ िंिीरों ंको तोड डाला और भाग गया। वि मनुष्य पृथ्वी पर सगर पडा। उिने एक बडा गड्ढा खोद कर उिे पत्तों ंव घाि िे भर सदया। िाथी सफर गड्ढे में फँि गया और सिकारी के िारा सफर िताया िाने लगा। यसद िाथी ने उि मनुष्य को, िब वि भूसम पर सगरा हआ था, मार डाला िोता तो वि गड्ढे में न सगरता । इिी प्रकार सिन लोगों ंमें भसवष्य में िोने वाली दुघाटनाओं ंको रोक कर उिके प्रसत िुरक्षा के उपाय करने की दूरदसिाता निीं ंिोती, वे सनिय िी सवन्ध्याचल के िाथी की भाँसत कष्ट पायेंगे।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'िे सदव्य युवक। कुम्भ मुसन ! कृपया मुझे सचन्तामसण और िाथी की कथाओं ंका भाव स्पष्ट करके िमझाइए ।'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'सचन्तामसण की खोि करने वाले सवद्वान् को िास्त्रों ंका केवल िैद्धास्तन्तक ज्ञान था, ित्य का अनुभव (तत्त्वज्ञान) संकंसचत् निीं ंथा। उिने रत् की खोि की, परन्तु यि निीं ंिानता था सक वि िै क्या। विी मनुष्य तुम स्वयं िो। यद्यसप तुम िमस्त िमिास्त्रों ंमें दक्ष िो, परन्तु तुममें सचत्त की िास्तन्त निीं ंिै। तुमने अपना राज्य, स्त्री तथा अन्य िम्बस्तियों ंको त्याग सदया िै, िोँ यथाथा सचन्तामसण थी। तुम्हें िच्चे त्याग का कुछ ज्ञान निीं ंिै। यि िमझ लो सक अिंकार और कामनाओं ंके सवनाि िे मनुष्य को पूणाता और िास्तन्त समलती िै। िरीर को त्यागने िे निीं,ं वरन् वािनाओं ंऔर अिं-भाव को त्यागने िे िी िाश्वत िास्तन्त और िाश्वत िुख समलता

ीं। तुमने िच्चे त्याग-रूपी रत् को खो सदया; अपनी दोषपूणा दृसष्ट िे कष्टप्रद तपःिीिना-रूपी टूटे हए झूठे काँच के टुकडे को चुन सलया। अतएव तुम्हें सचत्त की िास्तन्त निीं ंिै। अमूल्य सचन्तामसण तुम्हारे िमक्ष िोते हए तुमने गलत िमझ सलया सक तप िे िास्तन्त समलेगी। तुमने व्यथा में िी िोच सलया सक तुम्हें सचन्तामसण समल गयी। अन्त में केवल यि िाना सक तुम्हारी उपलस्ति एक टूटे हए काँच के टुकडे के िमान भी निीं ंथी।'

"कुम्भ मुसन बोलते रिे-'िुनो, िे मिान् रािा ! अब मैं तुम्हें सवन्ध्य पिासडयों ंके िाथी की कथा िुनाता हँ। तुम्हीं ंवन में वि िाथी िो। दो लम्बे दाँत वैराग्य और सववेक के िैं। िाथी का सिकारी अज्ञान िै। ििसे प्रकार मनुष्य िारा बाँि िाने पर िाथी ने अत्यसिक कष्ट िि, उिी प्रकार तुम अज्ञान िारा सदये हए कष्ट िि रिे िो। ििै बलिाली िाथी लोिे की िंिीरों ंिे बँिा था ऐिे िी तुम वािना-रूपी लोिे की िंिीरों ंिे िकडे हए िो। वस्तुतः कामनाएँ लोिे िे भी असिक दृढ़ िोती िैं। लोिे को िंग लगता िै और कालान्तर में िमाप्त िो िाता िै, परन्तु कामनाएँ बढ़ती िाती िैं और तुम्हें अत्यसिक दृढ़ता िे िकड लेती िैं।

'ििसे प्रकार िाथी ने लोिे की िंिीरों ंको तोड डाला, ऐिे िी तुमने भी राज्य, सवषय-भोग, स्त्री, िम्बस्तियों ं और समत्रों ंआसद के बिनों ंको तोड डाला। िे रािन् ! लोिे की िंिीरों ंको तोडना िम्भव िै; परन्तु कामनाओं,ं आिाओं ंऔर अपेक्षाओं ंके बिनों ंको तोडना अत्यसिक कसठन िै। िाथी का सिकारी िौदी िे सगर गया। यि इि बात का प्रतीक िै सक इस्तिय-भोगों ंके प्रसत उदािीनता एवं सनरािस्तक्त िारा तुमने अपनी अज्ञानता को नष्ट कर सदया िै। परन्तु तुम्हारा त्याग िच्चा त्याग निीं ंथा। तुमने त्याग के रिस्य को निीं ंिमझा िै। तुमने अभी िब-कुछ निीं ंत्यागा िै।'

"सिस्तखध्वि किने लगा- 'आप कैिे किते िैं सक मैंने िब-कुछ निीं ंत्यागा िै, िब सक मैंने अपना राज्य, मिल, िारी िम्पसत्त और अपनी प्यारी पत्नी तक को भी त्याग सदया? क्या मैंने िब-कुछ निीं ंत्यागा िै? क्या यि िब-कुछ पूणा एवं यथाथा त्याग निीं ंिै? आप मुझिे और क्या छुडवाना चािते िैं?'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'यद्यसप तुमने अपना राज्य, मिल, समत्र–िम्बिी और पत्नी तक को त्याग सदया, परन्तु यि िब िच्चा त्याग निीं ंिै। ये िब वास्तव में तुम्हारे निीं ंिैं। ये स्वयं आते िैं और तुमिे दूर भी चले िाते िैं। तुमने अपना अिं-भाव और कामना निीं ंत्यागी। कामना और अिं को त्याग कर िी तुम दुःखों ंिे मुस्तक्त पा िकते िो और िाश्वत िुख तथा िाश्वत िास्तन्त प्राप्त कर िकते िो।'

"तब सिस्तखध्वि बोला-'अब िंगल िी मेरा िब-कुछ िै। वे चट्टानें, वृक्ष और झासडयाँ िी अब मेरी िम्पसत्त िैं। मैं इन िबको भी छोडने को तत्पर हँ, यसद यि यथाथा त्याग िो।'

"कुम्भ मुसन बोले- 'वन को त्यागना िच्चा त्याग निीं ंिोगा। सफर भी तुममें कामना और अिंकार िेष रिेगा।'

"सिस्तखध्वि ने अपनी मृगछाला, माला, कुिा, समट्टी के बतान और कमण्डल को इकट्ठा करके िूखी घाि िे उनमें आग लगा दी। फूि की कुसटया को भी आग लगा दी। सफर कुम्भ मुसन िे बोला- 'मैं िोचता हँ सक अब मैंने पूणा और िच्चा त्याग कर सदया िै– सदव्य बालक! क्या और भी कुछ त्यागना िेष रि िायेगा ? अब और क्या करूँ?'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'सकतने दुःख की बात िै, तुमने तो कुछ निीं ंत्यागा िै।'

"सिस्तखध्वि अपने मन में िोचने लगा-'अब मेरे पिा यि मां, िुसिर और िसड्डयों ंिे सनसमात दिे रि गयी िै। मैं अभी इि पवात की चोटी पर चढ़ कर इि पृथ्वी पर सगराये देता हूँ, यि टकरा कर टुकडे-टुकडे िो ायेगी।' यि िोचता हआ वि एक चट्टान की चोटी पर चढ़ गया और अपने िरीर को नीचे सगराने िी वाला था सक उिके गुरु-रूप कुम्भ मुसन ने उिे रोका।

"कुम्भ मुसन बोले- 'तुम सकतनी मिान् मूखाता का कृत्य कर रिे िो? तुम अपने इि सनदोष िरीर को नष्ट करने की चेष्टा क्यों ंकरते िो? तुम्हारे आत्मज्ञान-प्रास्तप्त में यि िरीर सकि बाक िो िकता िै? इि िरीर का अन्त िोना पूणा एवं यथाथा त्याग निीं ंिोगा। इि िरीर का एक ितुरु िै िो इिे सवसक्षप्त करता िै, िो िरीर को गसत देता िै और िो िमस्त िन्म और कमों के बीि बोता िै। यसद तुम अपने िरीर के इि ितुरु िे छुटकारा पा िको, तभी तुम्हारा िवा त्याग िोगा।'

"सिस्तखध्वि ने पूछा- 'िे कुम्भ मुसन ! मुझे बताओ सक वि क्या िै िो िरीर को उिेसलत करता िै? िमारे पुनिान्मों ं का मूल क्या िै? िमारे भावी िन्मों ंके कमाँ और भोगों ंकी िड क्या िै? एेिा वि क्या िै सक सििे बचने िे िम इि िन्त्पूणा ब्रह्माण्ड में िब-कुछ त्याग िकेंगे। िे सदव्य युवक! मुझे वि उपाय बताओ सििे मैं उि त्याग िकूँ िो इि दिे को गसत देता िै अथवा सवसक्षप्त करता िै।'

"कुम्भ मुसन बोले- 'िमस्त दु:खों ंऔर कष्टों ंका मूल कारण यि मन िै। इि सवसभन्न उपासियों ंिे िाना िाता िै—िीव, प्राण, बुस्तद्ध और अिंकार। यि िंकल्पों ंको िन्म दे कर िीव को समथ्या पदाथों िे िोडता िै। यि भ्रम का स्थान िै। यिी िमारी दिे का स्रोत िै। यि न िड िै न चेतन । िदा सवसक्षप्त रिने वाला यि मन िी इि सवश्व को बनाता िै। यिी बिन उत्पन्न करता िै। िैिे प्रकार वायु वृक्ष को सिला देती िै, उिी प्रकार मन िरीर को सिलाता िै और सवसक्षप्त करता िै। मन िी िमस्त कमों का बीि िै। िो व्यस्तक्त अपने मन के अिीन िै, वि िदैव सचन्ताओं,ं परिसनयों,ं सवक्षेपों ंऔर कष्टों ंिे सघरा रिता िै। अतएव इि मन का त्याग करने िे तुम वास्तव में िंिार में िब-कुछ त्याग दोगे। मन का त्याग िी िच्चा त्याग िै। यिी तुम्हें िाश्वत िुख और आत्मज्ञान प्राप्त करने में ििायक िोगा। आत्मा का ज्ञान िोने पर तुम ब्रह्म अथाात् परमात्मा िे एकरूप िो िाओगे ।'

"सिस्तखध्वि किने लगा- 'िे मुसन ! यि मन क्या िै? इिकी यथाथा प्रकृसत क्या िै? इि मन का कारण क्या िै। इि दुष्ट मन का मैं सकि प्रकार नाि कर िकता हूँ?'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'मन वािनाओं ंकी गठरी िै। मन की यथाथा प्रकृसत वािनाएँ िी िैं। मन और वािनाएँ पयाायवाची िब्द िैं। अज्ञानी मनुष्य के सलए वािनाओं ंअथाात् िूक्ष्म आकांक्षाओं ंिे छुटकारा पाना अत्यन्त कसठन िै। मन किलाने वाले वृक्ष का बीि 'अिं' िै। मन िरीर की गसतिीलता का कारण िै। हृदय-रूपी कमल के चारों ं ओर मँडराने वाली मिुमक्खी िै। अिंकार-रूपी बीि िे प्रसुफुसटत िोने वाला अंकुर बुस्तद्ध िै। मन-रूपी वृक्ष का तना िरीर िै। िंकल्प बहुगुसणत िाखाएँ िैं। वे बुस्तद्ध-रूप अंकुर िे उत्पन्न िोते िैं। कृत्यों ंके अनुरूप मन चार रूप िारण करता िै-मन, सचत्त, बुस्तद्ध और अिंकार। िब यि िंकल्प-सवकल्प करता िै, तो मन िै। िब सकिी बात का स्मरण करता िै, तो सचत्त िै। िब सनिय करता िै, तब बुस्तद्ध िै। िब यि अपने-आपको आरोसपत करके असभमान में भरता िै, तब अिंकार िै। सनत्य-प्रसत मन-रूपी वृक्ष की िाखाओं ंको काटते रिो और अन्त में पूणारूपेण उिे िड िे नष्ट कर दो। डासलयों ंको काटना केवल गौण कृत्य िै। मुख्य काम िै इि असनष्टकर वृक्ष को िड िे उखाड फेंकना । वािनाओं ंकी िाखाएँ कमों ंकी अिंख्य फिलें उत्पन्न कर देंगी। ज्ञान रूपी तलवार िे वािनाओं ंको नष्ट कर दो। तुम्हें िास्तन्त समलेगी। मन-रूपी वृक्ष के बीि अिंकार को भस्म कर दो।'

"सिस्तखध्वि बोला- िे िम्माननीय मुसन ! मुझे बताइए सक मन-रूपी वृक्ष के बीि को भस्म कर डालने वाली असि क्या िै?'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'मन-रूपी वृक्ष के बिी को भस्म कर डालने बाली असि ि-ब्रह्मज्ञान अथाात् आत्मा का ज्ञान, िो 'मैं' की यथाथा प्रकृसत की अिवा 'मैं कौन हँ' की खिो िे प्राप्त सकया िा िकता ि।'

"सिस्तखध्वि किने लगा- 'िे िािु' मैंने बारम्बार 'मैं' की उत्पसत्त के सवषय में सवसभन्न उपायों ंिे खिो की िै। 'मैं' न दिे हँन प्राण, न यि मन हँ न बुस्तद्ध और न इस्तियाँ न अिंकार ।'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'यसद तुम इनमें िे कोई निीं ंिो, तो तुम अपने सवषय में वसुतुतः क्या िोचते िो? यसद 'मैं' इनमें िे कुछ निीं ंिोता तो अन्य क्या था ?'

"सिस्तखध्वि बोला- 'िे असत-पूज्य िन्त। मैं अपने को प्रबुद्ध और पसवत्र आत्मा अथवा िुद्ध चैतन्य अनुभव करता हँ। मैं मन के बिी, अपने अिं िे छुटकारा पाने में अिमथा हँ। मैं उिका नाि करने का अपनी ओर िे पूणा प्रयाि करता हँ। सितना िी मैं उिे छोडने की चेष्टा करता हँ, वि उतना िी असिक मुझे िकडता िै।'

"कुम्भ मुसन बोले- 'प्रत्येक परराणाम सकिी-न-सकिी कारण िे उत्पन्न िोता िै। यि प्रकृसत का िवात्र िामान्य सनयम िै। तुम अिंकार का कारण खिोो । कारण मालूम करके मुझे बताओ सक वि क्या िै?'

"सिस्तखध्वि ने उत्तर सदया- 'केवल माया मेरे अिंकार का कारण िै। ज्ञान अिंकार का कारण िै। िे सदव्य पुरुष । मुझे िमझाओ सक बाह्य पदाथों के सवचारों ंका सकि प्रकार नाि सकया िाये ? बाह्य दृश्य अथवा नाम-रूपों ं का मैं सकि प्रकार सनषेि कर िकता हँ?'

"कुम्भ मुसन बोले- 'यसद तुम मुझे ज्ञान का कारण बताओ, तो मैं तुम्हें कारण और परराणाम की प्रसक्रया, सवचारों ंका दमन तथा अिंकार का सवनाि करने के उपाय बताऊँगा।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'ज्ञान िरीर, वृक्ष, नदी, पिाड, गाय और घोडा आसद समथ्या पदाथों िारा उत्पन्न िोता िै। यसद पदाथों का अस्तस्तत्व निीं ंिै, तो िम न सवचार कर िकते िैं, न कुछ िान िकते िैं। यसद पदाथा निीं ंिै, तो िमें पदाथों का ज्ञान िी निीं ंिोगा और मन का बिी अिंकार सवीन िो िायेगा।'

"कुम्भ मुसन बोले- 'यसद िरीर और अन्य पदाथों का अस्तस्तत्व िै, तो दृश्य पदाथों के ज्ञान का भी अस्तस्तत्व िै। क्योंसंक िरीर एवं अन्य पदाथों का वास्तव में अस्तस्तत्व निीं ंिै, तो सफर ज्ञान का आिार क्या िै? यसद तुम अपनी दिे को यथाथा मान कर उि पर सनभार िो, तो मुझे बताओ- रािन् ! िब तुम्हारी आत्मा दिे िे अलग िो िायेगी, तो तुम्हारा ज्ञान सकि पर सनभार िोगा ?'

"सिस्तखध्वि ने उत्तर सदया- 'िरीर िो िबके िारा दृश्यमान् िै और िो िमस्त कमों का फल भोगता िै, उिे कोई अवास्तसवक अथवा काल्पसनक निीं ंमान िकता। िो िरीर िबके िारा स्पष्ट देखा िाता िै और िो िाथ, पाँव आसद िे िम्पन्न िै तथा िब प्रकार की सक्रयाएँ करता िै, उिे कौन नकार िकता िै? िम यि कैिे कि िकते िैं सक िरीर िै िी निीं।ं'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'िन्म िे पूवा दिे निीं ंथी; मृतुयु के बाद भी दिे निीं ंरिती। िो न प्रारम्भ में िै, न अन्त में रिता िै; िो केवल मध्य में िी दृसष्टगोचर िोता िै, वि समथ्या िै और वसुतुतः सबना अस्तस्तत्व वाला िै। यि िरीर िो कमों के िारा उत्पन्न िोता िै, वि स्वयं कारण निीं ंिै। परराणामतः बुस्तद्ध का प्रभाव भी अस्तस्तत्व रसित िै। िो सकिी कारण िे उत्पन्न निीं ंहआ िो, उिका अस्तस्तत्व निीं ंमाना िा िकता। उिका ज्ञान अथवा चेतना िो उिमें िै, वि भी समथ्या िोगी। अतएव, अिंकार एवं अन्य प्रभाव िो ज्ञान की भ्रास्तन्त िे उत्पन्न िोते िैं, वे भी

अस्तस्तत्व रसित ें। ो कुछ भी सबना िचे्चे कारण के सवद्यमान प्रतीत ोता ै वि इतना ी समथ्या ै सितना रेसगस्तान में मृगमरीसचका। ारे पदाथा ो कारण की प्रकृसत के निीं ंें, झूठे ैंि– ीप में चाँदी अथवा खमे्भे में मनुष्य। रीर और अिकार के अस्तस्तत्व में सवश्वा करना एिा ै िै वन्ध्या स्त्री के पुत्र का शृंगार करना।'

"सिस्तखध्वि किने लगा- 'क्या िम अपने सपताओं ंको अपने रीरों ंका न्मदाता एवं कारण निीं ंमान किते ?'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'सपता कारण निीं ंो िकता। उि अपने सलए कोई कारण चासिए।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'िम सनिय ी अपने माता-सपताओं ंको अपने न्म का कारण मान िकते ें। िमारे माता-सपता के न्म का कारण िमारे दादा-दादी थे। सफर ब्रह्मा िमारे प्रथम परदादा को मानव-पीढ़ी िमारे उत्पसत्तकताा मानेंगे। े श्रद्धेय मुसन! क्या मेरा कथन ी निीं ंै?'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'मुख्य ृसष्टकताा, परदादा ब्रह्मा मूल कारण निीं ंो िकता, क्योंसंक उिके न्मि का भी कोई कारण ोना चासिए। ृसष्ट े पिले केवल अैत, स्वयमूभू, स्वयं-प्रकािमान् परब्रह्म ी आलोसकत ोता ै। यि ृसष्ट केवल प्रतीसत मात्र ै। मृगमरीसचका में ल की भाँसत यि प्रकट ोती ै। अतएव यि सवचार दोषपूणा ै सक ब्रह्मा ृसष्ट का रचसयता ै। परदादा का अस्तस्तत्व समथ्या ै। ृसष्ट नाम का कुछ निीं ंै। मिस्त ीवों ंकी ृसष्ट भी समथ्या ै (यि परब्रह्म के दृसष्टकोण े ै)

"सिस्तखध्वि बोला- 'िचमुच परब्रह्म ी ब्रह्म का कारण ै, े पूज्य मुसन ! क्या यि त्य निीं ंै?'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'परब्रह्म वि ै ो अिन्मा, अमर, कारण रसित, अपररवतानीय, अकाल, अकताा, अनासद और अनन्त ै। वि कारण निीं ंो िकता । न वि कताा ो िकता ै न भोक्ता। केवल एक ीिन्त त्य ै। वि ब्रह्म ै। ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करके असवद्या का सविना करो। मूपूणा ब्रह्माण्ड पूणातया सवलीन ी ायेगा और आप िवात्र स्वयं का अथाात् आत्मा का दिन करोगे।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'े पूज्य गुरु ! अब मैं त्य का दिन कर रिा हँ। अब मैं अनुभव करता हँ सक मैं ुद्ध, िवाव्यापी, स्वतन्त्र, अमर आत्मा हँ। मैं ान्त हँ। मैं पूणा आनन्द आत्मा में स्तस्थत हँ। दृश्य गत् का यथाथा अस्तस्तत्व निीं ंै। माया मुझे स्पिा निीं ंकर िकती। मैं ब्रह्म हँ। मैं असवभाज्य स्वयं-प्रकािमान् आत्मा हँ। मैं ब्रह्म में लीन हँ।'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'गुरु के ब्द सिष्य के मन में तभी स्थान पायेंगे, ब सक सिष्य मोक्ष के ीिनि-चतुष्टय े म्पन्न ोगा, यसद वि ान्त और अकुषि ै, यसद वि सनररिक्त और अन्तमुाखी ै और यसद उिमें आत्मि–ंयम ै। तुम ज्ञान के प्रकाि े पररपूणा ो। तुमने लक्ष्य प्राप्त कर सलया ै। तुम आत्मज्ञान े उज्ज्वल्यमान ो।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'े पूज्य गुरु ! ीवनुमुक्त आत्माएँ सवश्व के कल्याण ेतु कमा करती ें। क्या वि मन के ारा काया निीं ंकरतीं? ं सबना मन के कोई कैि काम कर िकता ै? कृपया मुझे यि मझाइए।'

"कुम्भ मुसन बोले- 'मन दो प्रकार का माना ाता ै, ुद्ध और अिुद्ध। ो आकांक्षा के सवचार े ंयुक्त ै, वि अिुद्ध मन ै और ो सबना आकांक्षा वाला ै, वि ुद्ध मन ै। अथाात् ुद्ध मन को उच्चतर मन किते ें और अिुद्ध मन को 'सनम्तर मन' । मनुष्यों ंके सलए उनका मन ी बिन अथवा मोक्ष का कारण ै। ो मन इस्तिय-सवषयों ंकी ओर आकृष्ट ोता ै, वि बिन की ओर प्रवृत्त ोता ै। ो इि प्रकार आकृष्ट निीं ंोता, वि

मोक्ष के मागा पर अग्रिर ि◌ै। क्योंसंक सवषय-पदार्थों के प्रसत आकृष्ट न ि◌ोने वाले मन को मुस्तक्त समलती ि◌ै। मोक्ष के पिात् उिका सचत्त भौसतक पदार्थों की इच्छा ि◌े सबलकुल मुक्त ि◌ो ि◌ाता ि◌ै।

'अिुद्ध मन अिुद्ध विानाओं,◌ं रिर्◌् तथा तम्◌् ि◌े पूणा रिता ि◌ै और ि◌ुद्ध मन ि◌ुद्ध सवचारों ◌ंतथा ि◌त्त्व ि◌े पररपूणा रिता ि◌ै। अिुद्ध विानाएँ पुनिान्म का कारण बनती ि◌ैं। ि◌ुद्ध विानाओं ◌ंि◌े पूणा ि◌ुद्ध मन मोक्ष अथाात् न्मि-मरण ि◌े मुस्तक्त की ओर प्रवृत करता ि◌ै। ि◌ांि◌ाररक वृसत्त वाले मनुष्य सनम्तर अथवा अिुद्ध मन ि◌े कमा करते ि◌ैं। वे अपने कमों के बिन में ि◌ैं। मुक्त ि◌न्त ि◌न ि◌ुद्ध अथवा ि◌ास्तत्त्वक मन ि◌े काम करते ि◌ैं। वे अपने कमों ि◌े निीं ◌ंबँिते, क्योंसंक उनमें अि-भाव निीं ◌ंि◌ोता और वे अपने कमों के फल की आकांक्षा निीं ◌ंकरते ि◌ैं।

'अिुद्ध मन अस्तस्थर ि◌ोता ि◌ै। वि ि◌दैव चंचल रिता ि◌ै। वि एक पदाथा ि◌े दूिरे पदाथा पर दौडता ि◌ै। वि दैिव ऐस्तिक सवषयों ◌ंकी कामना करता हआ अनेक प्रकार के भय और कष्टों ◌ंि◌े पीसडत रिता ि◌ै। ि◌ुद्ध मन स्तस्थर िोिता ि◌ै। वि ब्रह्म-सवचार करता ि◌ै। परम ि◌त्ता में वाि करता ि◌ै। वि ऐस्तिक सवषयों ◌ंकी ओर निीं ◌ंभटकता ि◌ै। वि बि प्रकार के भय और कष्टों ◌ंि◌े मुक्त रिता ि◌ै।

'अिुद्ध मन विानाओं ◌ंके असतररक्त कुछ निीं ◌ंि◌ै, ि◌ो अिख्य ि◌न्मों ◌ंका कारण बनती ि◌ैं। मन अपनी चंचलता ि◌े अनेक प्रकार की विानाओं ◌ंका सिकार बनता ि◌ै। चंचलता रिर्◌् और सवक्षेप–स्तक्त ि◌े उत्पन्न ि◌ोती ि◌ै। बि मन अस्तस्थर ि◌ोता ि◌ै, तो एक सवषय ि◌े दूिरे सवषय पर दौडता ि◌ै।

'अज्ञानी अथवा ि◌ांि◌ाररक व्यस्तक्त अिुद्ध मन के ि◌ारा ि◌ासित ि◌ोता ि◌ै। वि सनम्तर मन के सनदेिानुिार चलता ि◌ै। परनुतु ि◌न्त अथवा ज्ञानी मन को अपने पूणा सनयन्त्रण में रखता ि◌ै। वि अन्तप्राज्ञा की सुफुरणा ि◌े काया करता ि◌ै।

'िसि प्रकार ि◌ोबी वस्त्र की मैल को ि◌ूल (रेत) ि◌े ि◌ाफ करता ि◌ै, िसि प्रकार यात्री अपने पाँव के काँटे को दूिरे काँटे ि◌े सनकालता ि◌ै-उिी प्रकार अिुद्ध मन का ि◌ुद्ध मन के ि◌ारा सवनाि सकया ि◌ाना चासिए।

'िसिने अपने अिुद्ध एवं सनम्◌् मन का नाि कर सदया ि◌ै, उिने पुनिान्मों ◌ंको बहत दूर भगा सदया ि◌ै। कोई कष्ट उि प्रभासवत निीं ◌ंकरेगा। ि◌न्त सिन ि◌ुद्ध विानाओं ◌ंके ि◌ारा काया करते ि◌ैं, वे उनके पुनिान्मों ◌ंका कारण निीं ◌ंबनती ि◌ैं।

'ि◌ब तुम आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान प्राप्त करोगे, ि◌मस्त अिुद्ध विानाएँ पूणातया भस्म ि◌ो ि◌ायेंगी। ध्यान, पि, कीतान, प्राणायाम, ब्रह्म-सवचार एवं ि◌ासमाक पुस्तकों ◌ंके अध्ययन एवं ि◌त्◌्संग ि◌ुद्ध विानाओं ◌ंको उत्पन्न करते ि◌ैं।

'ि◌ब मन पदार्थों की आकांक्षा ि◌े मुक्त ि◌ोगा और आत्मा में सवश्राम करेगा, तुम ि◌ाश्वत आनन्द का अनुभव करोगे।

'ि◌ब मन पदार्थों की विाना एवं कामना ि◌े मुक्त ि◌ो कर सनयस्तन्त्रत हआ हृदय में केस्तित ि◌ोता ि◌ै और ि◌ब यि ि◌त्य अथाात् आत्मा को प्राप्त कर लेता ि◌ै, तब तुम मोक्ष अथाात् ि◌ीवन का अस्तन्तम लक्ष्य प्राप्त कर लोगे ।

'ि◌े रिान् ! तुम अपने मन को चंचल मत ि◌ोने दो। इि भौसतक पदार्थों की ि◌मस्त कामनाओं ◌ंि◌े ि◌दैव मुक्त रखो। ि◌ुद्ध सचत्त अथवा उच्चतर सचत्त की िि◌ायता ि◌े अिुद्ध सचत्त का नाि करो और सफर उच्चतर सचत्त ि◌े भी ऊपर उठ ि◌ाओ। ईश्वर करे, तुम सिला की भाँसत दृढ़ रिो! तुम ि◌ास्तत्त्वक मन ि◌े ि◌म्पन्न बनो! पूणा आनन्द-स्वरूप आत्मा में ि◌दैव ि◌ास्तन्तपूवाक सवश्राम करो!'

"सिस्तखध्वि बोला- 'ि पूज्य गुरु! मुझे इ ि ृ सष्ट के ि मारम्भ और सवनिा के ि म्बि में कुछ बताओ। वैयस्तक्तक आत्मा के सवचार को ि म सनत्य—ुद्ध एवं प्रकासित ब्रह्म तथा अथाात् परम ित्ता के सवचार के िाथ कै समसश्रत कर िकते िैं?'

"कुम्भ मुसन बोले- 'िब-कुछ दृश्यमान् सवनिीील िै। प्रत्येक प्रलय अथवा मिाकल्प के अन्त में वे िब अदृश्य िो िाते िैं। िान्त, िवाव्यापक, आनन्द-स्वरूप, अकुषुण्ण, िुद्ध और ज्योसतमाय ब्रह्म िदैव सवद्यमान रिता ि। सिि प्रकार िल एक सनसित िमय पर लिर बन िाता िै, उिी प्रकार यि सवश्व परम ित्ता अथाात् ब्रह्म में उभरता और सवलीन िोता िै। सिि प्रकार िोने में ि कंगन, अँगूठी आसद सवसभन्न प्रकार के आभूषण सनकलते िैं, उिी प्रकार ब्रह्म ि िी नाम-रूपों ंका यि ििंिार उद्भूत िोता िै। यि सवश्व सचन्मात्र के असतररक्त कुछ निीं ंिै, सिि प्रकार लिर िागर के िल के असतररक्त कुछ निीं ंिै।

'ब्रह्म, सिव, ित्य, सचन्मात्र, ित् और सचत्-ये िब पयाायवाची िंज्ञाएँ िैं। मन की संकंसचत् िलचल ि यि सवश्व उत्पन्न िोता िै। यसद तुम आत्मज्ञान प्राप्त कर लो, यि ब्रह्माण्ड अदृश्य िो िायेगा। रस्सी में िपा की भाँसत ब्रह्म में यि समथ्या ििंिार प्रतीत िोता िै। यि सवश्व ब्रह्म का सववता ि िै कंगन, अँगूठी आसद स्वणा के सववता िैं। अज्ञानी के सलए िी यि सवश्व ित्य िै। गम्भीर ध्यानाभ्याि करने ि तुममें सदव्य दृसष्ट सवकसित िोगी और तुम ब्रह्म अथवा परम ित्ता को अन्तदृासष्ट ि िाक्षात् देख िकोगे।

'केवल ब्रह्म िी यथाथा अस्तस्तत्व िै। वि िवाात्मा िै। वि पूणा िै। वि इ िगत् का िार रूप िै। वि ऐि एकत्व ि िो प्रकृसत की िमस्त सवसविताओं ंएवं सवसभन्नताओं ंके भीतर िैत-भाव को कभी स्वीकार निीं ंकरता।

'सवश्व की प्रकृसत और िमारे अिंकार के सवषय में अनुिंिान करना व्यथा िै, क्योंसक वास्तव में इनका अस्तस्तत्व निीं ंिै। वे रस्सी में िपा की भाँसत समथ्या प्रतीसत मात्र िैं। अिंकार और सवश्व के भाव अथिीन िैं; ये मस्तस्तष्क की उपि मात्र िैं। मैं, तू, यि, वि आसद एक-दूिरे की पिचान िेतु सनकाले हए मनुष्य के सदये हए नाम ि। ये िमारी कल्पना की उपि िैं, वास्तव में इनका अस्तस्तत्व निीं ंिै। मैं, तू, यि, वि आसद का ज्ञान िमारे स्वप्नों ं की असभव्यस्तक्त की भाँसत िै।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'ि पूज्य मुसन ! अब मैं िमझ गया सक मनिी भी कोई वसुतु निीं ंिै।'

"कुम्भ मुसन बोले- 'सवश्व का वास्तव में कोई अस्तस्तत्व निीं ंिै। कभी भी, सकिी भी स्थान पर मन नाम की कोई वसुतु निीं ंिै। िब सवश्व का िी अस्तस्तत्व निीं ंिै, तो मन कै िो िकता िै। यि सवश्व ब्रह्म का िी िार िै। ब्रह्म ि सभन्न कोई सवश्व निीं ंिै। िो-कुछ िमारे िमक्ष प्रसुतुत िै, ब्रह्म में िी उिका अस्तस्तत्व िै। सिि प्रकार वायु का झोंका वायु में सवलीन िो िाता िै, आभूषण स्वणा में सवलीन िो िाते िैं, उिी प्रकार यि सवश्व ब्रह्म में सवलीन िो िाता ि। िन्त इ सवश्व को निीं ंदेखता; वि िवात्र आत्मा को देखता िै। यि सवश्व तो केवल अज्ञासनयों ंकी दृसष्ट में िी प्रकट िोता िै। यि सवश्व उतना िी अित्य िै, सितना टाचा की घूमती हई रोिनी ि बना वृत्त । मन अज्ञानता का दूिरा नाम िै। मन कुछ निीं ंिै। यि ित्य प्रतीत िोने वाला अित्य िै। मनुष्य के पुनिान्मों ंकी कारक स्थूल वािनाएँ िी मन किलाती िैं।

'ि रािन्! तुम व ब्रह्म ि एकात्मकता स्थासपत करो, िो अिन्मा, आद्यन्त रसित, अकुषुण्ण, िाश्व असवभाज्य एवं सनत्य िान्त ि और िदैव परम िास्तन्त में सनवाि करो।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'ि िन्त! मुझे बताइए सक िीवनुमुक्त लोग इ ििंिार में कै रिते िैं?'

"कुम्भ मुसन बोले- 'िीवनुमुक्त िन्त विानाओं ंअथवा इच्छाओं ंिे मुक्त िोते िैं। उन्ोंनें अपने सचत्त का निा कर सदया िै। उनको अपनी इस्तियों ंपर पूणा सनयन्त्रण िोता िै। वे कल्याणकारी गुणों ंिे िम्पन्न िोते िैं। उनमें दैव िमता और िमदृसष्ट रिती िै। उनमें अपने कमों के फल की तथा स्वगा की कोई कामना निीं ंिोती । िीवन की प्रत्येक स्तस्थसत में उनका मानसिक िनुतुलन बना रिता िै।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'िे पूज्य गुरु! मुझे बताइए सक सकिी वसुतु में गसत और अचलता एकि–ाथ कैिे िो किती िै?'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'केवल एक वसुतु िै-ब्रह्मन् । यिी एक िार िै। यि िवाव्यापी िै, अवणानीय, असचन्त्य तथा सनगुाण िै। मनुष्य दीघा काल तक आत्मज्ञानि–म्बिी ग्रन्थों ंके अध्ययन, ित्संग और ितत ध्यान िारा आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर िकता िै।

'यि आत्मा िागर के िल के िमान िै। सिि प्रकार िल मिान् लिरों ंिे सिलता िै, उिी प्रकार आत्मा बुस्तद्ध िारा उत्तेसित िोता िै। अज्ञानी को यि ब्रह्माण्ड-रूप सदखायी देता िै। बुस्तद्ध िदा व्यस्त और सक्रयिील रिती िै, परनुतु आत्मा अचल और सनस्तिय िै। बुस्तद्ध में रंचमात्र सुफुरणा ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करती िै। िब बुस्तद्ध सक्रयिीलता िे सवरत िो िाती िै, तो दृश्यमान् िगत् का लोप िो कर ब्रह्म िी प्रकािमान् िोता िै। िमस्त गसत बन्द िो कर अचल ब्रह्म का अस्तस्तत्व रि िाता िै। िे रािन् ! तू वि अमर, अचल, आनन्द-स्वरूप ब्रह्म िै। यि मिझ कर िमासि में अचल सिला की भाँसत स्तस्थत िो िाओ।'

"सिस्तखध्वि मूसता की भाँसत िान्त और मौन िो कर बैठ गया और िमासि में प्रवेि करके तीन सदन तक इि स्तस्थसत में रिा।

"इि बीच कुम्भ मुसन चूडाला के रूप म अपने वास्तसवक रूप को िारण करके अपनी यौसगक िस्तक्त िे आकाि-मागा िारा अपने मिल में पहुँच गयी। उिने अपने अनुपस्तस्थत स्वामी के कताव्यों ंको िँभाला। तीन सदन पिात् वि आकाि-मागा िे गयी। सफर कुम्भ मुसन का वेि िारण सकया और िंगल में सिस्तखध्वि की कुसटया में पहुँची।

"उिने देखा सक रािा सनसवाकल्प िमासि में था। उिने उि िमासि िे िगाना चािा और सिंिनाद सकया। यद्यसप िंगली पिु चौंक गये, सकनुतु रािा िमासि िे निीं ंिागा। तब उिने रािा को पुनः चेतनावस्था में लाने के सलए िाथ िे सिलाया, पर यिि भी कुछ निीं ंहआ। तब उिने उिे भूसम पर सगरा सदया और तब भी वि न िागा और न िी िामान्य स्तस्थसत में आया।

"वि अपने मन में इि प्रकार िोचने लगी- 'मैं देखती हँ सक मेरे स्वामी परम ित्ता में लीन िो गये िैं। तब मैं उनके िूक्ष्म िरीर पर ध्यान लगा कर अपनी अन्तदृासष्ट िारा ज्ञात करूँगी सक इनके हृदय में कुछ ित्त्व अथवा बुस्तद्ध अथवा िीवन का अवसिष्ट िै क्या। यसद िै तो मैं एक अन्य सवसि िे िगा कर इनके िाथ आनन्दपूवाक रहंगी, अन्यथा मैं भी इि िरीर का त्याग कर सवदेिमुस्तक्त प्राप्त कर लूँगी।'

"चूडाला ने सिस्तखध्वि के िूक्ष्म िरीर पर ध्यान लगाया और अपने सदव्य चक्षुओं ंिे िाना सक उिके हृदय में अभी ित्त्व बुस्तद्ध अथवा िीवन के कुछ अवसिष्ट िेष थे। चूडाला ने परकायाप्रवेि की यौसगक सक्रया की। उिने कुम्भ मुसन के भौसतक िरीर को त्याग कर िूक्ष्म िरीर को भी खीचं सलया और सिस्तखध्वि के सचत्त में प्रवेि सकया। विाँ उिने सचत्त के उि अंग को कम्पायमान सकया ििाँ मात्र िुद्ध ित्त्व का अंि था। उिने िरीर के उि भाग को

सक्रयिीील और गसतमान बना सदया। सफर वि (कुम्भ मुसन रूपिारी) अपने िरीर में पुनः प्रविे कर गयी, िि़ै कोई पक्षी वृक्ष की टिनी पर बैठ कर सफर अपने घोंलि पर वापि लौट िाता ि़ै।

"सफर वि एक पुष्पवासटका में बैठ कर मिुर राग में िामवेद गान करने लगी। गान िुन कर रािा को बौस्तद्धक आनन्द का अनुभव हआ और उिका प्रिुप्त िीवन िनैः–नैः स्तखलने लगा, सिि प्रकार िूया को देख कर कमल की कसल स्तखलती ि़ै। उिने िीरे–िीरे नेत्र खोले। रािा की िमूपूणा देि में नवि–ीवन िंचार िोने लगा। उिने कुम्भ मुसन को अपने िमक्ष देख कर उिका यि-गान सकया ।

"सिस्तखध्वि ने किा- 'आपकी कृपा िे मैंने सनसवाकल्प िमासि के िुख की अनुभूसत की। अब मैंने िन्म-मरण के बिनों ंि मुस्तक्त पा ली ि़ै। िमासि–िुख की तुलना में स्वगा के िुख कुछ निीं ंि़ै।'

"कुम्भ मुसन ने पूछा- 'िे रािन्! क्या अब तुम िब प्रकार के कष्टों, ंिियों ंऔर भ्रमों ंिे पूणारूपेण मुक्त िो? क्या तुमने ब्रह्मानुभूसत का िाश्वत िुख प्राप्त कर सलया ? क्या ऐस्तिय-सवषयों ंकी ओर आकषाण और सवकषाण दूर िो गया ? क्या तुममें िमदृसष्ट सवकसित िो गयी? पृथ्वी के सवषय-भोगों ंकी कामना को क्या तुमने िमूल उखाड फेंका ि़ै?'

"सिस्तखध्वि ने उत्तर सदया- 'िे िम्माननीय गुरु! आपकी कृपा िे मैं िब प्रकार के कष्टों, ंिियों, ंभयों, ंभूलों, ंभ्रमों, ंराग और िेष िे पूणातया मुक्त हँ। मैं निा, मृतुयु और रोग िे मुक्त हँ। मैंने िब-कुछ प्राप्त कर सलया िै िो भी प्राप्तव्य ि़ै। अब मैं अपने में िी पूणातया िंतुष्ट हँ। मैं परम िन्तोष अनुभव करता ि़ै। कुछ भी ज्ञातव्य िेष निीं ंि़ै, न िी कुछ प्राप्तव्य िेष ि़ै। मेरे सलए कुछ चािने को, देखने को अथवा िुनने को निीं ंि़ै। अब मैं ज्ञानोदय अथवा प्रबोिन के सलए सकिी िे कुछ निीं ंिुनना चािता। मैं िमदृसष्ट िे िम्पन्न हँ।'

"तब कुम्भ मुसन और सिस्तखध्वि िंगलों ंऔर पवातों ंमें आनन्दपूवाक रिने लगे। उन्ोंने नसदयें और झीलें देखी। एक सदन कुम्भ मुसन ने रािा िे किा- 'आि देवलोक में बडा पवा ि़ै। मुझे िभा में नारद के िमक्ष उपस्तस्थत िोना ि़ै। सवसि िारा मेरा प्रस्थान सनसित ि़ै। इिे सकिी प्रकार रोका निीं ंिा िकता। अप्रसतरोध्य सनयम की िस्तक्त के सवरुद्ध कौन िा िकता ि़ै? िूयाास्त पर मैं अवश्य आऊँगा।' उन्ोंने रािा को फूलों ंका गुलदस्ता सदया और चले गये।

"कुम्भ मुसन ने एक बार सफर चूडाला का रूप िारण सकया, आकाि िारा अपने नगर में पहँच कर राज्य का काम िँभालने लगी। सफर कुम्भ मुसन का वेष िारण करके आकाि-मागा िे सिस्तखध्वि के स्थान पर गयी।

"सिस्तखध्वि ने किा- 'िे पूज्य श्रीमन्! आि आप उदाि क्यों ंि़ैं? आप तो िन्त िो ।'

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'ित्य के ज्ञाता, िो सवषम पररस्तस्थसतयों ंमें दृढ़ और ि़ैयावान् निीं ंि़ैं, िच्चे मनुष्य निीं ंि़ैं, बस्ति िोखेबाि ि़ैं। िब तक िम िरीर में ि़ैं, िमें अपने दैसिक अंगों ंको िमुसचत रूप िे िंचासलत करते रिना चासिए। मिान् ब्रह्मा और देवता तक दैसिक स्तस्थसत के वि में िोते ि़ैं। कोई भी अप्रसतरोध्य परम सविान के सवरुद्ध निीं ंिा िकता। सिि प्रकार नसदयों ंका िल िमुि में िा सगरता ि़ै, उिी प्रकार िमस्त पदाथों को सनसित मागा िे िंचासलत करने वाली सवसि की िस्तक्त को सनयस्तन्त्रत करने की िामथ्या सकिी में निीं ंि़ै।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'यसद एिा ि़ै, तो सफर आप अपने पर आयी हई सकिी भी पररस्तस्थसत के कारण उदाि क्यों ंि़ैं

"कुम्भ मुसन ने उत्तर सदया- 'ि रिान्! मेरे िाथ घसटत आियिानक घटना िुनो। तुम वास्तव में आियाचसकत िो िाओगे।'

"चूडाला सिस्तखध्वि की परीक्षा लेना चािती थी। वि देखना चािती थी सक वास्तव में वि ब्रह्मचया में स्तस्थत हआ था या निीं। उिने रािा को एक घटना िुनायी- 'तुम्हें फूलों का गुलदस्ता देने के अनन्तर में आकाि-मागा िे यात्रा करके देवलोक में अपने सपता के पाि गया और इि के दरबार में उपस्तस्थत हआ। सफर मैंने पृथ्वी पर आने के सलए वायु-क्षेत्र में प्रवेि सकया। मुझे दुवाािा ऋसष समले। मैंने उन्ें किा-"आप अपने श्याम-वणा, मेघ-रूपी वस्त्रों में आवृत्त िो। आप तो ऐिी िल्दी में िाते हए प्रतीत िोते िो मानो एक कामुक स्त्री अपने प्रेमी िे समलने िाती िो।" यि िुन कर मुसन ने क्रोसित िो कर मुझे श्राप दे सदया- "तू िर रासत्र में कामुक स्त्री िो िा।" मैंने मुसन के िमिने कैिा लज्जािनक व्यविार सकया? अब मैं प्रसतसदन रासत्र में स्त्री का िरीर िारण करूँगा। इि बात पर मुझे भारी दुःख िो रिा िै।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'आप दुःखी न िों। अप्रसतरोध्य सनयम के सवरुद्ध कोई निीं िा िकता। आप तो एक मिात्मा िो। आप अपररवतानीय आत्मा िो । अमूता आत्मा पर िरीर के इि रूपान्तर का प्रभाव निीं पड िकता। आत्मा तो बदलती िी निीं।'

"चूडाला सदन कुम्भ मुसन के रूप में और रासत्र स्त्री के रूप में व्यतीत करने लगी।

"एक सदन कुम्भ मुसन बोले- 'मैं कब तक असववासित रहँगी ? मैं तुम्हें अपना पसत वरूँगी। तुम मुझे रासत्र को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लो।'

"सिस्तखध्वि बोला- 'आपको असिकार िै िो चािो करो।' तत्पिात् मन्दार पवात पर दोनों की पारस्पररक िमिसत िे (अगस्त-सितम्बर मिीने में) पूसणामा को सववाि िम्पन्न हआ। अब चूडाला का नाम मदसनका िो गया।

"िर तीिरी रासत्र को ज्यों-िी मदसनका रािा को िोता हआ पाती, वि अपना पूवा-रूप िारण कर राज्य के कायों को िँभालने चली िाती। काया पूरे िोने पर रािा के पाि वापि आ िाती थी।

"अपनी योग-िस्तक्त िे उिने इि को सिस्तखध्वि के िमक्ष उपस्तस्थत कर सदया । इि बोला- 'िे रािन् ! मैं तुम्हारे तप और दैवी गुणों िे बहत प्रभासवत हँ। तुम देवलोक को चलो। स्वगीय अप्सराएँ, रम्भा एवं अन्य विाँ तुम्हारी प्रतीक्षा में िैं। तुम विाँ िब प्रकार के भोगों में सनमि रिना।'

"सिस्तखध्वि ने उत्तर सदया- 'िे इि! मैं ििाँ हँ, मेरे सलए विी स्वगा िै। मैंने देवताओं के िमस्त ऐश्वया भोग सलये। अब मैं कुछ निीं चािता।'

"सिस्तखध्वि पूणा िमसचत्तता की स्तस्थसत में रिे। वि पूवातः उदािीन थे।

"चूडाला उनकी और परीक्षा लेना चािती थी। उिने एक कुंि में प्रवेि करके अपनी यौसगक िस्तक्त के बल िे एक प्रेमी उत्पन्न सकया। उिने उििे आसलंगन करने का ढोंग रचा। सिस्तखध्वि ने उिे उद्यान में और कुंि में खोिा और अन्त में उिे अपने प्रेमी के िाथ आसलंगन करते हए पाया। परन्तु उि पर संकसचत् प्रभाव निीं हआ। उिे अपनी वृसत्त में कोई पररवतान अनुभव निीं हआ। उिने क्रोि का कोई सचह्न प्रकट निीं सकया।

"उिकै व्यविार को िानने िेतु चूडाला सिस्तखध्वि के िामने लस्तज्जत–ी आयी, मानो वि अपने सकये हए व्यविार के सलए लस्तज्जत िो। सिस्तखध्वि चूडाला िे मिुर वाणी में बोला- 'तुम मेरे पिा इतनी िल्दी क्यों ंआ गयी? िे स्त्री, तुम अपने प्रेमी के पिा लौट िाओ और अपनी कामना िान्त करो। यि मत िमझो सक मैं इि बात के सलए कुरुद्ध अथवा दु:खी हँ। मैं िदैव अपने में िी िनुतुष्ट हँ।'

"मदसनका-रूपी चूडाला बोली- 'मैं एक कमिोर स्त्री हँ। मैं अज्ञानी हँ। मैं अपनी विाना पर सनयन्त्रण करने में अिमथा हँ। स्त्री स्वभाव िे िी पुरुष की अपेक्षा दि गुणा कामुक िोती िै। न सनषिे, न पुरुष की िमसकयाँ और न िी पावनता का सवचार उनकी काम-वृसत्त को रोकने में िफल िो िकते िैं। कृपया मुझे क्षमा करें। क्षमा पसवत्रात्माओं ंका असत-मित्त्वपूणा गुण िै।'

"सिस्तखध्वि ने उत्तर सदया- 'सप्रय मदसनका ! सिि प्रकार आकािा में वृक्ष का कोई स्थान निीं ंिोता, वैिे िी मेरे हृदय में क्रोि के सलए कोई स्थान निीं ंिै।'

"चूडाला ने सिस्तखध्वि की औरि असिक परीक्षा निीं ंलेनी चािी। उिे सवश्वाि िो गया सक उिके पसत ने आत्मज्ञान प्राप्त कर सलया िै और वि क्रोि तथा विाना िे पूणातया मुक्त िै। उिने मदसनका का िरीर त्याग सदया और अपना चूडाला का स्वरूप िारण करके राजा के िामने प्रकट हई।

"सिस्तखध्वि बोला- 'िे स्त्री! तुम कौन िो?'

"चूडाला बोली- 'मैं तुम्हारी सवसिपूवाक सववासित पत्नी चूडाला हँ। मैंने अपनी यौसगक िस्तक्त िे कुम्भ मुसन और मदसनका का रूप िारण करके तुम्हें कैवल्य के रिस्यों ंअथाात् आत्मज्ञान में दीसक्षत सकया। गलत मागा पर चलने पर तुम्हारा सवरोि सकया और िीिे मागा िे तुम्हें च्युत करने के सलए प्रत्येक चालाकी एवं युस्तक्त का प्रयोग सकया। मैंने कई प्रकार िे तुम्हारी परीक्षा कर तुम्हारे ज्ञान की गिराई को िाना। अब तुम सनसवाकल्प िमासि में प्रवेि कर िाओ और तुम्हें िब-कुछ सवसूतृत रूप िे सवसदत िो िायेगा।'

"सिस्तखध्वि ध्यानस्थ िो कर बैठ गया। उिने राज्य त्यागने के सदन िे अन्त में चूडाला िे समलने तक का िम्पूणा वृत्तान्त स्पष्ट रूप िे देख सलया।

"चूडाला किने लगी- 'पूज्य स्वासमन् ! क्या आप िारे िंियों ंिे मुक्त िैं? क्या अज्ञानता िे उत्पन्न आपका भ्रम नष्ट िो गया िै? क्या आप सनि स्वरूप में स्तस्थत िो? क्या आप िाश्वत का िुख अनुभव कर रिे िो ?'

"सिस्तखध्वि ने उत्तर सदया- 'मैं अब सवक्षेपों,ं दोषों,ं िंियों ंऔर भ्रास्तन्त िे रसित हँ। मैं सवश्व के बिनों ंिे मुक्त िो गया हँ। मैं िवादा िान्त रिता हँ। मुझमें कोई कामना निीं ंिै। मैं सकिी िे कुछ अपेक्षा निीं ंरखता। मेरे पिा अपने सलए चयन करने को कुछ निीं ंिै। मैं न यि हँ न वि; मैं सवश्व में सकिी वस्तु अथवा घटना पर न िसषात हँ न दु:खी हँ। मैं िदैव अपने सनि आनन्द-स्वरूप में स्तस्थत रिता हँ। मेरी िास्तन्त को कोई भंग निीं ंकर िकता। मैं न्तिीिंिे, भेदभाव और सभन्नताओं ंिे मुक्त हँ। मैं पदाथों के सवषय में सचन्तन निीं ंकरता। मैं िवाव्यापक िुद्ध चैतन्य हँ। मैं िवात्र सवद्यमान आकािा की भाँसत हँ, िो िमस्त पदाथों में व्याप्त िोते हए भी सनसलाप्त िै।'

"चूडाला बोली-'मेरे पूज्य स्वासमन् ! अब तुम अपने कताव्यों ंको िँभालो-कमों का बिन निीं ंिोगा।'

"सिस्तखध्वि ने स्वीकार सकया। तब चूडाला ने उनका असभषेक सकया और रािपदिीन करने की िमस्त सवसि िम्पन्न की। उिने उन्हें एक रत्न–सडत सिंिािन पर सबठाया और दीघाायु िे आिीवाासदत सकया। तत्पिात् सिस्तखध्वि और चूडाला एक िुिस्तज्जत िाथी पर िवार िो कर अपने नगर को लौटे। दोनों ंओर दो िैसनक दल थे,

सिनके िाथ िंगीत व नृत्य-मण्डसलयों ंकी िुन के िाथ बिो बिाते हए िंगीतकारों ंके िमूि थे। उिनै अपनी मूिपूणा िेना के िाथ रािभवन में प्रविे सकया। मन्त्री गण, दरबारी और िेवकि–मूि िारा उनका स्वागत सकया गया। उिनै एक ििस्र वषा तक राज्य करने के पिात् अपनी पत्नी िसित सवदेिमुस्तक्त प्राप्त की।"

अपने गुरु वसिष्ठ िी िारा इतनी िुन्दरता िे वसणात किानी िुन कर श्री राम ने उिनै पूछा- "सिन्होंनें अपने को ब्रह्म में लीन कर सदया िै और अपने मन का नाि कर सदया िै, उनमें िित्त्व के अविेष कैिे रि िकते िैं? सिि योगी का मन पत्थर के िमान भाविून्य िो गया िो और सििकी देि एिे िड िो गयी िो िैिै समट्टी का लोष्ट (ढेला) अथवा लकडी का टुकडा, उिमें प्रासणक ज्वाला की सचंगारी कैिे अवसिष्ट रि िकती िै?"

वसिष्ठ िी ने उत्तर सदया- "सिि प्रकार फूल और फल बीि में सनसित रिते िैं, उिी प्रकार िीवन के तत्त्व अथाात् िित्त्व के अंि िो बुस्तद्ध का कारण िैं, अदृश्य रूप िे हृदय में रिते िैं। िो योगी िान्त रिता िै और िो िमासि में मूसता अथवा सिला की भाँसत अचल रिता िै, उिमें बुस्तद्ध की सुफुरणा िोती िै। यद्यसप िीवनमुक्त का सचत्त नष्ट िो िाता िै, सफर भी िूक्ष्म िरीर पूणातया नष्ट निीं ंिोता। उिका सचत्त िुख-दुःख िे प्रभासवत निीं िोता। उिमें
पदाथों ंके सलए कोई कामना या एषणा निीं ंरिती। वि आकषाण एवं घृणा िे रसित िै।"
वसिष्ठ िी आगे बोले- "िे राम! इि रािा के पदसचह्नों ंका अनुिरण करो, सििने सवदेिमुस्तक्त प्राप्त करने तक राज्य का ििािन सकया। अपने रािकीय कताव्यों ंका पालन करो । िमदृसष्ट और िन्तुसलत मानि रखो। िुखों ं के मध्य उदािीन रिो। दुःखों ंके मध्य सचन्तामुक्त रिो। आिस्तक्त मत रखो। सवषयों ंकी कामना मत करो। िंकट और सवपसत्तयाँ आने पर दुःख मत मानो। तुम पर सकिी बात का प्रभाव निीं ंिोगा। कमा तुम्हें निीं ंबाँिेंगे। तुम्हें मोक्ष प्राप्त िो िायेगा। तुम्हें आत्मा का ज्ञान िोगा। तुम िाश्वत िुख एवं परम िास्तन्त आनन्द अनुभव करोगे।"

इक्ष्वाकु की कथा

राम ने पूछा- "िे िवाज्ञ मिात्मन्! कृपया मुझे उि मन की सविेषताएँ बताइए सििने अपने अिं को नष्ट कर सदया िो, िो स्वयं सवनष्ट िो चुका िो सफर भी अपना आध्यास्तत्मक स्वरूप मात्र अवसिष्ट रखता िो?"

वसिष्ठ िी ने उत्तर सदया- "कामनाएँ, भ्रास्तन्त, असभमान, अज्ञान और अन्य अिुस्तद्धयाँ एिे व्यस्तक्त को- सििने अिं-भाव और मन का नाि कर सदया िो और सििे आत्मा का ज्ञान िो गया िै-इिी प्रकार स्पिा निीं ंकर िकते, सिि प्रकार झील का िल कमल के पत्ते का स्पिा निीं ंकर िकता। अिं-भाव और तििंबंसित दोष नष्ट िो िाने पर उिके िान्त व दीप्त मुख पर आत्मा की पसवत्रता स्पष्ट रूप िे प्रकािमान िोती िै। उिके चेिरे पर िमस्त दैवी गुण झलकते िैं। काम और मोि के बन्िन सछन्न-सभन्न िो िाते िैं। िमस्त पाप नष्ट िो िाते िैं। वि क्रोि, लोभ और वािनाओं ंिे मुक्त िो िाता िै। पाँचों ंइस्न्द्रयाँ पूणारूपेण उिके सनयन्त्रण में रिती िैं। दुःख उिको प्रभासवत निीं ंकरते। िुख उिमें गवा निीं ंलाते िैं। वि प्रत्येक स्तस्थसत और स्थान में सचत्त की पूणा िास्तन्त िे िम्पन्न रिता िै। िबके प्रसत उिमें िमदृसष्ट रिती िै। िब उिके िरीर में कष्ट िो और चेिरे पर प्रकट भी िोवे तब भी उिका सचत्त पूणातया िान्त रिता िै। वि देवताओं ंका सप्रय िो िाता िै। वि न कभी सकिी का सवरोि करता िै न सकिी को ठेि पहँचाता िै। प्रत्येक व्यस्तक्त उिका िम्मान करता िै और उििे प्रेम करता िै। सवश्व के समथ्यात्व का उिे स्पिा निीं ंिोता । न िनि–म्पसत्त और न िी सनिानता; न िमृस्तद्ध और न िी सवपसत्त उिको प्रभासवत कर िकती िै। वि पूणातया उदािीन रिता िै। िांिाररकता में डूबे हए मनुष्य को सिक्कार िै, िो परम िित्ता को प्राप्त करने िेतु कामना निीं ंकरता, िो आत्मज्ञान िारा उि परम िित्ता को प्राप्त निीं ंकरता, िो उिे इि सवश्व की

मिस्त कसठनाइयों ंिे बचाने में िायक िो िकती िै। आत्मा का ज्ञान िमस्त ांिाररक सवपसत्तयों ंके मध्य मनुष्य की रक्षा करता िै।'

"िो व्यस्तक्त इि िंिार-रूपी सविाल िमुि में दुःखद पुनिान्मों ंकी लिरों ंपर सविय के िारा भविागर को पार करके िाश्वत िुख प्राप्त करना चािता िै, उिे िदैव यि खोि करनी चासिए सक मैं कौन हँ। यि सवश्व क्या िै? ब्रह्म अथवा परम ित्ता की प्रकृसत क्या िै? भौसतक िुख सकि काम के िैं? ऐिी सववेकपूणा खोि अस्तन्तम मोक्ष पाने का िवोत्तम िािन िै।

"िे राम! तुम िानो सक तुम्हारे वंि के प्रथम िंस्थापक प्रसिद्ध रािा इक्ष्वाकु ने सकि प्रकार मोक्ष प्राप्त सकया था।

"िब यि रािा अपने िाम्राज्य पर िािन कर रिा था, तो एक बार एकान्त के क्षणों ंमें मनुष्यता की स्तस्थसत पर सवचार करने लगा। वि अपने मन में िोचने लगा सक क्षीणता, रोग और मृतुयु का, दुःखि–ुख तथा कष्टों ंका भी, और इिी प्रकार इि मृतुयुलोक में िमस्त िीवों ंमें िोने वाले दोषों ंका क्या कारण िो िकता िै? उिने दीघा काल तक इन सवचारों ंपर मनन सकया, परनुतु कोई िमािान निीं ंसमला।

"िवाप्रथम वि मनु के पाि गया िो ब्रह्मलोक िे आये, उनें् असभवादन करके इक्ष्वाकु बोले- 'िे दया के िागर में सकि प्रकार इि िंिार के कष्टों ंिे अपने को छुडा िकता हँ? मेरा यथाथा स्वरूप क्या िै? मैं सकि प्रकार अमरता अथवा अनन्त को प्राप्त कर िकता हँ? इि िृसष्ट का मूल किाँ िै? उिका स्वरूप क्या िै? कब और सकि प्रकार यि अस्तस्तत्व में आयी ? मैं सकि प्रकार इि िृसष्ट के सवषय में अपने िंिय तथा भ्रममूलक सवचारों ंिे मुक्त िो िकता हँ? मैं इि िंिार िे सकि प्रकार मुस्तक्त पा िकता हँ?'

"मनु ने उत्तर सदया- 'यि िब-कुछ िो तुम देखते िो, ित्य निीं ंिै। ये िब तुच्छ ब्रह्माण्ड वास्तव में निीं ंिैं। वे प्रतीत िोते िैं। वे बादलों ंमें सकले और रेसगस्तान की मृगमरीसचका में िल के िमान िैं। मन भी असत्य िै। आत्मा अथवा ब्रह्मि–ो मन और इस्तियों ंकी पहँच िे परे िै-अकुषुण्ण, अिीम और आकाि िे भी िूक्ष्म िै, वि िदैव सवद्यमान िै। विी एक ित्य िै। िमस्त दृश्यमान् पदाथा आत्मा-रूपी दपाण में छाया मात्र िैं। ब्रह्म की कुछ िस्तक्तयों ंने समल कर प्रकािमान् लोकों ंका रूप िारण कर सलया और अन्य िस्तक्तयों ंने िीवािररयों ंका रूप िारण कर सलया। अन्य देवलोक बन गये । बिन अथवा मुस्तक्त िैिी कोई वसुतु निीं ंिै। ििे प्रकार िमुि का िल लिरें, बुलबुले, झाग आसद रूपों ंमें प्रकट िोता िै, उिी प्रकार केवल ब्रह्म िी सवसभन्न प्रकार के पदाथों िसित इि बहरूपीय िंिार के रूप में प्रकािमान् िै। एक अिैत ब्रह्म के असतररक्त कुछ निीं ंिै। विी एकमात्र ित्य िै। विी एक िीवन्त ित्य िै। अतः िे इक्ष्वाकु ! बिन और मोक्ष के अपने सवचार को छोडो। ईश्वर करे, तुम िब प्रकार के भयों ंिे मुक्त िो कर एक सिला की भाँसत स्तस्थर और दृढ़ िो िाओ !

"'यसद व्यस्तक्त अपने सवचारों ंअथवा िंकल्पों ंिे िुडा रिे, तो वि िीव अथाात् वैयस्तक्तक आत्मा बन िाता िै, ििे प्रकार िागर का िल तरंग अथवा झाग बन िाता िै। तब िदैव वि िन्म-मरण के चक्र में घूमता रिेगा। दुःख और िुख मन के िमा िैं-आत्मा के निीं।ं िीवों ंमें अपने पूवाि–न्म के िंस्कार रिते िैं; वे िुभ और अिुभ कमा करके तदनुिार िुख-दुःख का फल भोगते िैं। ििे प्रकार राह का अदृश्य सिर चिग्रिण के िमय दृश्यमान् िो िाता िै, उिी प्रकार आत्मा की वृसत्त के अनुिार सक्रयािील मन, िमें दृश्यमान् िोता िै और िुख-दुःख का अनुभव करता िै। इि अमर आत्मा को आत्मज्ञान के ग्रन्थों ंऔर आध्यास्तत्मक गुरुओं ंके िारा प्राप्त निीं ंसकया िा िकता। इिे अपनी आत्मा के िारा और बुस्तद्ध के िारा अन्तप्राज्ञा िे पिचाना िा िकता िै। ििे प्रकार यात्री सकिी सविेष वसुतु या स्थान िे सबना सकिी लगाव या आिस्तक्त के भ्रमण करते िैं, उिी प्रकार तुम्हें अपने िरीर और इस्तियों ंिे सनसलाप्त रिना चासिए। तुम अपनी देि और अंगों ंिे प्ेरम अथवा घृणा मत करो। तुम अपनी देि अथवा इस्तियों ंको

कष्ट मत दो। िरीर, इस्तियों ंऔर िमस्त पदाथों की ओर उदिीन भाव रखो। िरीर और अंग कमाँ का पररणाम ीं। उनें रोका निीं ंिा िकता। वे असनवाया रूप िे अस्तस्तत्ववान् िोंगें िी। पदाथों के सलए कामना छोडो। िास्तन्त प्राप्त करके ब्रह्म िो िाओ।

"आत्मा-स्वरूप 'मैं' को निावान् दिे िे िोडना िंिार में िमारे बिन का कारण िै। अतएव मोक्ष के इचुछुक ििाकों ंको यि सवचार कदासप निीं ंरखना चासिए। परनुतु यि दृढ़ सवश्वा सक 'मैं िवाव्यापी आत्मा अथवा ब्रह्म हँ', इ सवश्व में मनुष्यों ंको बिन िे छुडाने में िमथा िै। िसि प्रकार कोई माँ अपने खोये बचे्चे की खिो में व्याकुल िोती िैि–ो बच्चा उिी के किों ंपर िो रिा िै, उिी प्रकार िब लोग बाह्य निावान् पदाथों में िुख ढूँढ़ते हए दु:खी िोते िैं, िब सक वसुतुतः वि उनें अपने िी भीतर िरलता िे समल िकता िै। िसि प्रकार िागर का िल लिरों ंिे सवसक्षप्त िोता िै, उिी प्रकार सचत्त अिेख्य िंकल्पों ंिे चलायमान िोता िै। िे रिान्! यसद िंकल्प नष्ट िो ियें, यसद तुम अपने सचत्त को आत्मा में स्तस्थत कर लो, तो तुम परम िास्तन्त और िाश्वत िुख का अनुभव करोगे और इ भीषण िंिार-रूपी िमुि में टकराती हई लिरों ंके मध्य भी अचल बने रिोगे।

'यि समथ्या िंिार ब्रह्म िे उद्भूत िोता िै। माया रिस्यमयी िै। यि मनुष्यों ंको अपनी िी आत्मा को प्राप्त करने िे भ्रसमत करती िै। यि सवश्व माया के प्रभाव िे ठिो ित्य प्रतीत िोता िै। सिनें आत्मज्ञान निीं ंिै, वे इ सवश्व में दु:ख पाते िैं। िो व्यस्तक्त सवश्व को सचत्रफलक पर सचसत्रत िैा मान कर अप्रभासवत और सनष्काम रिते हए अपनी आत्मा में िी िनुतुष्ट रिता िै, उिने मानो एक अभेद्य कवच पिन रखा िै। वि व्यस्तक्त सकतना िुखी िै, िसिके पाि कुछ भी निीं ंिै-न िन अथवा अन्य िािन; सफर भी आत्मा का ज्ञान प्राप्त करने के कारण िब-कुछ ीं। िारी कामनाओं ंका नाि कर दो। ब्रह्म का सचन्तन करो और िीवनुमुक्त िो िाओ। इ तुच्छ 'मैं' को नष्ट कर दो। इ निावान् िरीर िे अपने को एकरूप मत करो, बस्ति िवाव्यापक परम ित्ता िे एकरूप बनो। अभाव (अनस्तस्तत्व) के सवचार को सवकसित करके िमस्त पदाथों पर सनराकार और िुद्ध चैतन्य रूप में ध्यान करो। यि सवचार सक 'यि आनन्ददायक िै', 'वि दु:खदायक िै', 'यि अच्छा या बुरा िै' आसद का बीि िै। यसद िमदृसष्ट-रूपी असि िे यि बीि भस्म कर सदया िाता िै, सफर कष्टों ंके सलए स्थान किाँ रिेगा? सक्रयिील बन कर अभाव-रूपी असि (तलवार) िारण करो। िमदृसष्ट की कुल्हाडी िे सप्रय और असप्रय तथा राग–ेष की भावनाओं ंको काट डालो।

'कमाकाण्ड के उलझे हए िंगल को, कमों के गुण अवगुणों ंके उपेक्षाभाव-रूपी अस्त्र िे िाफ कर दो। अभाव-रूपी तलवार िारा िमस्त सवचारों ंऔर पदाथों का नाि कर दो। अपने मन िे िमस्त भेदभाव दूर करके सववेक सवकसित करो। आत्मा के परम आनन्द को प्राप्त करो। पूणा िान्त रिो। िंिार की िारी सचन्ताओं ंएवं भयों ं ो मुक्त िो िाओ। िसिने इ तुच्छ अि तथा िमस्त कामनाओं ंऔर िंकल्पों ंको नष्ट कर सदया िै और िसिने िरि समथ्या भेदभावों ंको सपघला डाला िै, वि ब्रा के िाश्वत िुख को भोगेगा। विी कष्टों ंऔर सचन्ताओं ंऔर टु खों ं ो मुक्त िोगा। िे रिान् ! उ पररपूणा िान्त, सनमाल और अपररवतानीय आत्मा पर िदैव सचन्तन करो, िो िबमें मिान िै।'

"मनु बोलते िैं-'ज्ञान की िप्त भूसमकाएँ िैं। प्रथम भूसमका में आत्मज्ञान िास्त्रों ंके गिन अध्ययन और ित्संग तथा सनष्काम िुभ कृत्यों ंिारा ज्ञान का सवकाि करें। यि 'िुभेच्छा' ज्ञान की प्रथम भूसमका िै। यि सववेक-रूपी िल िे मन की सिंचाई कर उिका िंरक्षण करता िै। इ भूसमका में ऐस्तिक सवषयों ंके प्रसत अनाकषाण अथवा उदिीनता िोती िै। प्रथम भूसमका िी अन्य भूसमकाओं ंका आिार िै।

'िुभेच्छा िे दूिरी दो भूसमकाएँ- 'सवचारणा' और 'तनुमानिी' का सनमााण िोता िै। सनरन्तर आत्म-सवचार अथवा आत्मानुिन्धान सितीय भूसमका िै। तृतीय भूसमका तनुमानिी िै। यि सवचारों ंके प्रसत सविेष उदिीनता िे उत्पन्न िोती िै। मन एक डोरे की भाँसत पतला िो िाता िै। तनु का अथा िै-पतला अथाात् डोरे की भाँसत मन की स्तस्थसत, इसिलए तनुमानिी किलाती िै। तृतीय भूसमका को अिंग-भावना भी किते िैं। इ तृतीय भूसमका में

िीकि िारे आकषाणों ंिे मुक्त रिता िै। यसद कोई तृतीय भूसमका में पहँच कर मृतुयु को प्राप्त िोता िै, तो वि दीघा काल तक स्वगा में रि कर ज्ञानी-रूप में पृथ्वी पर पुनः िन्म लेगा। उपयुाक्त तीन भूसमकाएँ िागृत अवस्था में स्तिम्मसलत की िा िकती िैं।

'"चतुथा भूसमका िै- 'ित्त्वापसत्त' । यि भूसमका िमस्त विानाओं ंको िड िे उखाड देगी। यि स्वप्नावस्था में िस्तम्मसलत की िा िकती िै। सवश्व स्वप्न की भाँसत दृसष्टगत िोता िै। इि चतुथा भूसमका में पहँचने पर मनुष्य िृसष्ट की िमस्त वसुतुओं ंको िमदृसष्ट िे देखता िै।

" 'पंचम भूसमका 'अिंस्तिक्त' िै। इिमें सवश्व के िारे पदाथों के प्रसत पूणाारूपेण अनािस्तक्त िोती िै। इि अवस्था में िागृसत अथवा िुषुस्तप्त अथवा कोई उपासि निीं ंरिती। यि िीवनुमुक्त अवस्था िै, ििमें आनन्द-स्वरूप, सविुद्ध ज्ञान िे पररपूणा ब्रह्म की अनुभूसत िोती िै। यि भूसमका िुषुस्तप्त में आती िै।

'छठी भूसमका 'पदाथााभावना' िै। इिमें ित्य का ज्ञान िै। िप्तम भूसमका िै 'तुरीय' अथवा उच्चतम चेतना की स्तस्थसत। यि मोक्ष िै। इि तुरीयातीत भी किते िैं। इिमें िंकल्प निीं ंिोते । िारे गुण लुप्त िो िाते िैं। यि मन और वाणी की पहँच के बािर िै। इि िप्तम भूसमका में सवदेिमुस्तक्त प्राप्त िो िाती िै।

'िीवनुमुक्त अिंभाव, कामनाओं,ं गुणों ंऔर आिस्तक्त िे रसित िोता िै। उिकी दृसष्ट िम िोती िै। वि पूणा ािस्तन्त और िाश्वत िुख का अनुभव करता िै। अतएव वि कभी मन में दुःखी निीं ंिोता। चािे काया में लगा िो या कायामुक्त िो, चािे कुटुम्ब में रिता िो या एकाकी िीवन यापन करता िो, िो व्यस्तक्त ब्रह्म अथवा अमर आत्मा के िाथ अपने को एकाकार कर लेता िै और ििे इि िंिार में कोई डर, सचन्ता या दुःख निीं ंिै, वि इिी िीवन में मुक्त माना िाता िै। िो अपने को आसद और अन्त रसित, िन्म और मृतुयु िे रसित एवं िुद्ध चैतन्य की प्रकृसत का मानता िै, वि िदैव िान्त और अपने में िी िन्तुष्ट रिता िै, उिे दुःख का कोई कारण निीं ंिो िकता। िो इि प्रकार के ज्ञान िे छुटकारा पा लेता िै सक 'यि मैं हँ, वि अन्य िै; यि मेरा िै और वि अन्य का िै' आसद, वि िीघ्र िी आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता िै।

'विानाओं ंके माध्यम िे ऐस्तिक-सवषयों ंके भोग तुरन्त आनन्द प्रदान करते िैं। परनुतु िब वि पदाथा नष्ट िी िाता िै, तो कष्ट की अनुभूसत िोती िै। िब विानाएँ पूणाारूपेण सवनष्ट िो िायें अथवा थोडी-थोडी करके क्षीण िी िायें, तो पदाथों में कोई आनन्द निीं ंआयेगा। िामान्य में सकिी वसुतु का भाव अथवा अभाव िुख-दुःख का कारण िोता िै। िुख और दुःख असभन्न िैं। िुख दुःख का कारण िै। यसद विानाएँ क्षीण िो िायें, तो कमों िे िुख-दुःख की ििाना निीं ंिोगी। वे िले हए बीिों ंकी भाँसत िो िाते िैं। ििमें पदाथों के सलए आकषाण निीं ंिै, उिका सचत्त िान्त िोगा। सफर उिके िंसचत और आगामी कमा-रूपी रूई की फली, ज्ञान-रूपी चक्रवात के िारा सवनष्ट िी कर िरीर रूपी रूई के िागे िे नविारों ंिारा सबखर िायेंगी। िारे सवचार लुप्त िो िायेंगे। मन में ज्ञान-रूपी अंकुर सदन-प्रसतसदन स्वतः िी सवकसित िोता िायेगा। ििे प्रकार उपिाऊ भूसम में वपन सकया हआ बीि िीघ्र उग कर िान के पौिे के रूप में प्रस्फुसटत िो िाता िै। सफर आत्मा अपने आद्य सविुद्ध स्वरूप में िित् के िाथ प्रकािमान् िोगी । िे रािन्! तू अपने को िुद्ध, अिैत ब्रह्म िान, ििााँ न सवचार िैं न विानाएँ ।'

"मनु किते रिे-'आत्मा मूलतः स्वाभासवक रूप िे आनन्द िे पररपूणा िै, परनुतु अज्ञानता के कारण वि व्यथा िी भौसतक िुखों ंकी कामना का पोषण करती िै। इिसलए इिका नाम िीव अथाात् वैयस्तक्तक आत्मा िै, िो दुःख पाता िै। इच्छाएँ असवववेक के कारण उत्पन्न िोती िैं। सववेक उदय िोने पर वे लुप्त िो िायेंगी। इच्छाओं ंके नष्ट िोने पर िीव की स्तस्थसत लुप्त िो िाती िै। आत्मा परमात्मा के िाथ एकरूप िो िाती िै।

'अतएव िांिाररक भोगों ंके सलए कामनाओं ंको तुम्हारी आत्मा को स्वगा और नरक की ओर ऊपर-नीचे
ले िाने के सलए अनुमसत मत दो। सिि प्रकार रस्सी िे बंिी हई बाल्टी कुएँ िे िल खीचंते िमय बारम्बार ऊपरी खीची और नीचे डाली िाती िै। सिनमें कताापन एवं स्वासमत्व का सवचार िोता िै, िो 'मैं, वि, यि, मेरा, तेरा' आसद
भेदों ंिे भ्रसमत िैं, वे बाल्टी की भाँसत िी उत्तरोत्तर नीचे िँिने वाले िैं। मनुष्य सितना िी स्वाथी िोता िै, उतना िी
'सनम्नतर और नीचे ब्रह्म-स्वरूप चट्टान पर दृढ़ता िे खडे रिो। यि सवचार करो सक यि ब्रह्माण्ड तुम्हारा िी
पररपूणा रूप िै। अपनी आत्मा पर दृढ़ता िे पकड रखो। िब तुम एकत्व की ज्ञानदृसष्ट प्राप्त कर लोगे, तब तुम पुनिान्मों ंिे छुटकारा पा कर परम ित्ता िे एकाकार िो िाओगे। तब तुम वि िब-कुछ कर िकोगे, िो ब्रह्मा, सवष्णु और सिव के िारा िोता िै। िब तुम्हारे मन का िीम उत्थान एवं प्रिार िोगा, तब वि सदव्य मन के िाथ समल कर एकरूप िो िायेगा। आत्मज्ञान िोने पर तुम्हें भी विी स्तस्थसत प्राप्त िो िायेगी िो ब्रह्मा, सवष्णु और रुि को प्राप्त हई। प्रकृसत की िमस्त सक्रयाएँ ब्रह्म की लीला मात्र िैं। िो आत्मा का िाश्वत आनन्द भोगता िै, वि अनुपम और सवसिष्ट िै। उिके िाथ सकिी की तुलना निीं ंकी िा िकती।

'इि सवश्व का न अस्तस्तत्व िै, न अभाव िै। न यि आत्मा की प्रकृसत का िै, न अनात्मा की। न यि खाली िै
न भरा। ब्रह्म का िाक्षात्कार िोने पर माया सवलुप्त िो िाती िै। िन्म और मृत्यु िे मुस्तक्त मोक्ष िै। मोक्ष ब्रह्म िै। मोक्ष में न िमय िै न दूरी। उिमें कोई स्तस्थसत निीं ंिै, न आन्तररक न बाह्य। यसद अिंकार अथवा व्यस्तक्तगत अस्तस्तत्व का नाि िो िाये, तो मोक्ष प्राप्त िो िाता िै। सवचारों ंकी िमास्तप्त मोक्ष िै। माया का अन्त मोक्ष िै। ब्रह्म-िाक्षात्कार को मोक्ष अथवा मुस्तक्त किते िैं।

'िो इि बात के प्रसत उदािीन िै सक वि क्या खाता िै, क्या पिनता िै और किाँ िोता िै, विी अस्तखल
सवश्व में िम्राट् की भाँसत प्रकािमान् िोगा। अपने-आपको िासत और िीवन-स्तर तथा सवश्व-भर के िमों िे मुक्त करो, िैिे िपं अपने को लिो के सपंिरे िे मुक्त कर लेता िै। िंिार का बोझ िटा करो। उि सनमाल पद को प्राप्त करो िो अक्षुण्ण िै। पूणारूपेण िान्त िो कर पुनिान्म िे छुटकारा पाओ। तब तुम पूणा िमता एवं िान्त सचत्त िसित िाश्वत ब्रह्मानन्द का अनुभव करोगे।

'ऐिा व्यस्तक्त िीवनुमुक्त िै। वि कमा फल के प्रसत उदािीनता रखेगा। चािे मनुष्यों ंके िारा िम्मान समले
या अपमान, वि न उनकी प्रिंिा करता िै न उनिे अप्रिन्न िोता िै। उिका िरीर कट भी िाये, तो उिे कष्ट का अनुभव निीं ंिोता । न सकिी को कष्ट देता िै न सकिी के िारा कष्ट पाता िै। वि सकिी भी प्रकार की आिस्तक्त िे रसित िै। वि आदिों ंऔर सनषेिों ंिे परे िै, सफर भी वि वैसदक सनयमों ंके अनुिार व्यविार करता िै। वि िंिार में एक िामान्य व्यस्तक्त की भाँसत कमा करता हआ भी कतृात्व-भाव निीं ंरखता । वि िांिाररक िम्बिों ंिे मन में पूणातः असम्बद्ध रिता िै। वि िंिार के कल्याण सनसमत्त काया करता िै। वि सकिी के सलए भय का कारण निीं ं बनता और न िी वि स्वयं सकिी िे भय मानता िै। ऐिे व्यस्तक्त का िम्मान और पूिा िोनी चासिए । ऐिा व्यस्तक्त िदैव परम ित्ता में सवश्राम करता िै, चािे वि बनारि आसद तीथा-स्थान पर मृत्यु को प्राप्त िो अथवा चाण्डाल या सकिी िासत-बसिष्कृत के घर में।

'िो ब्रह्म-पद को प्राप्त िो गये िैं, ऐिे मसिमािाली व्यस्तक्त को तुम्हें िमिम्मान के िाथ पूिना चासिए। वे पृथ्वी पर िाक्षात् देवता िैं। िो पुनिान्मों ंको नष्ट करके मोक्ष प्राप्त करना चािते िैं, उन्ें चासिए सक ऐिे मिान् आत्मा की स्तुसत करें, नमन करें, पूिा-उपािना करें और उनकी मसिमा का गान करें। उन्ें उनके प्रसत श्रद्धापूवाक एवं भस्तक्तभावपूणा हृदय िे बिि िाना चासिए। उन्ें पूणा िम्मान और नम्रतापूवाक तथा भस्तक्तभाव िे बारम्बार नमन करना चासिए। इि िीवनुमुक्त मिमसिम मानवों ंको भस्तक्तभाव िे एवं प्रेम िे िेवा िमसपात करने

ि ि लाभ प्राप्त िोगा, वि यज्ञ, तप, भेंट अथवा व्रतासद ि भी निीं ंिोगा। इि मिान् आत्माओं ंकी िेवा ि सचत्त-ुस्तिद्ध िीघ्र िोती ि।'

"मनु के नाम ि असभसित, भगवान् ब्रह्मा, इक्ष्वाकु को इि प्रकार यथाथा प्रेम का पाठ पढ़ा कर अपने स्वगीय स्थान ब्रह्मलोक को चले गये। मनु िारा बताये हए मागा पर चल कर इक्ष्वाकु ने मोक्ष का अकुषुण्ण पद प्राप्त सकया और ब्रह्मानन्द के िुख को भोगा।"

ॐ तत्सत्!

भिी प्रासणयों ंको िास्तन्त प्राप्त िो!
ॐ िास्तन्तः ! िास्तन्तः !! िास्तन्तः !!!

पररसिष्ट १
श्री ित्यनारायण व्रत

स्कन्दपुराण से उखिखित

एक बार िनक एवं उनके िमान अन्य मिान् ऋसष, िो नैसमषारण्य में एकसत्रत हए थे, उन्होंनें सविान् एवं सवनम्र िूत िी ि पूछा- "कौनि-ा व्रत रखने ि िम मनवांसछत फल पा िकते िैं? ि मिात्मन् ! िम आपि िानना चािते िैं, कृपया िमें बताइए।"

मुसनयों ंके िब्द िुन कर िूत िी बोले-"ध्यान ि मेरी बात िुनो।" उन्होंनें सनम्नांसकत कथा िुनायी

प्रथम र्ाग

दीघा काल पूवा नारद मुसन ने यिी प्रश्न भगवान् कमलापसत ि पूछा था, िो अभी तुमने पूछा िै। अब िुनो सक भगवान् ने उन्हें उिि मय क्या उत्तर सदया। मिान् योगी, िवालोककल्याणाथा दृढ़ िंकस्तल्पत िन्त नारद एक बार मृतुयुलोक में पहँचे।

विाँ उन्होंनें लोगों ंको अनेक प्रकार के दुःखों ंि दुःखी पाया, सवसभन्न गभों में िन्म लेने और अपने कमों के फलस्वरूप अवणानीय सवपसत्तयाँ अनुभव करते हए पाया। उन्हें दुःखी मानवों ंपर दया आयी। वे उन्हें िास्तन्त प्राप्त कराना चािते थे और इिीसलए इि िमस्या पर सचन्तन करने लगे सक सकि प्रकार लोगों ंको कष्टों ंऔर सवपसत्तयों ंि मुक्त सकया िाये। अपने मन में िन-कल्याण के ये सवचार सलये हए वे सवषुणुलोक गये।

विाँ उन्होंनें िंख, चक्र, गदा, पद्म और वनमाला िारण सकये सनमाल, द्युसतमान् चतुभुिी सवषुणु भगवान् के पसवत्र दिान सकये। उन स्वासमयों ंके स्वामी भगवान् की वे इि प्रकार सुतुसत करने लगे:

ि भगवान् ! तुम्हें नमस्कार िै!

तुम्हारा पसवत्र रूप मन और वाणी ि परे ि,
तुम अिीम िस्तक्त िो,
तुम आसद, मध्य और अन्त ि रसित िो,
तुम सनगुाण िो और िवागुण िम्पन्न िो,
तुम आद्य ित्ता िो,
तुम अपने भक्तों ंके दुःखिताा िो,
बारम्बार तुमको नमस्कार ि !

नारद की सुतुसत िुन कर, भगवान् सवष्णु उिने बोले- "ि िन्त नारद! सकि िुभ लक्ष्य ि तुम यिाँ आये िो? तुम्हारे मन में क्या पसवत्र सवचार स्तस्थत ि? तुम मुझे अपनी कामना बताओ, तो मैं उिे पूणा करूँ।"

नारद िी बोले- "ि भगवन्! नश्वर भूलोक के िभी िीव अपने अिुभ कमों के फलस्वरूप अिंख्य िंकटों ं तथा सवसभन्न गभों में िन्म ि कष्ट पाते िैं। ि लोकों ंके स्वामी! मुझ पर कृपा करें, मैं आपिे उि िरल उपाय के सवषय में िुनने को अत्यसिक उतुसुक हँ, सििे मरणिील प्राणी अपने िंकटों ंि मुक्त िो िके।"

तब पूणा कृपालु भगवान् बोले- "ि सप्रय ! तुमने िुन्दर प्रश्न सकया ि। िब लोकों ंके कल्याण की तुम्हारी यि पसवत्र कामना िचमुच प्रिंिनीय ि। सप्रय नारद! मैं तुम्हें उपाय बताऊँगा, सििे मनुष्य भ्रम-िाल ि मुक्त िो िायेगा।

"एक व्रत ि िो मनुष्यों ंऔर देवताओं-ंदोनों ंके सलए प्राप्त करना कसठन ि। ि सप्रय बालक! तुम मुझे अत्यन्त सप्रय िो, इसिलए मैं तुम्हारे सलए इि पर प्रकाि डालता हँ। यि ित्यनारायण व्रत ि। िो सवसिपूवाक इि व्रत को िम्पन्न करेंगे, उन्िें दैव परम िास्तन्त, िाश्वत िुख और अमरता की प्रास्तप्त िोगी, यिाँ भी और परलोक में भी।"

भगवान् के अमृतपूणा वचनों ंको िुन कर नारद मुसन बोले-"ित्यनारायण व्रत करने वाले को क्या फल समलता ि? व्रत करने की क्या सवसि ि? सकिने यि व्रत अब तक सकया ि? यि सकि प्रकार करना ि? कृपया मुझे स्पष्ट रूप ि यि िब बताइए।"

भगवान् बोले- "यि व्रत कष्ट और दुःखों ंको नष्ट करता ि। मनुष्य की भौसतक िमृस्तद्ध को बढ़ाता ि। िास्तिन्त और पसवत्रता सवकसित करता ि और वंि-परम्परा को बनाये रखता ि। इि व्रत के पालक को िदैव िवात्र सविय प्राप्त िोगी। युद्ध का िामना करने पर अथवा सनिानता के श्राप ि पीसडत िोने पर अथवा सवपसत्त में फँिने पर या िारीररक अथवा मानसिक अथवा आस्तत्मक िंकट पडने पर यि व्रत करना मनुष्य के सलए श्रेयस्कर िोता ि।

"ि योग्य मुसन! अपने िािन और पररस्तस्थसत के अनुरूप यि व्रत मिीने में अथवा वषा में एक बार सकया िा िकता ि। यि सकिी भी िुभ सदन िैिे पूसणामा या एकादिी को करना चासिए- सविेषकर वैिाख, माघ, श्रावण अथवा कासताक मिीने में।

"व्रत करने वाले प्रातः िल्दी उठ कर स्नानासद और सनत्य-कमों ि सनवृत्त िो। भस्तक्तयुक्त मन ि यि िंकल्प करें-' ि स्वासमयों ंके स्वामी, ित्यनारायण! आपकी कृपा के सलए आकांक्षा करते हए मैं यि व्रत आरम्भ कर रिा हँ।' उिी िदा की भाँसत मध्याह्न और िायंकालीन िन्ध्या करनी िोती ि। एक बार सफर स्नान करके रासत्र के आरम्भ पर, उिे पूिा प्रारम्भ करने िेतु तैयार िो िाना चासिए।

"पूिा का स्थान बहसवि ििावट ि प्रकािमान् िोना चासिए। पसवत्र करने के सलए पूिा-स्थान को गाय के गोबर ि लीपना चासिए। सफर सवसभन्न रंगों ि पसवत्र रंगोली सचसत्रत करके उि पसवत्र स्थान पर एक नया वस्त्र सबछाना चासिए। वस्त्र पर चादर सबछा कर बीच में कलि रखा िाना चासिए। कलि चाँदी, ताँबा या पीतल का िो िकता ि अथवा समट्टी का भी िो िकता ि, परन्तु इि मामले में कंिूिी न करें। कृपण हए सबना अपनी स्तस्थसत के अनुिार कलि रखना चासिए। पसवत्र कलि पर एक नया वस्त्र ढकना ि।

"ि पावन मुसन! वस्त्र पर ित्यनारायण की मूसता रखनी िोती ि। यि सवग्रि िोने का िोना चासिए - एक, आिा या चौथाई मिो की अपने िािनों के अनुिार। सवग्रि को पंचामृत में स्नान कराना िोता ि, सफर मण्डप में रखा िाता ि। प्रारम्भ में सवघ्नेश्वर, लक्ष्मी, सवष्णु, सिव-पावाती, नवग्रिों (िूया देव आसद), आठ सदिाओं (इि आसद) की तथा आसि और प्रत्यासि देवताओं का पूिन करना चासिए।

"िवाप्रथम कलि में वरुणदेव की पूिा की िानी चासिए। तत्पिात् कलि के उत्तर की ओर पसवत्र िल सछडकते हए मन्त्रोच्चारण के िाथ सवनायक आसद पंचदेवों की स्थापना करनी चासिए। इन देवताओं का पूिन करना ि।

"इिी प्रकार पसवत्र हृदय ि, अष्ट सदक्पालों (इि आसद) को यथास्थान स्थासपत करके उनका पूिन करना चासिए। यि पूिन िमाप्त िोने पर कलि पर स्थासपत ित्यनारायण भगवान् की मूसता का पूिन आरम्भ सकया िा िकता ि।

ि मुसन! चारों वणों के स्त्री-पुरुष यि व्रत कर िकते ि। ब्राह्मणों को पौरासणक उच्चारण और वैसदक मन्त्रों के िाथ पूिन करना चासिए एवं अन्य पौरासणक मन्त्रों के उच्चारण ि भगवान् की पूिा कर िकते ि।

"परम श्रद्धा और भस्तक्त ि युक्त िन यि व्रत सकिी भी सदन िायंकाल में कर िकते ि।

"व्रतकताा को व्रत प्रारम्भ करने ि पूवा ब्राह्मणों तथा िम्बिी िनों को आमस्तन्त्रत करना चासिए। केला, घी, गाय का दूि, गेहँ अथवा चावल का आटा और चीनी अथवा गुड-इन िब वस्तुओं की उसचत मात्रा ले कर प्रिाद तैयार सकया िाना चासिए। प्रिाद भगवान् को असपात करना ि।

"भोग की िमास्तप्त पर ब्राह्मणों को दसक्षणा देनी चासिए। तत्पिात् भगवान् की कथा िुननी चासिए। अन्त में व्रतकताा को असतसथ ब्राह्मणों के िाथ भोिन करना चासिए। प्रिाद अत्यन्त श्रद्धा और भस्तक्त के िाथ लेना चासिए।

"भगवान् ित्यनारायण के प्रसत प्रेम के प्रतीक रूप में, नृत्य और िंगीत आसद का आयोिन सकया िा िकता ि।

"यि व्रत िंिार िनों के सलए सनयिपूवाक अपनी इच्छा पूणा करने ितु वरदान ि और यिी कसलयुग में मनुष्य के सलए अपनी मनोकामना पूसता का िवाासिक िरल उपाय ि।"

इि प्रकार स्कन्दपुराण में वसणात ित्यनारायण व्रत कथा का प्रथम भाग िमाप्त िोता ि।

डद्वतीय र्ाग

ि मिान् मुसनयो! मैं आपको इि व्रत को करने वालों ंकी कथा किता हँ। एक बार बनारि में एक ब्राह्मण था। वि असत-सनिान और भूख ि पीसडत था। अतः वि अपनी कुषुिा िान्त करने िेतु एक ि दूिरे स्थान को भ्रमण करता था।

भक्तों ंको प्यार करने वाले भगवान् ब्राह्मण के कष्टों ंको िमझ कर, एक बूढ़े ब्राह्मण के रूप में उिके मिक्ष प्रकट हए और ििि बोले- "ि ब्राह्मण! तुम दु:खी क्यों ंिो और तुम सकिसलए भटक रि िो? मैं िब बात सवस्तार ि िानना चािता हँ।"

ब्राह्मण किने लगा- "ि भगवन्! मैं एक ब्राह्मण हँ। बहत सनिान हँ। मैं सभक्षाथा भ्रमण कर रिा हँ। मेरी मिझ में निीं ंआता सक मैं सकि प्रकार अपनी सनिानता दूर करूँ। कृपया मुझ पर दया करके मुझे उपाय बतायें।"

बूढ़ा ब्राह्मण बोला-"भगवान् ित्यनारायण स्वयं सवष्णु िैं। वि िमारी िभी मनोकामनाएँ पूरी करने वाले िैं। ि सवप्र ! यि व्रत करो िो िवाश्रेष्ठ िै और ििे करने ि तुम िारे कष्टों ंि छूट िाओगे और मरणिीलता ि भी मुक्त िो िाओगे।"

तत्पिात् वृद्ध ब्राह्मणििारी भगवान् ित्यनारायण ने उि सवप्र को सवसि बतायी और तुरन्त अन्तिाान िो गये।

सफर सनिान ब्राह्मण ने वृद्ध ब्राह्मण िारा बतायी सवसि ि ित्यनारायण व्रत करने का िंकल्प सलया। दूिरे सदन अत्यसिक खुिी के कारण उि रात-भर नीदं निीं ंआयी। प्रातः िल्दी उठ कर स्नानासद सनत्य-कमों ि सनवृत्त हआ और पुनः ित्यनारायण का व्रत करने का सनिय करके सभक्षा माँगने को सनकला।

उि सदन उिे प्रचुर िन इकट्ठा सकया। अपने समत्र, िम्बस्तियों ंऔर कुछ ब्राह्मणों ंको आमस्तन्त्रत करके उपयुक्त ढंग ि ित्यनारायण का व्रत सकया।

व्रत की मसिमा के फलस्वरूप ब्राह्मण िमस्त िांिाररक दु:खों ंि मुक्त िो गया और िन-िम्पसत्त प्राप्त की और अत्यन्त िुखी िो गया। तबि वि प्रसत मिा व्रत करने लगा। इि व्रत के करने ि उिे न केवल भौसतक मिृस्तद्ध की प्रास्तप्त हई, बस्ति अन्त में मोक्ष भी प्राप्त हआ।

िो मनुष्य सकिी भी िमय यि व्रत करता िै, वि तुरन्त िभी प्रकार के िंकटों ंि मुक्त िो िाता िै।

ि मुसनयो! भगवान् ने इि व्रत के सवषय में िो कुछ नारद मुसन को बताया था, विी मैंने आपको वणान सकया िै। आप और क्या िानना चािते िो?

(ऋसष बोले- "ि िूत िी! िमें उि व्यस्तक्त के सवषय में बताइए, ििने ब्राह्मण ि इि व्रत के सवषय में िब िुनकर व्रत-िम्पादन सकया।" िूत िी बोले-)

ज्यों-िी उि ब्राह्मण ने अपनी िामथ्या के अनुिार सनयसमत रूप ि व्रत आरम्भ सकया, उिके िारे समत्र और िम्बिी असत-प्रिन्न हए। एक बार एक लकडिारा विाँ आया और अपना लकडी का गट्ठर बािर रख कर घर के भीतर प्रवेि सकया और वि िब िोते हए देखा।

यद्यसप लकडिारा बहत प्यािा था, परन्तु ब्राह्मण िो कर रिा था, ििे प्रभासवत िो कर उिने पूछा- "ि मिात्मन् ! इि व्रत का नाम क्या िै? इिे करने ि क्या फल समलेगा? कृपया मुझे यि िब सवस्तार ि बताइए।"

ब्राह्मण ने ििे किा- "सप्रयवर! यि ित्यनारायण का व्रत िै। यि िमस्त मनोकामनाओं ंको पूणा करता ै। ििे मनुष्य की िन और िमृद्ध बढ़ती िै।"

लकडिारा बहत प्रिन्न हआ। उिने अपनी तृषा िान्त करके प्रिाद सलया, भोिन सकया और घर चला गया।

सफर लकडिारे के मन में स्वयं व्रत करने की इच्छा िाग्रत हई। तदनुिार दूिरे सदन उिने लकसडयों ंका गट्ठर सिर पर रख कर िंकल्प सकया - "आि गट्ठर की सवक्री िे िो-कुछ मुझे समलेगा, पूरा ित्यनारायण व्रत के म्पादन में व्यय करूँगा।" सफर उिने प्रस्थान सकया।

उि सदन वि लकडिारा ऐिी गली में गया ििाँ असिक िनी लोग रिते थे और विाँ उिने लकसडयाँ बेची। उि सदन उिने उतने िी बडे गडर िे, अन्य सदनों ंकी अपेक्षा असिक िन प्राप्त प्राप्त सकया। वि आनन्दमि िो गिया और कमाये हए िन िे उिने केले, चीनी, घी, दूि तथा गेहँ का आटा खरीदा और घर को लौटा।

तब उिने अपने िम्बस्तियों ंको आमस्तन्त्रत करके पूरे सवसि-सविान िे ित्यनारायण व्रत िम्पन्न सकया। इि मिान् व्रत की मसिमा िे उिे िन–मृस्तद्ध, पुत्र-पुसत्रयाँ एवं िुख–िास्तन्त प्राप्त हई। उिने िीवन-भर िुख भोगा और अन्त में ित्यपुर को प्राप्त हआ।

इि प्रकार स्कन्दपुराण में वसणात ित्यनारायण व्रत कथा का सितीय भाग िमाप्त िोता िै।

तृतीय भाग

िे मिामुसनयो! मैं तुम्हें एक और कथा िुनाता हँ। कृपया आप सचत्त की एकाग्रता िे िुनें।

प्राचीन काल में उिामुख नाम का एक रािा था। वि ित्यवादी और आत्मिंयमी था। वि सनत्य मस्तन्दर िाता था और उदारतापूवाक भेंट दे कर ब्राह्मणों ंको तुष्ट करता था। उिकी पत्नी सितनी िुन्दर थी, उतनी गुणवती भी थी। उि िमासनष्ठ दम्पसत ने एक सदन भिसिला नदी के सकनारे ित्यनारायण व्रत िम्पन्न सकया।

िब वि रािा व्रत कर रिा था, तो िािु नाम का एक व्यापारी, िो िन िे भरी हई नाव ले कर व्यापार के उद्देश्य िे िा रिा था, उिने रािा को व्रत िम्पन्न करते हए देखा। उिने नाव सकनारे की ओर बाँि दी। रािा के पाि आ कर सवनयपूवाक पूछा- "िे िज्जन नृप! आप िो व्रत िम्पन्न कर रिे िैं, कृपया इि व्रत के सवषय में बताइए और सवस्तारपूवाक इिकी सवसि िमझाइए। मैं व्रत के सवषय में िब-कुछ िानने को इचुछुक हँ।" रािा बोला- "श्रीमान्! िम िन्तान की कामना िे श्री ित्यनारायण व्रत कर रिे िैं।"

रािा के वचन िुन कर व्यापारी बोला- "मिारािा! मेरी भी कोई िन्तान निीं ंिै। मैं भी यि व्रत करके न्तान का िुख भोगूँगा।"

व्यापार के काम िे सनवृत्त िो कर व्यापारी घर लौटा और अपनी पत्नी लीलावती को इि व्रत के सवषय में बताया, उिकी उपस्तस्थसत में िी उिने यि िंकल्प सलया-"िब भी मेरे िन्तान िोगी, तब मैं यि व्रत िम्पासदत करूँगा।"

भस्तक्तमती पत्ी लीलावती ने अपने पसत के िाथ ििविा सकया और वि गभावती िो गयी। दिवें मिीने में एक सदन उिने कन्यारत् को िन्म सदया। लीलावती और ििु अपनी कन्या को कलावती नाम िे पुकारते थे। ुक्लि पक्ष के चिमा की कलाओं ंकी भाँसत कन्या बढ़ने लगी।

तब लीलावती ने अपने पसत के पिा िा कर मिुर वाणी में किा - "आपने यि िंकल्प सलया था सक न्तिान की प्रास्तप्त िोते िी व्रत िम्पन्न करेंगे। िमें वांसछत फल प्राप्त िो गया िै। अभी तक आपने व्रत क्यों ंनिीं ं प्रारम्भ सकया िै? व्यापारी ने उत्तर सदया- "सप्रय लीलावती! कलावती के सववाि के अविर पर मैं व्रत करूँगा। तुम सचन्ता मत करो। िान्त रिो।"

एक बार सफर वि व्यापार के सलए नगर के बािर गया। कलावती युवती िो गयी और उिके सपता ने उिके सलए योग्य वर खोिने िेतु दूत सनयुक्त सकया।

व्यापारी की आज्ञा पा कर एक दूत कंचन नामक नगर में गया। विाँ िे एक योग्य व्यापारी युवक चुन कर कलावती के सपता के पिा लाया। वर िब प्रकार िे योग्य और िुन्दर था। ििु ने बडी भव्यता के िाथ, उि व्यापारी युवक के िाथ कलावती का सववाि िम्पन्न कर सदया।

दुभााग्य िे ििु ित्यनारायण व्रत के सवषय में सबलकुल भूल गया, क्योंसंक वि अपनी पुत्री के सववाि के उत्सव के आनन्द में सनमि था। तब भगवान् ित्यनारायण ििु बहत रुष्ट िो गये।

मिय व्यतीत िोता गया और ििु ने, िो व्यापार में असत-कुिल था, सफर अपने िामाता के िाथ व्यापार के सलए प्रस्थान सकया और िमुि के सकनारे रत्ापुरी में वे व्यापार करने लगे।

वे दोनों ंरािा चिकेतु के नगर में पहँचे।

व्यापारी अपने िंकस्तल्पत वचन िे चुयुत हआ था; अतः भगवान् ित्यनारायण ने रुष्ट िो कर उि श्राप सदया- "यि व्यस्तक्त भारी सवपसत्त और कष्टपूणा िीवन का िामना करे।"

उिी रासत्र को चोरों ंने आ कर रािा के कोष िे कुछ िन चुरा सलया और वे उि स्थान पर पहँचे, ििाँ ये व्यापारी थे। रािा के नौकरों ंने चोरों ंका पीछा सकया। चोर भयभीत िो कर िन व्यापाररयों ंके िामने छोड कर दृसष्ट िे ओझल िो गये। रािा के नौकरों ंने, ििाँ ये व्यापारी खडे थे, विाँ िन देख कर यि सनिय सकया सक ये दो व्यस्तक्त चोर िैं। दोनों ंके पाँवों ंमें बेडी डाल कर वे उन्िें रािा के दरबार में ले गये।

नौकरों ंने रािा िे किा- "िे स्वासमन्! िमने चोर पकड सलये िैं और चुरायी गयी िम्पसत्त भी ले आये िैं। कृपया इि मामले की पूछताछ करके अपरािी को उसचत दण्ड दीसिए।"

ज्यों–िी नौकरों ंने यि किा, रािा ने तुरन्त िी व्यापाररयों ंको सनदायतापूवाक बन्दी करने का आदेि सदया। नौकरों ंने रािा के आदेि का अक्षरिः पालन सकया।

उन्िोंने बहत प्राथाना की; परन्तु भगवान् ित्यनारायण की माया–िस्तक्त के कारण सकिी ने उनकी प्राथाना निीं ंिुनी। रािा चिकेतु ने उनकी िारी िम्पसत्त का िरण करके अपने खिाने में रख ली। भगवान् ित्यनारायण के श्राप के कारण, ििु की पत्ी और पुत्री को भी कठोर िंकट का िामना करना पडा। चोरों ंने उनकी िम्पसत्त

लूट ली। लीलावती बीमार िो गयी। उिकै मानसिक िन्ताप का कोई अन्त निीं ंथा। क्योंसंक उिकै पिा खाने को अन्न तक निीं ंथा, उि दर-दर सभक्षा माँगनी पडी।

कलावती भी भोिन के सलए इिर-उिर भटकती थी। एक सदन वि बहत भूखी थी और एक ब्राह्मण के घर गयी। विाँ ित्यनारायण व्रत िम्पन्न िो रिा था। वि विाँ ठिर गयी और व्रत की िमास्तप्त तक िो-कुछ िो रिा था, देखा। उिने कथा िुनी और भगवान् िे प्राथाना की। उिने प्रिाद भी सलया और घर को लौट आयी। उि रासत्र को उिकी सचस्तन्तत माँ ने अत्यन्त िेनिपूवाक उिे बुला कर किा- "सप्रय बेटी! इतनी रासत्र तक तुम किाँ थी? तुम्हारे मन में क्या इच्छा िै?"

तब कलावती ने सनःिंकोच उत्तर सदया- "सप्रय माँ! ब्राह्मण के घर ित्यनारायण व्रत िम्पन्न िो रिा था, मैंने वि देखा, भगवान् की कथा िुनी और भगवान् का प्रिाद ले कर घर लौटी हँ।"

पुत्री के वचन िुन कर लीलावती ने ित्यनारायण व्रत करने का िंकल्प सलया। सफर उिने अपने समत्र एवं म्बिस्तियों ंको आमस्तन्त्रत करके भस्तक्त-भाव िे भगवान् का व्रत सकया।

उिने भगवान् िे इि प्रकार प्राथाना की- "िे भगवान्! िमारे िमस्त अपरािों ंके सलए िमें क्षमा करें। मेरे पसत और िामाता कुिलतापूवाक, िीघ्र और प्रिन्नतापूवाक घर लौटें।"

भगवान् लीलावती िे प्रिन्न हए, क्योंसंक उिने पूणा भस्तक्त िे व्रत सकया था। उिी रासत्र को वि रािा चिकेतु के स्वप्न में प्रकट हए और किा- "तुमने सिन दो व्यस्तक्तयों ंको बन्दी सकया िै, उन्िें छोड दो। प्रातः िोते िी यि करो। उनका िारा िन लौटा दो। यसद तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन करोगे, तो तुम अपने स्त्री, पुत्रों ंऔर िन को खो कर नष्ट िो िाओगे। प्रातः िोते िी व्यापाररयों ंको मुक्त कर दो।" यि कि कर ित्यनारायण भगवान् अन्तिाान िो गये।

िूया उदय िोते िी रािा ने दरबार में आ कर अपने दरबाररयों ंको स्वप्न का वणान सकया। उिने दोनों ं व्यापाररयों ंको तुरन्त छोड देने का आदेि सदया। नौकर व्यापाररयों ंको मुक्त करके रािा के िामने ले गये।

दोनों ंव्यापाररयों ंने रािा को नमस्कार सकया; सकन्तु पूवा-कमों का स्मरण करके अत्यन्त भयभीत हए और उन्िोंने अपना मुँि बन्द रखा।

रािा ने उन्िें इि स्तस्थसत में देख कर किा- "भाग्य के चक्र िे आप लोगों ंको यि कसठन पररस्तस्थसत िीनी पडी, अब आपको डरने की आवश्यकता निीं ंिै।"

रािा ने उनकी िंिीर खोल दी। उन्िें पिनने के सलए नये वस्त्र सदये गये और रािा ने उन्िें असत-प्रिन्न सकया। उिने उनकी बहत प्रिंिा की और उनका सितना िन सलया था, उििे दुगना करके उन्िें वापि सदया।

रािा ने उिने बहत िम्मानपूवाक व्यविार सकया और किा- "िे व्यापाररयो! अब तुम प्रिन्नतापूवाक अपने घर िा िकते िो।"

व्यापाररयों ंने रािा को नमस्कार करके सवदा ली, उिकी प्रिंिा की और चले गये।

इि प्रकार स्कन्दपुराण में वसणात श्री ित्यनारायण व्रत कथा का तृतीय खण्ड िमाप्त िोता िै।

चतुथा भाग

व्यापारी िु रिा ि सवदा िो कर तीथायात्रा को चला गया, ब्राह्मणों ंको प्रचुर दान सदया और घर की ओर प्रस्थान सकया।

कुछ दूर िाने के पित् श्री ित्यनारायण एक िंन्यािी के रूप में प्रकट हए और बोले- "ि व्यापाररयो! तुम्हारी नाव में क्या ि?"

चूँसक व्यापारी बडे असभमानी थे, वे िँि और उपिााात्मक रूप ि िंन्यािी को उत्तर सदया- "ि िंन्यािी! तुम्हें यि िानने की क्या आवश्यकता ि सक नाव में क्या ि? क्या तुम िम्पसत्त लूटना चािते िो? इिमें पसत्तयों ंएवं कूडे-करकट के सिवाय कुछ निीं ंि।"

िंन्यािी ने ये िब्द िुने और बोले- "एिा िी िो िायेगा।" यि कि कर वि विाँ ि चले गये और कुछ दूरी पर खडे रि।

िि ने अपने सनत्य-कमा िम्पन्न सकये और यि देख कर आियाचसकत हआ सक नाव इि प्रकार बि रिी थी मानो खाली िो! िामान की िाँच करने पर पाया सक िन के थैलों ंके स्थान पर उिमें केवल पसत्तयाँ एवं कूडा-करकट था। वि बेिोि िो गया और िब चेतना में आया, तो फूट-फूट कर रोने लगा।

तब उिके िामाता ने किा- "आप रोते क्यों ंि? िंन्यािी ने िाप सदया ि, इिसलए एिा िो गया ि। उिमें िी चािो करने की िस्तक्त ि। अतः चलें और उनके चरणों ंमें िमपाण कर दें। एिा करने ि िमें अपना िन वापि समल िायेगा।"

व्यापारी ने िामाता के वचनों ंपर ध्यान सदया तथा िंन्यािी के पाि िा कर प्रणाम सकया और बोला- "ि मिात्मन्! मैं एक भ्रसमत मूखा िो कर, मैंने मूखाता ि आपको सनरादरपूवाक उत्तर दे सदया था। मेरे अपराि को क्षमा करके मेरी रक्षा करें।" उिने पिात्तापपूणा हृदय ि प्राथाना की।

तब िंन्यािी वेिािारी भगवान् ने उिे िान्त्वना दी और किा- "ि िािु ! तुमने मेरा पूिन करने का िंकल्प सलया; परन्तु अपने वचन को तोड सदया-इि कारण ि तुम ये िब सवपसत्तयाँ िि रि िो।"

यि बात िुन कर िािु ने प्राथाना की- 'ि भगवान्! अस्तखल सवश्व तुम्हारी मायावी िस्तक्त ि भ्रसमत ि। ब्रह्मा और इि िभी मिान् देवता तक तुम्हें िमझने में अिमथा िैं, सफर मेरा तो किना क्या, िो तुम्हारी मिती माया ि मोसित एक मूखा ि। ि भगवान्! अब मैं सनरन्तर आपकी पूिा करूँगा। कृपया आप मेरे ऊपर दया करें। मेरी िारी िम्पसत्त लौटा दें और मेरी रक्षा करें।"

भगवान् इि प्राथाना ि प्रिन्न हए। उन्होंने व्यापारी की इच्छा पूणा की और तुरन्त िी अन्तिाान िो गये।

िब व्यापारी अपनी नाव पर लौटा, तो अपने िन के थैले पिले की भाँसत िुरसक्षत स्तस्थसत में पाये। वि सफर यि िोचता हआ घर की ओर बढ़ा सक भगवान् की कृपा ि उिकी मनोकामना पूणा िो चुकी थी। वि अत्यन्त प्रिन्न था। अपने गन्तव्य स्थान के िमीप पहँचने पर उिने अपने िामाता ि किा- "वि िामने रत्नपुरी ि। लीलावती और कलावती को अपने आने का िमाचार देने के सलए िन्देिवािक भेि दे।"

नि्दिविाक नगर में पहँचा और लीलावती के पिा िा कर सवनयपूवाक बोला- "िे मसिला! अपने ामाता और अन्य िम्बस्तियों ंिसित तुम्हारे पसत आ गये िैं। नाव अभी सकनारे लगी िै।"

यि िुखद िमाचार पा कर लीलावती असत-प्रिन्न हई। कलावती उि िमय ित्यनारायण व्रत में िंलि थी। लीलावती ने ििउि िा सक िल्दी िे व्रत पूरा करके उिके िाथ चले। माँ-बेटी ने पूरी तरि िे पूिा िम्पन्न की, सकनुतु िल्दी में बेटी प्रिाद लेना भूल गयी।

इि भूल िे भगवान् ित्यनारायण इतने रुष्ट िो गये सक उन्ोंनें व्यापारी और ामाता की नाव को िमस्त म्पसत्त िसित डुबो सदया। तट पर खडे लोगों ंने यि घटना देखी और वे सवस्मयाकुल एवं भयभीत िो गये।

वे िभी दु:खी िोने लगे। लीलावती अपनी पुत्री के सलए अत्यसिक दु:खी हई और मन में िोचने लगी सक यि िब भगवान् ित्यनारायण का प्रभाव था, ििििे ामाता डूबे और नाव नष्ट हई। भारी मन िे उिने अपने दु:ख में डूबी हई पुत्री को िमझाया।

कलावती को सवश्वाि िो गया सक उिका पसत मृत्युु को प्राप्त िो गया था। अतः उिने पसत की खडाऊँ ले कर ििगमन करने का (उिका अनुिरण करने का) सनिय सकया।

िािु ने कलावती की दयनीय स्तस्थसत देखी और अत्यन्त दु:खी िो कर ििउि बोला- "बेटी! यि िब भगवान् नारायण की माया के सिवाय कुछ निीं ंिै, अतएव आओ, िम तुरन्त िी असवलम्बपूवाक पूणा वैभव और भव्यता िे उनका पूिन करें।

भगवान् की पूिा का सनिय करके उिने अपने भाई-बिु एकसत्रत सकये, उनके िमक्ष अपना सवचार प्रकट सकया और अत्यन्त भस्तक्त-भाव िे भगवान् की प्राथाना करने लगा।

भगवान् ने ििउि प्रिन्न िो कर किा- "िे सप्रय िािु ! तुम्हारी बेटी मेरा प्रिाद सलये सबना अपने पसत को देखने आ गयी। इि कारण तुम्हारी पत्ी अथवा तुम अपने ामाता को निीं ंदेख पाये। यसद वि घर िा कर प्रिाद ले और सफर वापि आये, तो िब-कुछ ठीक और िुभ िो िायेगा। उिे अपना पसत वापि समल िायेगा और वि िुखी िोगी।"

आकािवाणी िुन कर कलावती तुरन्त िी घर गयी और प्रिाद पा कर लौटी। िब वि उि स्थान पर पहँची, तो तैरती हई नौका पर अपने पसत को िकुिल पाया। इि चमत्कार पर वि दम्पसत तथा िभी समत्र–िम्बिी आनस्तन्दत हए। कलावती ने अपने सपता िे किा सक अब घर लौटने में असिक सवलम्ब न करें। अपनी पुत्री के ये ब्दि िुन कर िािु ने अपने िम्बस्तियों ंको परम िनुतुष्ट करते हए उिी स्थान पर ित्यनारायण व्रत िम्पन्न सकया। सफर अपने िम्बस्तियों ंतथा अतुल िम्पसत्त िसित उिने घर के सलए प्रस्थान सकया।

तब िे ले कर िािु िदैव प्रसत पूसणामा को एवं रससंक्रमण सदवि को सबना चूके ित्यनारायण व्रत करता रिा। िब तक वि िीसवत रिा, उिने पूणा िुख भोगा और अन्त में ित्यपुर प्राप्त सकया।

इि प्रकार स्कन्दपुराण में वसणात ित्यनारायण व्रत कथा का चतुथा भाग पूणा िोता िै।

पंचम भाग

ो पूज्य मुसनयो! अब मैं आपको एक और कथा िुनाता हूँ। दत्तसचत्त िो कर िुनो! एक बार तुंगध्वि नामक रािा अपनी प्रिा पर माता की भाँसत दयालुता िे राज्य करता था। एक सदन वि िंगल में गया और विाँ कई िानवर मार डाले। एक सबल्व वृक्ष के नीचे कुछ ग्वाले समत्र–म्बस्तियों ंिसित ित्यनारायण व्रत कर रिे थे। यद्यसप रािा यि िानता था, परन्तु वि न तो विाँ गया और न उिने भगवान् को नमस्कार सकया। वि िीिी असभमान में चला गया।

तब ग्वाले रािा के पाि प्रिाद ले कर गये। उिके िामने प्रिाद रख कर अपने पूिा-स्थान पर लौट गये, िििँ िबने समल कर अत्यन्त भस्तक्त-भाव एवं श्रद्धापूवाक प्रिाद ग्रिण सकया।

रािा ने प्रिाद निीं ंसलया। वि ििीा अपने नगर को चला गया। भगवान् के रोष के कारण रािा के १०० पुत्र नाि को प्राप्त िो गये। उिकी िारी िन–म्पसत्त का लोप िो गया। उिे केवल सनिानता िी निीं,ं बस्ति कई कसठनाइयों ंका भी िामना करना पडा।

रािा मन में िोचने लगा-"मुझे अपने राज्य और िस्तक्त का गवा था। मैंने भगवान् के प्रिाद को व्यथा मान कर निीं ंसलया, यद्यसप ग्वालों ंने मुझे बडे भस्तक्त-भाव िे प्रिाद सदया था। भगवान् का रोष िी मेरी सवपसत्तयों ंऔर कसठनाइयों ंका कारण िै। उिने िी यि िब-कुछ सकया िै। इिमें िन्देि निीं ंिै। मैं सफर िे ग्वालों ंके पाि िा कर पूणा गम्भीरता िे व्रत करूँगा।"

रािा ने तुरन्त अपने सवचार को सक्रयास्तित सकया। ित्यनारायण का व्रत करके वि िनवान् िो गया, उिके कई पुत्र हए और िब तक वि िीसवत रिा, िुख का अनुभव सकया। अन्त में वि ित्यपुर अथाात् ित्यलोक को गया।

िो कोई यि ित्यनारायण का व्रत करता िै अथवा िो भगवान् के व्रत की कथा को िुनता िै, उिे िमस्त भौसतक िमृस्तद्ध एवं िम्पदा प्राप्त िोती िै। सनिान िनी िो िाते िैं; िो बिन में िैं, वे मुक्त िो िाते िैं और कायर िििििबन िाते िैं। इिके असतररक्त उिकी िारी मनोकामनाएँ पूणा िोंगी और अन्त में वि िुख भोगने के सलए त्यिपुर को िायेगा। इि प्रकार मैंने तुम्हें ित्यनारायण व्रत के सवषय में, उिकी आवश्यकता, सवसि, मसिमा और फल–ब-कुछ वणान कर सदया िै।

सविेषकर इि कसलयुग में यि ित्यनारायण का व्रत सवसिष्ट फल प्रदान करता िै। कसलयुग में कुछ लोग किते िैं-भगवान् ित्येश्वर िैं, कुछ ित्यनारायण, कुछ ित्यदेव किते िैं। िाश्वत भगवान् ित्यनारायण इि कसलयुग में कई रूप िारण करके अपने भक्तों ंकी मनोकामना पूणा करते िैं।

यसद कोई व्यस्तक्त व्रत करने में िमथा न िो, वि व्रत िम्पन्न िोता देख ले अथवा व्रत कथा िुने, सफर भी वि भगवान् की कृपा िे िारे पापों ंिे मुक्त िो िायेगा।

इि प्रकार स्कन्दपुराण में वसणात श्री ित्यनारायण व्रत का अस्तन्तम पंचम भाग पूणा हआ।

पररसिष्ट २

परम ित्य का िाक्षात्कार

एक वेदाखन्तक कथा

एक युवक था, सििका सपता रिा की िेना में कप्तान था। वि युद्ध-क्षेत्र में मृतुयु को प्राप्त िो चुका था। यि युवक सपता के िारा हई िेवाओं ंके फलस्वरूप पाररश्रसमक लेने िेतु रिा िे समलना चािता था।

रािभवन के सलए यात्रा लम्बी थी, मागा में उि युवक को लूट सलया गया और पीटा गया। सफर भी पररश्रान्त, दुबाल हआ वि युवक सचलसचलाती िूप में यात्रा पर आगे बढ़ता चला गया।

उि िमय उिने स्नेिपूणा िब्दों ंमें अपना नाम िुना। उिने घूम कर देखा, िडक िे दूर एक छायादार वृक्ष के नीचे एक िन्त बैठा था। उि िन्त का मुख प्रेम, करुणा और प्रकाि िे चमक रिा था।

िन्त बोले- "िे युवक! तुम्हें सवश्राम चासिए। आओ, और मेरे पाि बैठो।"

युवक ने उिकी कृपा का स्वागत सकया और िन्त के पाि आ कर बैठ गया। िन्त बोले-"तू प्यािा िै" और िवा िे श्वेत अमृत िे भरी हई एक िोने की झारी ले कर उि युवक को दे दी। युवक ने उिे अच्छी तरि पी सलया और सूफूसतावान् िो गया। उिने िन्त िे पूछा सक िोने की झारी किाँ िे आयी?

िन्त ने उत्तर सदया "रािभवन िे।"

"मैं विीं ंिा रिा हूँ।" युवक बोला- "क्या विाँ पहुँचने में आप मेरी ीिायता कर िकते िैं?"

न्ति बोले-"मरणिील नृप मर रिा िै और तू उिे निीं ंसमल िकता। मैं तो अमर नृप की बात कर रिा हूँ और मैं तुम्हें विाँ िीिसमलने में ीिायता कर िकता हूँ, िीिाँ िे िोने की झारी आयी िै।"

युवक िन्त के चरणों ंमें सगर कर किने लगा-"मुझे िीघ्र िी अमर नृप के रािभवन में ले चलो।"

न्ति बोले-"इ मिल में िाने का रास्ता निीं ंिै। वि सदा रसित िै। उिके सलए कोई और प्रयाि और कमा करने की आवश्यकता निीं ंिै, केवल आन्तररक िास्तन्त चासिए। िान्त िो िाओ। अपने नेत्र बन्द कर लो। गिरी श्विा लो और भूतकाल के कष्टों ंऔर परीसनयों ंको भुला दो। तब तुम लयबद्ध उडान के सलए तैयार िो िाओगे।

"उडान िै सक अपने-आपको चेतना की अस्तन्तम िति तक डूबो दो। क्या तू िानता िै सक तू कौन िै? अपनी आत्मा की खिो करते रिो -"मैं कौन हूँ।" तून िरीर िै न मन िै। अन्तमुाखी िो कर देखते रिो। िरीर और मन सववेक के सलए तेरे उपकरण िैं। तेरा िच्चा स्वरूप तो िरीर और मन िे परे िै। तू अमर रािा का पुत्र िै।"

न्ति की वाणी रुक गयी। उिने अपना िाथ उि युवक के सिर पर रखा। युवक ने अनन्त प्रकाि िे पूणारूपेण व्याप्त ब्रह्माण्ड का िाक्षात्कार सकया। उिने अपनी वैयस्तक्तकता को अनन्त चेतना, िाश्वत परमानन्द में लीन िोते हए अनुभव सकया और परम िित्ता को अपना िी वास्तसवक स्वरूप पाया।